

Impact Factor – 7.765

ISSN-2278-9308



B.Aadhar

Multidisciplinary International Research Journal

PEER REFEREED & INDEXED JOURNAL

January -2020

SPECIAL ISSUE - CCIV

Role of Civil Service and Hospitality Education in Employability

Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Editor:
Dr. Anil B. Bhagat
Ramkrushna Mahavidyalaya Darapur
Dist. Amravati.

The Journal is indexed in:

Scientific Journal Impact Factor (SJIF)

Cosmos Impact Factor (CIF)

Global Impact Factor (GIF)

Universal Impact Factor (UIF)

International Impact Factor Services (IIFS)





68	Spatial Pattern of Development in Rural Region of Amravati District (Maharashtra State) Dr. Aruna P. Patil	240
69	Role of Public Administration in Modernization and Social Change Dr. Anjali R. Wath	246
70	Role of Civil Services in Democracy : Special Reference to India Dr. Ramesh Jagannath Perkar	249
71	Contract Farming in India Dr. Avinash M. Jumale	253
72	Rural Development Prof. Ashvinkumar P. Kshirsagar	256
73	Women Empowerment In India Ku. Archana Madhukarrao Hore	261
74	Challenges in hospitality industry Ms. Trupti laghate	264
75	Study of skill development in health industry Dr. Rashmi Singh	270
76	Rural Development In India – A Way Forward Mr. Bhanuprakash Jaiswal / Mr. Vishal Chawre	274
77	Solar Energy Concepts and its implementation for the benefits to Hotel Industry Ast. Prof. Shailendrakumar Sopanrao Chikte	281
78	Human resource management in hotel and catering industry. Vinay Burange	287
79	Challenges for Customer Retention in Hotel Industry Ms. Mayuri Tatte	289
80	Challenges of Event management as a new trend in hospitality Dr. Sandhya A. Kale.	293
81	Significance History of public Administration Mr. Prakash Wamanrao Mhaskey	298
82	Rural Development Mr. Khemanand Sukhadev Fulzele	303
83	Indian Bureaucracy And Political System Mr. Sachin Padghan	306
84	Effects of social media applications and online evaluation on consumer's preference towards hotels Mrs. Pranali padalkar /Mr. Manas tandel	310
85	Right To Reinstatement Of The Industrial Workers :- Challenges In Hospitality Industry & Roll Of Civil Services Dr. Laxman dhaked	314
86	Employment opportunities in administrative service sector Adesh Gopalrao Ramekar	319
87	Impact of Social Media on Hospitality Industry Ku. Radha Sangole	321
88	महाराष्ट्र शासनाच्या विविध ग्राम विकास योजनेचा तुलनात्मक अभ्यास कु. आकाशी रा. सर्वटकर	325
89	वृद्धाश्रमातील वृद्धांच्या समस्या प्रा. अपर्णा म. काळे प्रा. डॉ. शमली जा. दिघडे	328
90	प्रशासकीय सेवा में लोकप्रशासन का महत्व डॉ. विभा देशपांडे	334





प्रशासकीय सेवा में लोकप्रशासन का महत्व

डॉ. विभा देशपांडे

कला व विज्ञान महाविद्यालय, कुन्हा, जि. अमरावती

प्रजातंत्रीय गणतंत्रीय प्रशासन, प्रबंध संसदीय और संघीय व्यवस्थाओं का मिश्रण, कल्याणकारी राज्य की, स्थापना, व्यक्तिगत अधिकार और सामाजिक न्याय के मध्य समन्वय स्वतंत्र एवं निष्पक्ष न्यायिक व्यवस्था आदि लोक प्रशासन के महत्वपूर्ण पहलू हैं। भारतीय संविधान के अंतर्गत लोक कल्याणकारी राज्य की स्थापना की गई है। इसलिए भारत के सम्पूर्ण प्रशासनिक यंत्र का सर्वोपरि लक्ष अधिकारिक जन कल्याण हैं। विकसित होते समाज की एक अनिवार्य आवश्यकता सुव्यवस्थित प्रशासन और उसमें निरन्तर वृद्धि की होती है। प्रशासकीय सेवामें लोक प्रशासनका अत्यंत महत्व है। इसके सिवाय शासन चलाना असंभव है।

लोकप्रशासन का अर्थ :- 'लोकप्रशासन' प्रशासन के एक अधिक व्यापक क्षेत्र का एक पहलू है। यह राजनीतिक निर्णय निर्माताओं द्वारा निर्धारित लक्ष्यों और उद्देश्यों की पूर्ति के लिए एक राजनीतिक व्यवस्था में मौजूद होता है।

इसे सरकारी प्रशासन के नाम से भी जाना जाता है। क्योंकि 'लोक प्रशासन' में लगे विशेषण लोक का अर्थ सरकार होता है। इस प्रकार लोक प्रशासन का ध्यान लोक नोकरशाही पर अर्थात् सरकार के नौकरशाही संगठन (प्रशासकीय संगठन) पर केंद्रित होता है। लोक प्रशासन को विविध रूपों में परिभाषित किया गया है। उनमें से निम्न परिभाषा यहाँ ली गई है।

बुडरो विल्सन :- 'लोक प्रशासन का काम कानून को सविस्तृत रूप से लागू करना है। कानून लागू करने की प्रत्येक कार्यवाही प्रशासन की है एक गतिविधि है। प्रशासन सरकार का सर्वाधिक स्पष्ट अंग है। यह कार्यकारी सरकारी है। यह सरकार या सर्वाधिक दृष्टव्य कार्यकारी व कार्यचलन पक्ष है।'

साइमन - 'आमतौर पर लोकप्रशासन का अर्थ है - राष्ट्रीय प्रांतीय और स्थानिक सरकार की कार्यकारी शाखाओं की गतिविधियाँ।

लोकप्रशासन का क्षेत्र :-

लुथर गुलिक ने प्रशासन सात तत्वों से मिलकर बनता है ऐसा कहा इन सात तत्वों के प्रथमाक्षरी नामा 'POSDCORB' से जोड़ा है, जिसका प्रत्येक वर्ण प्रशासन के तत्व को दर्शाता है। प्रशासन के इन सात तत्वों की लुथर गुलिक ने निम्न रूप में व्याख्या की,

P-Planning (योजना) - एक व्यापक ढांचे में आवश्यक कामों को करना और लक्ष्य को पूरा करने हेतु काम करने की पद्धति तैयार करना।

O-Organising (संगठित करना) + प्राधिकार के औपचारिक ढांचे को तैयार करना कार्य का उपविभाजन करना।

S-Staffing (कर्मचारियों को रखना) - अर्थात् भर्ती करने, कर्मचारियों को प्रशिक्षित करने का कार्य।

D-Directing (निर्देशित करना)- निरंतर कार्य और उपक्रम के नेता की, भूमिका का निर्वाह करना।

Co-coordinating (तालमेल करना)- याने विभिन्न अंगों का आपस में संबंध स्थापित करना ये बेहद अहम काम है।

R-Reporting (सूचना देना) - अर्थात् इसमें रिकॉर्डों, शोध और जाँच द्वारा स्वयं और अपने अंतर्गत काम करने वालों को सूचित करना।

B-Budgeting (बजट बनाना) इसमें, वित्तीय नियोजन हिसाब रखने और नियंत्रण रखना, बजट बनाना





भारतीय संविधान के अंतर्गत कार्यपालिका की शक्तिया अत्यधिक विस्तृत होने के कारण प्रायः ऐसा देखा जाता है कि, कार्यपालिका के सभी सदस्य अनेक राजनैतिक और सार्वजनिक कामों में उलझ जाते हैं। प्रशासनिक कार्यों का अन्तिम उत्तरदायित्व उन्हीं पर होता है। वे अपने अपने प्रशासकीय विभाग के राजनीतिक अध्यक्ष होते हैं। लेकिन मंत्री का पद ऐसा होता है कि उसपर आसिन व्यक्ति के लिए यह आवश्यक नहीं है कि वह प्रशासनिक कार्यों में प्रशिक्षित हो। लोकप्रियता और राजनैतिक प्रभाव के बल पर मंत्री अपने पद पर आता है। उनका काम कार्गदर्शन एवं सुझाव देने का सामान्यतः निर्देशन का और विरोधी हितों में समन्वय का है। नीति-निर्धारण का नीति-क्रियान्वयन पर सामान्य निगरानी रखने का है। प्रशासकीय बारीकियों और समझना, प्रशासकीय कार्यक्रमों को देखना, प्रशासकीय व्यय का लेखा जोखा देना या उस पर नियंत्रण करना आदि उसके लिए संभव नहीं होता। ऐसी स्थिति में यह बहुत जरूरी है कि लोक सेवाओं का एक ऐसा संगठन स्थापित किया जाए जो मंत्री को सलाह दे, उसके लिए सुचनाएँ एकत्रित करे, नीति-निर्माण में उसकी सहायता करे, प्रशासन पर नियंत्रण रखे और इसी प्रकार के कर्तव्यों का निर्वहन करे। ऐसे संगठन में अनुभवी, उच्च और गैर-विशेष अधिकारीयों का रखा जाना आवश्यक है, क्योंकि विभाग के सम्पूर्ण प्रशासन का नियंत्रण एक ऐसा ही अधिकारी कर सकता है जो नीचे के अन्य अधिकारियों की तुलना में अधिक योग्य, अनुभवी और प्रशासकीय विभाग वाला हो। मंत्री को सलाह देने वाला अधिकारी ऐसा होना चाहिए जिसे सभी विभागों या अधिकार विभागों की सामान्य जानकारी हो और जो किसी एक विषय पर दुराग्रह न करे।

इस प्रकार के अधिकारियों के लिए जो संगठन निर्मित किया जाता है उसे सचिवालय कहा जाता है। जो कि राजनैतिक अध्यक्ष के एकदम नीचे विभाग का सचिवालय-संगठन होता है। जिसके अध्यक्ष को "सचिव" कहा जाता है, जो लोक सेवा का सदस्य होता है। सचिवालय में अनेक अधिकारी होते हैं। कुछ उच्चस्तर के तो कुछ मध्यम स्तर के।

इस मशीनीकरण के युग में मनुष्यों की जरूरत उसे संभालने के लिए होती है। जिस तरह मशीनों को संचालित करने के लिए मानवीय शक्ति की जरूरत होती है। उसी प्रकार समाज को संचालित करने के लिए भी मानवीय शक्ति की जरूरत होती है। जिस प्रशासकीय मशीनरी (Administrative Machinery) के नाम से जाना जाता है। प्रशासन का संचालन कुशलता पूर्वक हो सके इसकी जिम्मेदारी प्रशासनिक कर्मचारियों की कर्तव्यनिष्ठा, सतर्कता, ईमानदारी तथा कार्य कुशलता पर आधारित होती है। नियमों का निर्माण कार्यपालिका करती है लेकिन इन नियमों की व्याख्या एवं उसे जनता पर लागू करने का कार्य अधिकारी गण ही करते हैं। अधिकारियों की नियुक्ति पदसोपान पद्धति के आधार पर होती है।

प्रशासकीय सेवा में लोकप्रशासन का महत्व :-

आधुनिक युग में प्रशासन के कार्यों में बढोत्तरी के कारण प्रशासन का महत्व एक शास्त्र और क्रिया दोनों रूपों में बढा है। प्रशासन का महत्व प्राचिन काल में भी था और वर्तमान में तो लोककल्याणकारी राज्य के कारण प्रशासकीय सेवा में इसका महत्व और भी अधिक है। लोकप्रशासन के अभ्यास के बिना हम सम्पूर्ण प्रशासन चला ही नहीं सकते।

विकसित होते हुए समाज की यह आवश्यकता होती है कि प्रशासन सुव्यवस्थित हो और उसमें निरंतर वृद्धि हो प्रशासन की कार्यक्षमता और कार्यप्रणाली में तो वृद्धि निरंतर अपेक्षित रहती है।

वर्तमान राज्यों में लोकप्रशासन के महत्व में गुणात्मक परिवर्तन लाने के पछे जो सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक तत्व है वह राज्य की, लोक कल्याणकारी भूमिका है। इस एक फेक्टर ने ही राज्य पर विभिन्न क्षेत्रों में अनेक दायित्व डाल दिये हैं और इसकी पूर्ति हेतु राज्य प्रशासन पर ही निर्भर है।

लोक प्रशासन प्रत्येक राज्य का एक अनिवार्य लक्षण है। वह पुंजीवादी है, समाजवादी हो या अधिनायकवादी हो और इनमें से प्रत्येक में उसकी भूमिका अधिकाधिक महत्व की है। क्योंकि राज्य का दर्शन प्रत्येक प्रणाली में व्यक्तिवादी के स्थान पर





सामुदायिक अहस्तक्षेप से हस्तक्षेपनीय और नियामक से जन हितकारी हो गया है। समाज में आज लोकप्रशासन सबसे अधिक कार्य-दायित्वों के बोझ से दबा हुआ है, प्रत्येक व्यक्ति को या समुदाय को अपनी बहुतसी आवश्यकता की पूर्ति का एकमात्र स्वोत (विकल्प) लोक प्रशासन ही नजर आता है। इसका कारण यह है कि राज्य की भावना लोक कल्याणकारी है जो संपूर्ण समाज को सुखी, निष्कंटक और शांतिपूर्ण जीवन का संकल्प उठाये हुये है। परिणामतः प्रशासन को घरों के भीतर किचन, शौचालयों से लेकर तो उसके बाहरी पर्यावरण में घटित प्रत्येक गतिविधि तक व्याप्त कर दिया है। इसलिए डिमाकने वर्तमान राज्य को "प्रशासकीय राज्य" की संज्ञा दी है।

राज्य और प्रशासन के कार्यों में भारी बढ़ती के कई कारण केवल लोक कल्याणकारी राज्य हो नहीं बल्कि इसके पिछे कुछ अन्य सहायक कारण भी है। जैसे औद्योगिकीकरण शहरीकरण में वृद्धि, जन संख्या में द्रुतगति से वृद्धि, महायुद्धों के कारण उपस्थित हुई परिस्थिती इत्यादी इन सभी कारणों ने समाज "वृहतसमाज" में तबदिल कर दिया है और इसके लिए "वृहत सरकार" अस्तित्व में आयी परिणामस्वरूप जैसे एम मार्क्स ने कहा है कि "बड़ी सरकारी को अपने विस्तृत कार्यकलापो को सम्पन्न करने के लिए बड़े संसाधनों की आवश्यकता होती है। अर्थात एक व्यापक उद्देश्यो और आकार वाली प्रशासनिक मशीनरी।

1. लोक कल्याणकारी प्रशासन - आज लोक कल्याणकारी राज्य की संकल्पना है अतः नागरिकों की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु राज्य अपने इन दायित्वों की, पूर्ति वैसी ही भावना से प्रस्त प्रशासन से कर सकता है। अतः प्रशासन भी लोक कल्याणकारी होना चाहिए। पहले राज्य और उनके प्रशासन "पुलिस" राज्य या।
2. प्रशासकीय राज्य की संकल्पना - लोक कल्याणकारी राज्य की अवधारणा ने पुलिस राज्य को प्रशासकीय राज्य में बदला है। गर्भस्थ शिशु की देखभाल (टिकाकरण अन्य स्वास्थ्य जांच) से लेकर उसके सुरक्षित प्रसव शिक्षा रोजगार की व्यवस्था करने तक लोक प्रशासन पत्र-पत्र पर मानव की सेवा में लगा रहता है। फाईनर के अनुसार "वह झुले से लेकर कन्न तक मानव के साथ है।"
3. सामाजिक - आर्थिक परिवर्तन का साधन - भारत जैसे विकासशील देशों में आर्थिक शक्तियों के केंद्रीकरण और जनसंख्या विस्फोट ने भूखमरी, बेकारी, गरीबी, जैसी समस्याओं को गंभीर बना रखा है। वही सामाजिक रूप से उंची निची छुआछूत जैसी भावनाओं ने भी समाज को जकड रखा है। परिणामस्वरूप इसका दायित्व लोक प्रशासन के कंधों पर है।
4. सभ्यता का रक्षण :- औद्योगिकीकरण आदि ने जहाँ पर्यावरण के लिए खतरा पैदा किया है, वही उसकी तकनीकों का एक परिणाम बेकारी और गरीबी के टापुओं के रूप में प्रकट हुआ है। इससे समाज में असंतोष घनप रहा है। प्रशासनको भौतिक लाभों के साथ ही साथ उपरोक्त जबाबदारी को पूर्ण करना है। अन्यथा असंतोष का ज्वालामुखी समाज, सभ्यता सबको इतिहास की वस्तु बना देगा।
5. प्रशासन - एक नैतिक कार्य - आधुनिक दुष्प्रवृत्ति या सभ्यता को रौंद रही है, समाज में व्यभिचार आदि को बढ़ावा दे रही है और समाज नैतिक पतन की ओर अग्रेसर है। ऐसे समय प्रशासन कोही राज्य निर्देशानुसार समाज में शुचिता, नैतिकता सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाना है। अनैतिकता को नियंत्रित करना है और सभ्यता को सुरक्षित रखना है।
6. प्रशासन अनिवार्यता - जनता के लिए नीति का निर्माण राजनैतिज्ञ करते हैं, लेकिन इन्हे अमल में लाने वाला प्रशासन जब तक सक्रीय नहीं होता, उन नितियों का कोई मूल्य नहीं है।
7. नीति को व्यवहारिक रूप देना - मसुदा बनाने का काम व्यवस्थापिका करती है। उस नीति को व्यवहारिक रूप प्रशासन ही देता है। क्यों कि प्रशासन जनता के संपर्क में रहता है।
8. सामाजिक स्थिरता - पुराने और नये मूल्यों के मध्य उचित समन्वय स्थापित कर लोकप्रशासन सामाजिक स्थिरता सुनिश्चित करता है
9. प्रशासन में बदल - जिस प्रकार समाज में तीव्र परिवर्तन हो रहे है, उसी प्रकार से प्रशासन को भी बदलना पड रहा है प्रशासन को बदलती परिस्थितनुसार परिवर्तनीय होना जरुरी है। अतः इसके अध्ययन को महत्व दिनो दिन बढ रहा है यदि इसके तरफ ध्यान नहीं दिया तो समाज और राज्य डह जाएंगे।






परंतु लोक प्रशासन को अनेक विकृतियों का सामना करना पड़ता है। विशेषकर जहाँ विकासशील देश है वहाँ प्रशासन में भाई-भातिजावाद, भ्रष्टाचार विलम्ब, अहम जैसी भावनाएं विद्यमान है। जिससे यह जनरक्षक प्रशासन ही जनभक्षक बन जाता है। परिणामस्वरूप उसकी छवि धूमिल हो जाती है। नौकरशाही को समाज आज अपना शुभचिंतक मित्र मानने के बजाय उससे डरता है। ये आज की सच्चाई है। इससे प्रशासन का महत्व है या नहीं ऐसा संदेह होने लगता है। निष्कर्ष हम कह सकते हैं कि लोकप्रशासन में कमियों के बावजूद आधुनिक समाज का केंद्र बना है। अतः उसे दूर करना आवश्यक है। प्रशासन को अधिक क्षमतावान बना सके विद्यमान प्रशासन अनेक कमियों, समस्याओं से ग्रस्त है।

1. जिस अनुपात में समाज की कक्षाएं बढ़ रही है, उस अनुपात में प्रशासनिक साधनों का विकास नहीं हो पा रहा है। अतः प्रशासनिक सेवा परीक्षामें उपरोक्त बातों को ध्यानमें रखते हुए अधिक से अधिक प्रश्न दिये जायें।
2. नौकरशाही के आकार में अधिक वृद्धि हो गयी है, जबकि उसकी गुणवत्ता घटी है। अतः गुणवत्ता की तरफ ध्यान देना आवश्यक है।
3. प्रशासकीय नैतिकता का अभाव सर्वत्र दृष्टिकोचरण होता है। अर्थात् जनता की, आज्ञानता और अशिक्षा का फायदा उठाकर नीतियों निर्णयों को इस तरह कार्यान्वित किया जाता है। लोकसेवा परीक्षा के माध्यम से जनता को प्रशासन के अनुरूप व्यावहारिक बनाया जाय।
4. प्रबंधकीय क्षमता और तकनीकी योग्यता का अभाव है। इस हेतु अभ्यासक्रम में बदलाव लाकर उपरोक्त त्रुटि दूर की जा सकती है।
5. प्रशासन को कार्यकुशल, कर्तव्य परायण व सक्रिय होना चाहिए। जनता को स्वामी मानकर सेवक के रूप में कार्य करना चाहिए। लोक तंत्र अपने पैरोपर निर्भर है ये प्रशासन को अहसास होना चाहिए अतः लोकतंत्र को अधिकाधिक सफल बनाने हेतु लोकसेवा आयोग (प्रशासकीय सेवा) में इससे संबंधित अधिक से अधिक प्रश्न डालकर अपने लोक कल्याणकारी राज्य के अनुकूल प्रशासकीय अधिकारी तैयार करना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ :

9. डॉ. डी. एस. यादव - लोक प्रशासन रजत प्रकाशन नई दिल्ली
10. डॉ. काळे, अशोक - लोक प्रशासन विद्या प्रकाशन, नागपुर
11. डॉ. देशपांडे, श्रीकांत - लोक प्रशासन मंगेश प्रकाशन, पुणे
12. Dr. Richa, Rathore - Public Policy and Administration in India


Principal
Arts & Science College
Kurha



अनुक्रमणिका.....

स.क्र.	नाम	शीर्षक	पृ.क्र.
1	डॉ.श्रीमती कागिनी जैन	क्रीडा चिकित्सा : उपचार व शोध का नया क्षेत्र	01
2	डॉ.विजय शंकर मिश्र, अनुपम कोठारी	व्यक्तित्व विकास में बहिरंग योग की भूमिका	04
3	Dr. Anil Vaidhy	Effect of Yoga on Mental Toughness and Sports Comparative Anxiety -----	06
4	Dr. Santosh Tayde	Yoga Pilates : Holistic Fitness of Exercising mind and body	09
5	Dr. Shyamsundar Kela	Sedentary Lifestyle : Concept and role of Healthcare Practitioners	11
6	Prof. Divakar V. Ruhikar	The Psychological Aspects of Sports injury	15
7	Dr. Madhuri Kopolwar	Effect of Meditation on Mental Toughness and Sports Comparative Anxiety -----	20
8	Prof. Kailash Karale	Effect of Functional Strength Training and Flow Yoga on Muscular Fitness	23
9	Dr. Sant Kumar Bhatnagar	Response Spectrals of Yoga Against Human Neurological Disorder	26
10	सुषमा तिवारी	आधुनिक जीवन में योग एवं व्यायाम की भूमिका	28
11	Manoj Kumar	Geographical study of nutritional food of the players and the importance	29
12	Dr. Sanjay Choudhary , Dr. P.R. Mankar	Stress and Coping Strategies	32
13	Dr. Umesh J Rathi	Comparative Study of Emotional Intelligence and Creativity among Differen	34
14	Dr. Alok Mishra	Wellness through walking	39
15	Neelam Dwivedi	Shrimadbhagvadgeeta - A Repository of the Precepts of Yoga	42
16	डॉ. कमल किशोर	वर्तमान मानव जीवन शैली प्रबंध में योग की भूमिका	45
17	डॉ. श्रीकान्त दुबे	शारीरिक व मानसिक विकास में योग-व्यायाम का प्रभाव	52
18	Dr. D. S. Wankhede	Benefits of Yoga for Mental and Physical Fitness	55
19	डॉ. आशीष विल्लोरे	योग और व्यायाम से तनाव मुक्ति	58
20	डॉ. भारती दुबे	युवाओं के विकास में योग व्यायाम का महत्व	61
21	डॉ. संगीता अहिरवार	योग एवं व्यायाम का सामाजिक महत्व	65
22	सुशील कुमार पटवा	योग व व्यायाम में अभिप्रेरणा की भूमिका	68
23	सुश्री मोहिनी बावरकर , श्रीमती नारमा चाको	योग व व्यायाम में संगीत की भूमिका	73
24	डॉ. ज्योति जुनगरे	आधुनिक जीवन में योग व व्यायाम की भूमिका	76
25	Dr. Neeta Choubey , Nilima Piter	Sports Policy of India	81
26	श्रीमती किरण विश्वकर्मा, सोनाली साहू	योग व्यायाम से नशा मुक्ति : कारण और निवारण	83
27	Dr. Sanjay Arya, Dr. Yashwant Nigwal	Effects of Yoga on Mental and Physical Health	86
28	हरमिन्दर सिंह दिल्ली	वर्तमान परिदृश्य में योग की आवश्यकता एवं महत्व	91
29	Dr. Pravin G. Patil	Psychological Strees	94
30	वंदना श्रीवास्तव	आधुनिक जीवन में योग व व्यायाम की भूमिका	99
31	Dr. Vidyanand Pandey, Dr. Kaushal Kumar Pathak	An analytical study of unlimited possibilities and problems of Employment--	102
32	डॉ. कल्याण देवराज जी मालगुरे	हठ योग की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि	108
33	Dr. Sanjay Choudhari	Importance of Proper Nutrition for Sportsman	113
34	Prof. Anjali Barde	Importance of Yoga and Physical Education in Youngster	115
35	Dr. Yashwant Patil	Advantages and Importance of Yoga. Asans in daily life	118
36	Dr. Reena Malviya	Nutrition for Sports Person	120
37	Dr. Ramesh Shukla	Role of Yoga and Exercise in Modern life	122
38	Dr. Sima V. Deshmukh	Role of ICT in Sports and Their Implementation	126
39	डॉ. शुभांगी दागले	स्वस्थ जीवन में योगिक आहार का महत्व	129
40	डॉ. कमल वाघवा, श्रीमती आमा वाघवा	युवाओं के विकास में योग व शारीरिक शिक्षा का महत्व	131
41	Devanand B. Sawarkar	Restorative and Therapeutic benefits of Yoga in Addiction Recovery	133
42	Alind Tiwari, Shailendra Tiwari	Playing Role of Exercise Related to Yoga Science in Modern Life	135
43	डॉ. वर्षा चौधरी	आधुनिक जीवन में योग व व्यायाम की भूमिका	137
44	Anoop Sahu , Dr. Aneceta Sahu	Yoga, Health and Physical Education	140

COMPARATIVE STUDY OF EMOTIONAL INTELLIGENCE AND CREATIVITY AMONG DIFFERENT ACADEMIC GROUPS OF STUDENTS

Prof. Dr. Umesh J. Rathi,

13

Director of Physical Education and Sports Arts & Science College, Kurha, Dist. Amravati

Introduction : Creative classrooms give an opportunity for students to learn with fun. The teaching activities such as storytelling and skits help them to learn without the pressure of learning. Students are always fun loving and including creative activities along with curriculum gains their interest for learning. Teachers should encourage this quality in students from the lower classes itself and inspire them to believe in one's own creativity. Fun team building activities can be organized so as to promote creative thinking in groups and helping them to learn about accepting others' ideas.

Emotional development: Creative expression is important for a Student to trigger up their emotional development. Importantly, this has to happen at their lower classes itself so that they grow up by responding well to the happenings around them. Creativity gives them that freedom to explore the surroundings and learn new things from them. Students would always love a classroom setting that helps them to explore freely without setting them any boundaries. When they can show off their true emotions in a creative manner in their classrooms, they can build up good confidence level.

Reduced stress and anxiety: When some time is set aside for creativity in between all the strenuous study times, it takes a lot of stress away from students. This sense of joy keeps them relaxed and reduces their anxiety which in turn helps them to prepare well for exams and excel in it. Integrating more hands-on learning and making room for visual reflection is really going to make a positive impact. Encouraging productive discussions as well as making the classroom layout more flexible all matters a lot in gearing up a creative classroom atmosphere.

Engaging in regular physical activity (PA) is one of the best ways to improve general health, including physical, psychological, and emotional health. PA has become the prime health indicator; it plays an essential role in enhancing physical fitness and health-related behavior, prolonging life, improving health-related quality of life (HRQL), enhancing weight management, and lowering the risk of morbidity and mortality from diseases, and has a positive influence on various medical disorders (Sundblad et al. 2008; Pedersen & Saltin 2006; Brosnahan et al. 2004; World Health Organization [WHO] 2004; Vuori 1998).

Inactivity and sedentary lifestyles are prevalent throughout the global population (WHO 2004). Less than 60% of individuals globally achieve the minimum recommendation of 30 minutes a day of moderate-intensity Physical Activity (PA). The PA levels of college students are currently below the levels thought to be sufficient to promote health benefits (Sundblad et al. 2008; Biddle & Chatzisarantis 1999).

Emotional Intelligence Emotion is seen as the component that can make or break a performance. In fact, it is often referred to as the key component which will facilitate or restrict any athlete's flow of potential and ultimately their performance. In any given event, a person's performance is determined by not only their talents, information and skill set but by the way they feel about all the aspects of their event they are performing in and their life in general. It is thus governed by emotion and belief. Those athletes who have an unshakeable belief in themselves go on to acquire the best results. This is because both the fear of failure and the fear of success itself can short out a person's circuits. Being able to control one's emotions, readjust negative self-beliefs and control his response to pressure is a winning formula to the success you have always wanted. It may definitely conclude that fear is a limiting emotional pattern as it prevents one reaching their full potential and ultimate performance capability, but then how does one achieve success.

Physical activity (PA) is related to physical mental and social wellness. In the specific case of mental health, previous studies have found that individuals who are engaged in PA demonstrate better psychological wellness and suffer less stress and depression. These findings involved teenagers undergraduate students and the elderly. However, PA levels are low in the university population worldwide. A meta-analysis of undergraduate student PA habits shows that between 40 and 50% do not meet the recommendations for PA.

Emotional intelligence (EI) is defined as the ability to perceive accurately, appraise, and express emotions; the ability to generate feelings when they facilitate thought, understand emotion and emotional knowledge and to regulate emotions to promote emotional and intellectual growth. According to previous studies, higher scores in EI result in greater wellness and happiness, better job performance, more prosocial behavior, and less aggressive behavior. It also correlates positively with positive mood and negatively with negative mood. Similarly, various meta-analyses confirm that EI has a significant relationship with better mental health and, furthermore, is a mediator of stress. High levels of EI correlate negatively with low mental and physical health and are related to healthy habits such as not smoking or drinking alcohol, and with a healthy diet or more exercise. Some sociodemographic factors may be relevant in EI. Different studies have demonstrated that women show significantly higher levels of EI compared to men. EI levels increase progressively with age.

Creativity

There are too many physical and psychological aspects which play vital role in our day to day life. Games and sports are the laboratory for us to invent our creativity and academic achievement. Creativity is the heart of art.

“आधुनिक जीवन में योग एवं व्यायाम की भूमिका”

Art is the capacity to see beyond our sight, to give a form to our imagination true is known as creativity. Creativity is ability to generate innovative ideas and manifest them from thought into reality. The process involves original thinking and then producing. Creativity refers to the phenomenon whereby a person creates something new (a product a solution, a work of art etc.) that has some kind of value. What counts as "new" may be in reference to the individual creator, or to the society or domain within which the novelty occurs. What counts as "valuable" is similarly defined in a variety of ways. Scholarly interest in creativity ranges widely; the relationship between creativity and general intelligence; the mental and neurological processes associated with creative activity; personality type and creative ability; creativity and mental health; creativity in education; and ways of fostering creativity through training and technology.

Statement of the problem

Emotional Intelligence (EI) is the area of cognitive ability including traits and social skill that facilitates interpersonal behavior. Emotional Intelligence is the abilities to control one's own and other feelings and emotions. Creativity is the ability to generate innovative ideas and manifest them from thought into reality. Creativity refers to the phenomenon whereby a person creates something new. Emotional Intelligence and creativity are the part of health and wellbeing. It is proverb that 'Sound mind stay in sound body'. Physically fit person may possess better level of Emotional Intelligence and creativity. Therefore research scholar was interested to undertake the study stated as "Comparative Study of Emotional Intelligence and Creativity among Different Academic Group of Students".

Purpose of the Study

- The main purpose of study was to determine the difference in emotional intelligence among the three physical fitness groups i.e., good, average and poor.
- The other purpose of this study was to determine the difference in creativity among the three physical fitness groups i.e., good, average and

Significance of the Study

- The findings of the study would be helpful to the teachers of physical education to know the physical fitness level of their students.
- The findings of the study would also be helpful to the teachers to know the emotional intelligence and creativity level of their students.
- The results of the study would be helpful to know which physical fitness group possesses better emotional intelligence and creativity level.

Hypotheses

On the basis of literature, discussion with the experts and scholar's own understanding, it was hypothesized that

Hypothesis	Statement
H1	There would be significant difference in the sub-variable of self-awareness of emotional intelligence.
H2	There would be significant difference in the sub-variable of self-regulation of emotional intelligence.
H3	There would be significant difference in the sub-variable of motivation of emotional intelligence.
H4	There would be significant difference in the sub-variable of empathy of emotional intelligence.
H5	There would be significant difference in the sub-variable of social skill of emotional intelligence.
H6	There would be significant difference in the sub-variable of inspiration of creativity.
H7	There would be significant difference in the sub-variable of clarification of creativity.
H8	There would be significant difference in the sub-variable of evaluation of creativity.

Table -1
Classification of Students Based on Composite Score of Physical Fitness

Fitness Group	Range	Number of Candidate
Good	325.10 to 378.90	5
Average	272.90 to 325.90	35
Poor	219.90 to 272.90	10

The findings of the table-1 shows that only five students fall under the good fitness group (R = 325.80 to 378.10), thirty five students under average fitness group (R = 272.90 to 325.90) and ten students under poor fitness group (R = 219.90 to 272.90).

Table-2
Comparison of Means among three Different Groups of Emotional Intelligence and Creativity

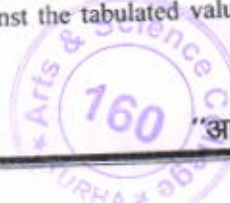
Source of Variance	Degree of Freedom (df)	Sum of Square	Mean Sum of Square	F-Ratio
Self Awareness BWG	Degree of Freedom for all Variable Between Group and Within Group (2.47)	1.52	0.76	0.099 @
Self Awareness WG		359.88	7.657	
Self Regulation BWG		17.207	8.603	1.037 @
Self Regulation WG		389.61	8.289	
Motivation BWG		34.556	17.278	1.449 @
Motivation WG		560.32	11.921	
Empathy BWG		19.991	9.995	0.979 @
Empathy WG		479.70	10.206	
Total emotional Intelligence BWG		28.853	14.426	0.273 @
Total Emotional Intelligence WG		2479.54	52.756	
Clarification BWG		14.332	7.166	1.308 @
Clarification WG		257.43	5.477	
Evaluation BWG		4.331	2.165	0.222 @
Evaluation WG		457.8	9.740	
Distillation BWG		1.95	0.975	0.152 @
Distillation WG		301.4	6.412	
Incubation BWG		14.326	7.163	1.430 @
Incubation WG		235.44	5.009	
Perspiration BWG		7.357	3.678	0.585 @
Perspiration WG		295.33	6.283	
Social Skill BWG	3.754	1.877	0.150 @	
Social Skill WG	587.50	12.5		
Inspiration BWG	8.993	4.496	0.820 @	
Inspiration WG	257.53	5.479		

Tabulated $F_{0.05(2,47)} = 3.195$

@Not Significant at 0.05level

BWG = Between Group
WG = Within Group

The Table- 2 indicates that F-ratio of following variables as Self- awareness 0.099, Self-regulation 1.037, Motivation 1.449, Empathy 0.979, Social Skill 0.150, Total Emotional Intelligence 0.273, Inspiration 0.820, Clarification 1.308, Evaluation 0.222, Distillation 0.152, Incubation 1.430, Perspiration 0.585, Total Creativity 1.327 are found to be insignificant against the tabulated value $F_{0.05(2,47)} 3.195$. hence post hoc test was not employed.



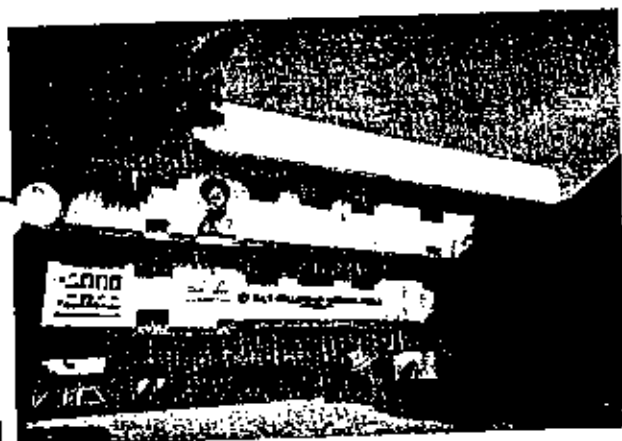


National Conference on
Multidisciplinary Research in Science and Technology
for Healthy Lifestyle Management

NCMRST-2020

Friday, 24th January 2020

Special Issue of
Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638x



Organized by

The Berar General Education Society's

Shri R.L.T. College of Science, Akola

Civil Lines, Akola, Maharashtra - 444 001

Re-accredited by NAAC with 'A' Grade, CGPA-3.12 (3rd Cycle)

Recognised by Government of Maharashtra

Affiliated to Sant Gadge Baba Amravati University, Amravati

Phone - 0724-2415480, Fax - 0724-2415650

E-mail - rtcollegeakola@gmail.com, Website - www.rts.edu.in

In association with

Microbiologist's Society, India

Amravati University Chemistry Teachers' Association, Amravati

Amravati University Physics Teachers' Association, Amravati

In collaboration with

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)

ISSN-2349-638X

114	K.K. Rathod, K.V. Bhakade, J. T. Ingle	Combustion Synthesis and Luminescence of Rare Earth Doped Ortho-Borate Phosphors For Lightning And Display	457
C			
115	Prof. Jayesh Arjun Gajare	The Role of ICT/ E-Learning and Communication Skills in Science	460
116	Mrs. Jagruti Rohan Mahajani Mr. Hemant Yashwant Satpute	Study Of The Effectiveness Of Blended Learning For Geography Subject On Student's Achievement	462
117	Ulhas V. Bramhe	Importance of Biomechanics in Sport	465
118	Dr. Kamini Mamarde	Need Of Biomechanics In Sports	468
119	Prof. Sachin J. Kokode	Sports and Healthy Lifestyle	470
120	Miss Priyanka S. Jaiswal Mangesh Ubale	Innovations in Library automation and Information Science	473
121	Dr. Bharat R. Lokalwar	Digital Library : Role in Education	477
122	Dr. Rajesh D. Chandrawanshi	Science And Technology Helps To Improve Sports Skill	480
123	Dr. Devendra Gawande	Role Of Yoga And Sports In Modern Life	484
124	Prof. Dr. Umesh Rathi	Role Of Information And Communication Technology In Modern Life And Its Importance	487
125	Archana N. Deshmukh	Contribution of ICT in the Process of Language Teaching and Learning	489
126	Mrs. Supriya A. Bejalwar	Features Of Academic Library Websites: A Review	491
127	Namrata H. Mali	The Role of ICT in English Language Teaching and Learning	495
128	Sanjay K. Kale	Role Of Exercise In Weight Management	497
129	Arun B. Khedkar	The Role of Technology in Teaching and Learning English	500
130	Dr. N. W. Deulkar	Impact of Sport Physiology on Athlete's Performance: Reference to Psychology	502

Role of Information and Communication Technology in Modern Life and its Importance

Prof. Dr. Umesh Rathi

Arts And Science College Kura Dist. Amravati

Abstract

ICTs stand for information and communication technologies and are defined, for the purposes of this primer, as a "diverse set of technological tools and resources used to communicate, and to create, disseminate, store, and manage information." These technologies include computers, the Internet, broadcasting and many more.

Introduction

The term ICT is also used to refer to the convergence of audiovisual and telephone networks with computer networks through a single cabling or link system. There are large economic incentives to merge the telephone network with the computer network system using a single unified system of cabling, signal distribution, and management. ICT is an umbrella term that includes any communication device, encompassing radio, television, cell phones, computer and network hardware, satellite systems and so on, as well as the various services and appliance with them such as video conferencing and distance learning.

ICT is a broad subject and the concepts are evolving. It covers any product that will store, retrieve, manipulate, transmit, or receive information electronically in a digital form (e.g., personal computers, digital television, email, or robots). Theoretical differences between interpersonal-communication technologies and mass-communication technologies have been identified by the philosopher Piyush Mathur. Skills Framework for the Information Age is one of many models for describing and managing competencies for ICT professionals for the 21st century.

History of Information and Communication Technology

The term "information technology" evolved in the 1970s. Its basic concept, however, can be traced to the World War II alliance of the military and industry in the development of electronics, computers, and information theory. For the next twenty-five years, mainframe computers were used in large corporations to do calculations and manipulate large amounts of information stored in databases. Supercomputers were used in science and engineering, for designing aircraft and nuclear reactors, and for predicting worldwide weather patterns. Minicomputers came on to the scene in the early 1980s in small businesses, manufacturing plants, and factories.

In 1975, the Massachusetts Institute of Technology developed microcomputers. In 1976, Tandy Corporation's first Radio Shack microcomputer followed; the Apple microcomputer was introduced in 1977.

Benefits of Information and Communication Technology

Information and Communications Technology (ICT) has an important role in the world since we are now in the information age era. With ICT, the company can make the business easier to happen with the client, supplier and the distributor. It is also very important in our daily lives. The lack of appropriate information at the right time will result in low productivity, low quality research works, and waste of time to pursue information and even to do research which actually others had done or in other countries. Nowadays ICT cannot be separated with our daily needs.

ICT has a great impact in our daily lives. For example, we can read our local newspaper using the online newspaper. Another example is we still can get connected with our family, relatives, or colleagues even if we are abroad by using the electronic mail, yahoo messenger, call conference, or video conference.

Digital computer and networking has changed our economy concept to the economy with no boundary in time and space because of ICT. It brings a lot of advantages for economic development enabling millions of transactions to happen in an easy and fast way.

ICT is one of the economic development pillars to gain national competitive advantage. It can improve the quality of human life because it can be used as a learning and education media, the mass communication media in promoting and campaigning practical and important issues, such as the health and social area. It provides wider knowledge and can help in gaining and accessing information.

ICT has become an integral part of everyday life for many people. It increases its importance in people's lives and it is expected that this trend will continue, to the extent that ICT literacy will become a functional requirement for people's work, social, and personal lives.

Methodology of ICT

The potential of each technology varies according to how it is used. Haddad and Draxler identify at least five levels of technology use in education: presentation, demonstration, drill and practice, interaction, and collaboration.

Each of the different ICTs—print, audio/video cassettes, radio and TV broadcasts, computers or the Internet—may be used for presentation and demonstration, the most basic of the five levels. Except for video technologies, drill and practice may likewise be performed using the whole range of technologies. On the other hand, networked computers and the Internet are the ICTs that enable interactive and collaborative learning best; their full potential as educational tools will remain unrealized if they are used merely for presentation or demonstration. ICTs stand for information and communication technologies and are defined, for the purposes of this primer, as a “diverse set of technological tools and resources used to communicate, and to create, disseminate, store, and manage information.” These technologies include computers, the Internet, broadcasting technologies (radio and television), and telephony to be used and their modalities of use.

Importance of ICT

The use of ICT in education add value in teaching and learning, by enhancing the effectiveness of learning, or by adding a dimension to learning that was not previously available. ICT may also be a significant motivational factor in students' learning, and can support students' engagement with collaborative learning. Information and Communications Technology (ICT) is basically our society's efforts to teach its current and emerging citizens valuable knowledge and skills around computing and communications devices, software that operates them, applications that run on them and systems that are built with them.

As a matter of fact, we are living in a constantly evolving digital world. ICT has an impact on nearly every aspect of our lives – from working to socializing, learning to playing. The digital age has transformed the way young people communicate, network, seek help, access information and learn. We must recognize that young people are now an online population and access is through a variety of means such as computers, TV and mobile phones.

Conclusion

ICT is one of the economic development pillars to gain national competitive advantage. It can improve the quality of human life because it can be used as learning and education media, the mass communication media in promoting and campaigning practical and important issues, such as the health and social area. Information and communications technologies (ICTs) are permeating modern lifestyles, shaping and coloring the undertaking of activities and travel.

References

- 1) "ITU releases annual global ICT data and ICT Development Index country rankings - librarylearningspace.com". 2014-11-30. Retrieved 2015-09-01.
- 2) "Basic information: about wsis". International Telecommunication Union. 17 January 2006. Retrieved 26 May 2012.
- 3) Jump up to: a b "ICT Facts and Figures – The world in 2015". ITU. Retrieved 2015-09-01.
- 4) "ICT in Education". Unesco. Unesco. Retrieved 10 March 2016.
- 5) Blackwell, C.K., Lauricella, A.R. and Wartella, E., 2014. Factors influencing digital technology use in early childhood education. *Computers & Education*, 77, pp.82-90.
- 6) "What is Writing to Learn, WAC Clearinghouse".
- 7) "Evidence for How Writing Can Improve Reading, Carnegie.Org 2010" (PDF).
- 8) "Closing the gaps – Improving literacy and mathematics by ict-enhanced collaboration, Science Direct, 2016, pg 78". *Computers & Education*. 99: 68–80. August 2016. doi:10.1016/j.compedu.2016.04.004.
- 9) Jump up to: a b c d Agence Française de Développement (February 2015). "Digital services for education in Africa" (PDF). unesco.org. Retrieved 19 May 2018.
- 10) Jump up to: a b "ITU releases annual global ICT data and ICT Development Index country rankings". www.itu.int. Retrieved 2015-09-01.


Principal
Arts & Science College
Kurha

Date of Publication
15 February 2020

vidyawarta

International Multilingual Research Journal



Vidyawarta is peer reviewed research journal. The review committee & editorial board formed/appointed by Harshwardhan Publication scrutinizes the received research papers and articles. Then the recommended papers and articles are published. The editor or publisher doesn't claim that this is UGC CARE approved journal or recommended by any university. We publish this journal for creating awareness and aptitude regarding educational research and literary criticism.

*The Views expressed in the published articles, Research Papers etc. are their writers own. This Journal dose not take any libility regarding appoval/disapproval by any unversity. institute, academic body and others. The agreement of the Editor, Editorial Board or Publicaton is not necessary.
If any judicial matter occurs, the jurisdiction is limited up to Beed (Maharashtra) court only.*



<http://www.printingarea.blogspot.com>

विद्यावार्ता: Interdisciplinary Multilingual Refereed Journal Impact Factor 7.04 (2019)

Editorial Board & review Committee

• **Chief Editor**

Dr Gholap Babu Ganpat
Parli_Vajinath, Dist. Beed Pin-431515 (Maharashtra)
9850203295, 7588057695
vidyawarta@gmail.com

• **M.Saleem**

saien Ghulam street
Fatehgarh Sialkot city
Pakistan. Phone No. 0092 3007134022
saleem.1938@hotmail.com

• **Dr. Momim Mujtaba**

Faculty Member, Dept. of Business Admin.
Prince Salman Bin AbdulAziz University
Ministry of Higher Education, Kingdom of Saudi
Arabia, Tel No.: +966-17862370 Extn: 1122

• **N.Nagendrakumar**

115/47B, Campus road,
Konesapuri, Nilaveli (Postal code-31010),
Trincomalee, Sri Lanka
nagendrakumar@rediffmail.com

• **Dr. Vikas Sudam Padalkar**

vikaspadalkar@gmail.com
Cell. +91 98908 13228 (India),
+ 81 90969 83228 (Japan)

• **Dr. Wankhede Umakant**

Navgan College, Parli -v Dist. Beed
Pin 431126 Maharashtra
Mobi.9421336952
umakantwankhede@rediffmail.com

• **Dr. Basantani Vinita**

B-2/8, Sukhwani Paradise,
Behind Hotel Ganesh, Pimpri,
Pune-17 Cell: 09405429484,

• **Dr. Bharat Upadhya**

Post.Warnanagar, Tq.Panhala,
Dist.Kolhapur-4316113
Mobi.7588266926

• **Jubraj Khamari**

AT/PO - Sarkanda, P.S./Block - Sohela
Via/Dist. - Bargarh, Pin - 768028 (Orissa)
Mob. No. - 09827983437
jubrajkhamari@gmail.com

• **Krupa Sophia Livingston**

289/55, Vasanthapuram,
ICMC, Chinna Thirupathy Post,
Salem- 636008 +919655554464
liviidswbts@gmail.com

• **Dr. Wagh Anand**

Dept. Of Lifelong Learning and Extension
Dr B A M U Aurangabad pin 431004
Mobi. 9545778985
wagh.anand915@gmail.com

• **Dr. Ambhore Shankar**

Jalna, Maharashtra
shankar296@gmail.com
Mobi.9422215556

• **Dr. Ashish Kumar**

A-2/157, Sector-3, Rohini, Delhi -110085
Ph.no: 09811055359

• **Prof. Surwade Yogesh**

Dept. Of Library, Dr B A M U Aurangabad , Pin 431004
Cell No: +919860768499
yogeshs85@gmail.com

• **Dr. Deepak Vishwasrao Patil,**

At. Post. Saundhane, Near
Kalavishwa. Computer, Tq. Dist. Dhule-424002.
Mobi. 9923811609
patil_dpak22583@gmail.com

• **Dr. Vidhya.M. Patwari**

Vanshree Nagar, Behind Hotel
Dawat, Mantha Road, Jalna-431203
Mobi.9422479302
patwarivm@rediffmail.com

• **Dr. Varma Anju**

Assistant Professor, Dept. of Education,
Sikkim University 6th Mile, Samdur Tadong-737102
GANGTOK - Sikkim, (M.8001605914)
anjuvarma2009@rediffmail.com

• **Dr. Pramod Bhagwan Padwal**

Associate Professor, Department of Marathi
Banaras Hindu University,
Varanasi-221005. (Uttar Pradesh)
Mobi. 9450533466
ppadwal@gmail.com



At. Post. Limbaganesh, Tq. Dist. Beed Pin-431126 (Maharashtra)
vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors

Undertaking/ Copyright Form

The Submitted manuscript/paper is original, exclusive and unpublished material. It is not under consideration for publication elsewhere. Further, it will not be submitted for publication elsewhere, until a decision is conveyed regarding its acceptability for publication in Harshwardhan Publication Pvt. Ltd. Published research journal. I/we also grant permission to organizer for making necessary changes in the title and content of the paper, if required, while being considered for publication. The undersigned hereby represents and warrants that the paper is original and that he/she is the author of the paper, except for material that is clearly identified as to its original source, with permission notices from the copyright owners where required.

I am sending the present research paper by verifying all the permissions regarding the publication. I have seen all related online details and I have kept the copy of those details with me.



Details of Authors & Paper

- Title of the research paper _____
- Language for the presentation: Marathi Hindi English
- Author Name 1 : Dr./Prof. _____
- Author Name 2 : Dr./Prof. _____
- Institution/Organization: _____
- Correspondence Address: _____
- State _____ Pin:
- Contact No.1. Contact No.2.
- Mail id: 1 _____
- Date _____ Signature of the participant _____

Note : This undertaking/agreement is to be signed by at least one of the authors who have obtained the assent of the co-author(s) where applicable.

Send Copyright Declaration form scan copy after sign on it to :
vidyawarta@gmail.com, printingareahp@gmail.com

Any help plz call on : 09850203295, 07588057695

Editors Message...

Educational Research as nothing but cleansing of educational Research is nothing but cleaning of educational process. Many experts think Educational Research as under- According to Mouly, - Educational Research is the systematic application of scientific method for solving for solving educational problem. Travers thinks, - Educational Research is the activity for developing science of behavior in educational situations. It allows the educator to achieve his goals effectively. According to Whitney, - Educational Research aims at finding out solution of educational problems by using scientific philosophical method. Thus, Educational Research is to solve educational problem in systematic and scientific manner, it is to understand, explain, predict and control human behavior.

Name of Educational Research changes with the gradual development occurs with respect to knowledge and technology, so Educational Research needs to extend its horizon. Being scientific study of educational process, it involves : - individuals (student, teachers, educational managers, parents.) – institutions (Schools, colleges, research – institutes) It discovers facts and relationship in order to make educational process more effective. It relates social sciences like education. It includes process like investigation, planning (design) collecting data, processing of data, their analysis, interpretation and drawing inferences. It covers areas from formal education and conformal educations as well.

This part locates the research enterprise in several contexts. It commences with positivist and scientific contexts of research and then proceeds to show the strengths and weaknesses of such traditions for educational research. As an alternative paradigm, the cluster of approaches that can loosely be termed interpretive, naturalistic, phenomenological, interactions and ethnographic are brought together and their strengths and weaknesses for educational research are examined. The rise of critical theory as a paradigm in which educational research is conducted has been spectacular and its implications for the research undertaking are addressed in several ways here, resonating with curriculum research and feminist research (this too has been expanded and updated) Indeed critical theory links the conduct of educational research with politics and policy-making, and this is reflected in the discussions here of research and evaluation, arguing how much educational research has become evaluative in nature. A more recent trend has been the rise of complexity theory, originally from the natural sciences, but moving inexorably into social science research. This part introduces the field of complexity theory and steers readers to the accompanying web site for further details. That educational research serves a political agenda is seen in the later sections of this part. The intention here is to introduce readers to different research traditions, with the advice that 'fitness for purpose' must be the guiding principle: different research paradigms for different research purposes.

Dr. Bapug Gholap

INDEX

- 01) Impact of English language on Indian society in post colonial period.
DR. Abhay M. Patil, Dist. Buldhana ||15
- 02) RIGHT TO PRIVACY IS AS AN INTRINSIC PART OF LIFE: DEVELOP CASE BY CASE ...
Adv. Chandani Vishwasrao Ghogare, Osmanabad ||18
- 03) Angela Carter and feminist Ideology
Prof. Ajay Abhyankar, Kurha ||25
- 04) Voice of the Chicanos in Literature: Chicano as Other Subaltern
Asst. Prof. A. M. Shekh, Mangrulpir ||28
- 05) Knowledge Management in Academic Libraries
Dr. Dattatray R. Dhumale, Dist .Buldhana ||30
- 06) Significant Role Of Kabaddi In Sports Culture
Dr. Anil A. Deshmukh, Amravati ||33
- 07) The Impact of Culture in Teaching and Learning of English as a ...
Dr. B. S. Kavhar, Shendurjana Adhao ||35
- 08) Importance of Drama in Education: A Study
Dr.Chandrashekhhar Kanase, Beed ||39
- 09) Hindu-Muslim Mysticism In Medieval India In A Common Ground For ...
Dr. Ms. Mubaraque Quraishi, Tumsar ||45
- 10) Changing Dimensions of Intellectual Property Rights (IPR)
Dr. Pramod Pandharinath Waghmare, Beed ||49
- 11) An overview of Intellectual Property Rights (IPR)
Dr. Rajesh M. Deshmukh, Amravati ||53
- 12) Nutritional Needs for Competitive Swimmers
Dr. Kamini Mamarde, Buldana ||55
- 13) Growth and Development of Physical Education in India since Independence
Dr. Manoj Vyavhare, Buldana ||60

Angela Carter and feminist Ideology

Prof. Ajay Abhyankar
Head, Dept. of English,
Arts & Science College Kurha

The present paper reflects Angela Carter's feminist ideology and the subaltern voice in literature. Carter in her work talked about the inferior role imposed on women by the society, especially by British society. In the mid-twentieth century in Britain at the end of the British Empire the imperialist ideas of superiority of British patriarchy exerted a strong influence over the society. It provides the basis for Angela Carter, a British novelist with a weapon to attack accepted gender superiority. Writers who were in conditions of oppression have also adopted magical realism as a means to write against dominant British Culture. It is this feature that has led many writers to adopt as a means of expressing their ideas. No other writer attacks the authority of the male British ruling classes and their dominant culture more skillfully than the feminist Angela Carter, by using magical realism as her story weapon to attack.

When I study the novels of Angela Carter, I come across her subaltern voice with the help of the device like Magical Realism. It is one of today's most popular subjects in literature, painting, film and new media to present the suppressed views. Angela Carter used this term in many of her novels. She has used the term to expose the British Culture, especially British patriarchal tradition which discards the identity of women. It was difficult for any woman writer to write against the established culture of the

society especially the culture of British society. There are many woman writers in the world that used symbolism or imagery to write against the evil that was present in the society. Carter has the same problem that she could not attack the British society directly so she has used magical realist technique to present the reality of British culture. It is therefore Carter used the magical occurrences to attack the evil that was present in the British society. In her works we come across a beautiful mingling of Magic Realism, fantasy, science fiction, Surrealism, Gothic tradition and other post modernist traits. Many author called her as chief exponent of Magical Realism. The term is also used by writers from Latin America, England, India and many other postcolonial countries.

The concept of magical realism is mostly seen in the works of Angela Carter (1940–1992) who is an English novelist and journalist, known for her feminist, magical realism, and picaresque works. It is with the publication of her first novel, Carter received recognition as magical realist in Great Britain for combination of gothic and surreal elements with the portrayals of urban sufferers and survivors especially of London. In all the work composed by Carter, we see the use of magical realist technique. The supernatural element used in her work is a mixture of fear and disbelief. I come across such supernatural presentation in her works. The supernatural is widely accepted as surprising and extraordinary but authentic and true in the works of Carter as same instructed by literary thought:

The supernatural is not a simple or obvious matter, but it is an ordinary matter, an everyday occurrence — admitted, accepted, and integrated into the rationality and materiality of literary realism. Magic is no longer quixotic madness, but normative and normalizing. It is a simple matter of the most complicated sort. (Zamora & Faris: 3)

The plentitude is one of the

characteristics of magical realism is used by Carter to show magical realist effect. In attaining the magical realistic effect of plenitude, the method of explanation used by her is more important than the object she has explained. The extraordinary plenitude of details and portrayals results in an atmosphere of marvelous real. Carter presents quite ordinary things that seem stranger or characters that become larger than life, or making the whole narrative grotesque and magical. This specific, baroque atmosphere is characteristic of magical realistic literature. The baroque imagination as the mindset of an intellectual in the postcolonial world, grappling creatively with multiple cultural inheritances and attempting to fashion a literary oeuvre that will redefine the individual's relationship to the center and to the island culture from which he comes. (C. Carmen, 2012, 1)

Carter followed the concept of baroque atmosphere to claim her identity and to present culture that suppressed the women. The baroque atmosphere is utilized by Carter to show the cultural and social reality of Great Britain. In her magical realism, she makes use of multiple planes of reality. This hybridity results full of opposites like urban and rural, Western and indigenous.

In addition, Carter's work presents political and social messages despite the fantastical characters and supernatural events. Her novels indirectly present about the historical development of the suffragist movement in the nineteenth and twentieth centuries, and deal with the social issues of patriarchy and individual rights.

The woman suffrage movement actually began in 1848, when a women's rights convention was held in Seneca Falls, New York. The Seneca Falls meeting was not the first in support of women's rights, but suffragists later viewed it as the meeting that launched the suffrage movement. For the next 50 years, woman suffrage supporters worked to educate

the public about the validity of woman suffrage. Under the leadership of Susan B. Anthony, Elizabeth Cady Stanton, and other women's rights pioneers, suffragists circulated petitions and lobbied Congress to pass a constitutional amendment to enfranchise women. At the turn of the century, women reformers in the club movement and in the settlement house movement wanted to pass reform legislation. However, many politicians were unwilling to listen to a disenfranchised group. Thus, over time women began to realize that in order to achieve reform, they needed to win the right to vote. For these reasons, at the turn of the century, the woman suffrage movement became a mass movement.

Carter thought that the rights of women are suppressed by the culture and society and thus she has followed the theme of suffragist movement in her work and attack the British culture. The women in Carter's works represent the suffragists and the entire women's suffrage movement of the nineteenth and twentieth centuries. All her female characters represent the New Woman, a feminist ideal of a woman who revolt against the restrictions of the male dominated society with her completely new way of thinking. However, Carter's women are portrayed as strong, independent thinkers that can overcome their restrictive gender roles are more connected to post-feminist thought. In post-feminism women are no longer seen as victims and traditional feminism is no longer applicable in the contemporary society. Many women characters challenge the conventional social and gender roles and thus follow individualism. The women do not follow conventional nineteenth century social and gender roles. Her women support the concept of individualism when they remain independent and describe marriage as a socially acceptable form of slavery.

It is with authorial silence another characteristic of magical realism the author

presents the mysterious elements in the work. In it author intentionally refuses to give the information and explanations in order to make the mysterious even more troubling, and stops the author from supporting realism over the supernatural, or vice versa. Carter presents two levels of reality, the natural and the supernatural in her works to form magical realism. Authorial reticence integrates the supernatural into the natural framework of magical realism, where the author presents a world-view that is completely different from the reader's world. She has used fantasy elements to present the reality of society.

In this way, Carter used many characteristic features of the magical realistic literature to show the reality of British Culture. She has used these features to talk against the role of patriarchy under which the women suppressed a lot. Her main concern is to give the equal rights to the woman of British society. In all her novels she has attacked the British culture and gave expression to her thought of subaltern women. It treats the supernatural elements as the absolute part of the presented world and contains plenitude of details that create real atmosphere. It used dramatically different settings and planes of reality which result in hybridity. Carter balances both the magic and realism, and never transgresses from the magical real into the realm of fantasy literature or fairytale. While using authorial silence, the sincerity of the world and the accuracy of the events are never clearly defined and through this technique, no interpretation, neither realistic nor symbolic, is imposed on the readers. The readers are always free to draw their own meaning of the novel. Political critique, another important element used in magical realism. Political analysis is used to present individualism, personal freedom, patriarchy, equality and feminist and post-feminist movements. All the above mentioned features undoubtedly classify Angela Carter's

work as a magical realistic work that attacks the British culture and expressed the subaltern role of women in the society.

References:

1. http://en.wikipedia.org/wiki/Angela_Carter.
2. Rubenstein R. (1993), *Intersexions: Gender Metamorphosis in Angela Carter's The Passion of New Eve*
3. CHIAPPETTA, CARMEN (Ph.D., English) *The Baroque Imagination of Alejo Carpentier*, (May 2012)
4. Tucker, Lindsay (1998). *Critical Essays on Angela Carter*, G. K. Hall & Co, New York.
5. Zamora and Faris, (ed.) (1995). *Magical Realism: Theory, History, Community*, Durham & London, Duke University Press
6. Carter, Angela (1992) *Wise Children*, London: Vintage.
7. Carter, Angela (1984) *Nights at the Circus*, London: Vintage.
8. <<http://www.writing-world.com/sf/realism.shtml>>.



Impact
Factor
6.293

ISSN 2349-638x

Peer Reviewed And Indexed

**AAYUSHI
INTERNATIONAL
INTERDISCIPLINARY
RESEARCH JOURNAL
(AIIRJ)**

Monthly e-Journal

VOL-VII

ISSUE-I

Jan

2020

Address


• Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
• Tq. Latur, Dis. Latur 413512 (MS.)
• (+91) 9922455749, (+91) 8999250451

Email

• aiirjpramod@gmail.com
• aayushijournal@gmail.com

Website

• www.aiirjournal.com


CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE



Sr.No.	Author Name	Research Paper / Article Name	Page No.
1	Newton Ochieng Mitoko	Adoption Laws as a Means of Social Control	1 To 3
2	Dr. Balasaheb Ladgaonkar	Problems In Translating For One-Act Play: A Study Of Dramabased On Anton Chekov's Short Story	4 To 6
3	Dr.Sinku Kumar Singh	Student's Coping Strategy: Comparison Within Undergraduate Male Health Professional Students	7 To 12
4	Isha Preet	Ethics In Banking Industry : A Comparative Study Of Selected Public & Private Sector Commercial Banks Of India	13 To 19
5	Ms. Meena Sharma & Dr. Vijay Kumar Ari	Financial Inclusion : A Review	20 To 24
6	Dr. Kailash Shivharrao Palne	Yoga on Mental Health: A Study	25 To 27
7	Dr. Umesh Rathi	Various Skills And Health Benefits Of Basketball	28 To 30
8	Dr.Vandana Singh	Intrinsic And Extrinsic Risk Factors Of Injuries In Football	31 To 33
9	Dr.Vinod S. Koravi	Role Of Yoga And Meditation In Students Life	34 To 36
10	Dr. Anil S. Vaidya	Different Techniques And Benefits Of Football	37 To 39
11	Anita Kumari	ICT In Teaching, Learning & Assessment: Need Of The Hour	40 To 42
12	Dr. S. M. Khadse	Technological Advancement And Their Impact On Cricket	43 To 44
13	Dr.Manisha M. Tyagi & Dr. Rajeev I. Jha	Extension Activity on Women Empowerment: A Best Practice	45 To 48
14	Dr. S. G. More	Leadership And Women Education	49 To 50
15	Dr. Mrs. Apama Choudhary	Use of Formal Sources Information by the Engineering College Students to Meet their Information Needs	51 To 53
16	Dr. Dasharath R. Alabal & Dr. Appayya V. Melavanki	Legal and Fundamental Rights of Physically Handicapped	54 To 57
17	Dr. Sudhakar S. Thool	Evaluation of Web Pages of Selective Information Literacy Portal	58 To 59



Various Skills And Health Benefits Of Basketball

Prof. Dr. Umesh Rathi

Arts And Science College Kura,
Dist. Amravati (M.S.)

Abstract

Basketball is a team sport. Two teams of five players each try to score by shooting a ball through a hoop elevated 10 feet above the ground. The game is played on a rectangular floor called the court, and there is a hoop at each end. The ball is moved down the court toward the basket by passing or dribbling.

Introduction

Basketball is a team sport in which two teams, most commonly of five players each, opposing one another on a rectangular court, compete with the primary objective of shooting a basketball (approximately 9.4 inches (24 cm) in diameter) through the defender's hoop (a basket 18 inches (46 cm) in diameter mounted 10 feet (3.048 m) high to a backboard at each end of the court) while preventing the opposing team from shooting through their own hoop. A field goal is worth two points, unless made from behind the three-point line, when it is worth three. After a foul, timed play stops and the player fouled or designated to shoot a technical foul is given one or more one-point free throws.

Origin of Basketball

The history of basketball began with its invention in 1891 in Springfield, Massachusetts by Canadian physical education instructor James Naismith as a less injury-prone sport than football. Naismith was a 31-year old graduate student when he created the indoor sport to keep athletes indoors during the winters.

The game of basketball as it is known today was created by Dr. James Naismith in December 1891 in Springfield, Massachusetts, to condition young athletes during cold months. Naismith was a physical education instructor at YMCA International Training School in Springfield, Massachusetts. Upon the request of his boss, Naismith was tasked to create an indoor sports game to help athletes keep in shape in cold weather.[2] It consisted of peach baskets and a soccer style ball. He published 13 rules for the new game. He divided his class of eighteen into two teams of nine players each and set about to teach them the basics of his new game. The objective of the game was to throw the basketball into the fruit baskets nailed to the lower railing of the gym balcony. Every time a point was scored, the game was halted so the janitor could bring out a ladder and retrieve the ball. After a while, the bottoms of the

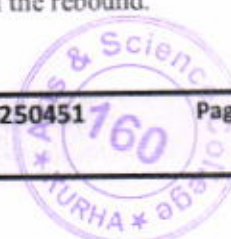
fruit baskets were removed. The first public basketball game was played in Springfield, Massachusetts, on March 11, 1892.

Methodology of Basketball sport

Basketball is a team sport. Two teams of five players each try to score by shooting a ball through a hoop elevated 10 feet above the ground. The game is played on a rectangular floor called the court, and there is a hoop at each end. The court is divided into two main sections by the mid-court line. If the offensive team puts the ball into play behind the mid-court line, it has ten seconds to get the ball over the mid-court line. If it doesn't, then the defense gets the ball. Once the offensive team gets the ball over the mid-court line, it can no longer have possession of the ball in the area in back of the line. If it does, the defense is awarded the ball.

The ball is moved down the court toward the basket by passing or dribbling. The team with the ball is called the offense. The team without the ball is called the defense. They try to steal the ball, contest shots, steal and deflect passes, and garner rebounds.

When a team makes a basket, they score two points and the ball goes to the other team. If a basket, or field goal, is made outside of the three-point arc, then that basket is worth three points. A free throw is worth one point. Free throws are awarded to a team according to some formats involving the number of fouls committed in a half and/or the type of foul committed. Fouling a shooter always results in two or three free throws being awarded the shooter, depending upon where he was when he shot. If he was beyond the three-point line, then he gets three shots. Other types of fouls do not result in free throws being awarded until a certain number have accumulated during a half. Once that number is reached, then the player who was fouled is awarded a '1-and-1' opportunity. If he makes his first free throw, he gets to attempt a second. If he misses the first shot, the ball is live on the rebound.



Each game is divided into sections. All levels have two halves. In college, each half is twenty minutes long. In high school and below, the halves are divided into eight (and sometimes, six) minute quarters. In the pros, quarters are twelve minutes long. There is a gap of several minutes between halves. Gaps between quarters are relatively short. If the score is tied at the end of regulation, then overtime periods of various lengths are played until a winner emerges.

Each team is assigned a basket or goal to defend. This means that the other basket is their scoring basket. At halftime, the teams switch goals. The game begins with one player from either team at center court. A referee will toss the ball up between the two. The player that gets his hands on the ball will tip it to a teammate. This is called a tip-off. In addition to stealing the ball from an opposing player, there are other ways for a team to get the ball.

Skills for development of Basketball

If a player really wants to improve at the game of basketball here is some advice for maximum development. Improvement should involve several key areas.

First, focus on hard skill development. Hard skills are acquired through intentional focus and repetition such as shooting, ball handling and offensive skills. A serious player may work on these about 2-5 hours per day depending on ability, age and specific goals. Hard skill improvement is linked to investment of time. Too often players are so focused on "advanced" skills, and they haven't yet mastered the critical fundamentals to build from.

The second focus should be on soft skill development, specifically understanding the game and learning the nuances to react. This is best accomplished in a very competitive and intensive setting which allows for many opportunities to get the ball. Find a good gym or a group of competitive players and play lots of one-on-one and three-on-three - anything that provides more touches with the ball isolates hard skill work. Five-on-five is one of the slowest ways to build skills because of the simple mathematical reality that players get less time with the ball. Also, traveling to games can be time wasted. Third, develop a specific physical training plan such as building strength, quickness and vertical jump. Meet with a trainer to evaluate strengths and weaknesses. Work to build an intensive workout which emphasizes growth in these areas.

Fourth, develop a mental plan working on confidence, personal faith, and mental toughness. This is a crucial separator between good and great athletes.

Finally, find a mentor who can help with planning and provide accountability to goals. The reason why camp is such a great training place is because players get saturated in both hard and soft skill training, they get an improvement plan in place and they can make the important needed changes.

Benefits of playing Basketball

1. Promotes Cardiovascular Health

Basketball is great for your heart health! Because you keep moving, your heart rate increases. It also helps in building endurance, which is important when you want to make sure that your heart is healthy. It will help lower the risk of stroke and heart disease later in your life.

2. Burns Calories

Do you want to shed a few extra kilos? Play basketball! All the quick lateral movements, running and jumping, gives you an aerobic workout that in turn can help you burn a lot of calories. For every hour of basketball, a person who weighs 165 pounds can expect to burn about 600 calories while a person who weighs 250 pounds can expect to burn approximately 900 calories.

3. Builds Bone Strength

The physical demands of this awesome sport help in improving and building bone strength. Any physical activity that involves weight-bearing allows the formation of new bone tissue, and this in turn makes the bones stronger. Both the muscles and bones in your body become stronger with basketball as it is a physical activity that involves the tugging and pushing of muscles against bone.

4. Boosts the Immune System

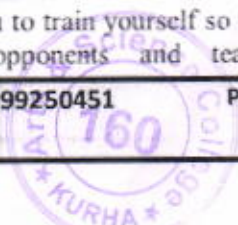
When you play basketball or any other sport, it helps in reducing stress. When stress is decreased, you will have more energy and focus to complete tasks. It also makes you more social, which in turn helps in preventing depression. When stress is lowered, your immune system gets a boost as well.

5. Provides Strength Training

By playing basketball, you get an excellent full-body workout. This helps in the development of lean muscle. It can help develop your lower back, neck, deltoids, traps and core muscles. It also makes your legs stronger, and the movements like shooting and dribbling help strengthen your arms, hand muscles and wrist flexors.

6. Boosts Mental Development

Basketball may be a fast-paced game that requires a lot of physical skills, but it is also a mind game that requires you to think on your toes. It requires you to have a lot of focus so that you can accurately and quickly process the action on the court and make decisions that are effective with the ball. It also requires you to train yourself so that you can observe your opponents and teammates



constantly and make quick decisions based on their actions.

Conclusion

Basketball is a much-loved sport all across the world. It is popular because it can be played as a competitive sport or a casual game on the local court. It is also a great way to work out as it involves using your entire body. It is a fast-paced game that involves a good deal of jumping and running which is a fantastic way to exercise. If you want a sport that helps you stay fit and healthy, basketball is the perfect choice as it comes with more than a few health benefits.

References

1. Griffiths, Sian (September 20, 2010). "The Canadian who invented basketball". BBC News. Retrieved September 14, 2011.
2. "The Surge of the NBA's International Viewership and Popularity". Forbes.com. June 14, 2012. Retrieved June 14, 2012.
3. "REVEALED: The world's best paid teams, Man City close in on Barca and Real Madrid". SportingIntelligence.com. May 1, 2012. Retrieved June 11, 2012.
4. "The Greatest Canadian Invention". CBC News. Archived from the original on December 3, 2010.
5. "YMCA International - World Alliance of YMCAs: Basketball : a YMCA Invention". www.ymca.int. Archived from the original on March 14, 2016. Retrieved March 22, 2016.
6. "Leather Head Naismith Style Lace Up Basketball (The New York Times. Retrieved August 28, 2016)
7. Jeep (July 16, 2012). "Passion Drives Creation - Jeep® & USA Basketball" – via YouTube.
8. Inflatable ball, Inventor: Frank Dieterle, Patent: US 1660378 A (1928) The description in this patent explains problems caused by lacing on the cover of basketballs.
9. Naismith, James (1941). Basketball : its origin and development. New York: Association Press.
10. "James Naismith Biography". February 14, 2007. Archived from the original on February 5, 2007. Retrieved February 14, 2007.
11. Thinkquest, Basketball. Retrieved January 20, 2009.
12. "Error 404 - Olympic.org". June 26, 2010. Archived from the original on June 26, 2010.

Aayushi

ISSN 2349-638x

www.aiirjournal.com



Principal
Arts & Sci. College
Kurha



2019-20

Impact Factor – 7.765

ISSN-2278-9308



B.Aadhar

Multidisciplinary International Research Journal

PEER REFEREED & INDEXED JOURNAL

January -2020

SPECIAL ISSUE - CCIV

Role of Civil Service and Hospitality Education in Employability

Chief Editor

Prof. Virag S. Gawande

Director

Aadhar Social

Research & Development

Training Institute Amravati

Editor:

Dr. Anil B. Bhagat

Ramkrushna Mahavidyalaya Darapur

Dist. Amravati.

The Journal is indexed in:

Scientific Journal Impact Factor (SJIF)

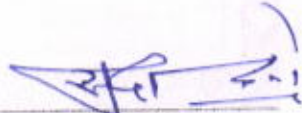
Cosmos Impact Factor (CIF)

Global Impact Factor (GIF)

Universal Impact Factor (UIF)

International Impact Factor Services (IIFS)




Principal
Arts & Science College
Kurha

B.Aadhar' International Multidisciplinary Research Journal



Impact Factor - (SJIF) -7.765,
Special Issue

ISSN :
2278-9308
January
2020

Impact Factor – 7.765

ISSN – 2278-9308

B.Aadhar

Multidisciplinary International Research Journal

Peer-Reviewed Indexed

January - 2020

SPECIAL ISSUE - CCIV

***Role of Civil Service and Hospitality
Education in Employability***

Chief Editor :

Dr. Virag.S.Gawande

Editor :

Dr. Anil B. Bhagat

Ramkrushna Mahavidyalaya Darapur
Dist. Amravati.



Aadhar INTERNATIONAL PUBLICATIONS

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

© All rights reserved with the authors & publisher

Price : Rs. 225/-



Editorial Board

Chief Editor -

Prof. Virag S. Gawande,

Director,

Aadhar Social Research &

Development Training Institute, Amravati. [M.S.] INDIA

Executive-Editors -

❖ Dr. Dinesh W. Nichit - Principal, Sant Gadge Maharaj Art's Comm, Sci Collage,
Walgaoon, Dist. Amravati.

❖ Dr. Sanjay J. Kothari - Head, Deptt. of Economics, G.S. Tompe Arts Comm, Sci Collage
Chandur Bazar Dist. Amravati

Advisory Board -

❖ Dr. Dhnyaneshwar Yawale - Principal, Sarswati Kala Mahavidyalaya, Dahihanda, Tq-Akola.

❖ Prof. Dr. Shabab Rizvi, Pillai's College of Arts, Comm. & Sci., New Panvel, Navi Mumbai

❖ Dr. Udaysinh R. Manepatil, Smt. A. R. Patil Kanya Mahavidyalaya, Ichalkaranji,

❖ Dr. Sou. Parvati Bhagwan Patil, Principal, C.S. Shindure College Hupri, Dist Kolhapur

❖ Dr. Jiro Akita - Professor Of Economics Tohoku University, Japan

❖ Dr. Usha Sinha, Principal, G.D.M. Mahavidyalay, Patna Magadh University, Bodhgay Bihar

Review Committee -

❖ Dr. D. R. Panzade, Assistant Pro., Yeshwantrao Chavan College, Sillod, Dist. Aurangabad (MS)

❖ Dr. Suhas R. Patil, Principal, government College Of Education, Bhandara, Maharashtra

❖ Dr. Kundan Ajabrao Alone, Ramkrushna Mahavidyalaya, Darapur Tal-Daryapur, Dist-Amravati.

❖ DR. Gajanan P. Wader, Principal, Pillai College of Arts, Commerce & Science, Panvel

❖ Dr. Bhagyashree A. Deshpande, Asstt. Professor Dr. P. D. College of Law, Amravati

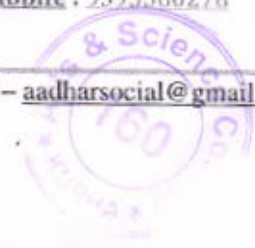
Our Editors have reviewed paper with experts' committee, and they have checked the papers on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responsible for originality of the papers and intensive thoughts in the papers.

- Executive Editor

Published by -

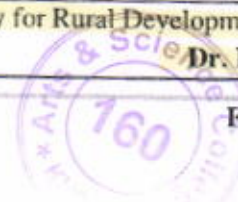
❖ Prof. Virag Gawande Aadhar Publication Amravati 444604

Email : aadharpublication@gmail.com Website : www.aadharsocial.com Mobile : 9595560278





46	मानसिक गुणवैशिष्ट्यांचा विकास व स्पर्धापरीक्षेतील यश	प्रा. अरूणा व तसरे	158
47	ग्रामोन्नती : राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज	प्रा. अनुराधा रा. मुळे	162
48	यवतमाळ जिल्हातील बँक प्रणालीचा व नाबार्डच्या विविध योजनांचा महिला बचत गटांच्या कार्यावर होणारे प्रभाव एक अध्ययन	अनिता नामदेवराव गुगुलकर	165
49	यवतमाळ जिल्ह्यातील पंचायतराज व्यवस्था व स्थानिक स्वराज्य संस्थामधील पदाधिकाऱ्यांचे समाजशास्त्रीय अध्ययन	डॉ. राधेशाम चौधरी	168
50	मानवी संसाधन : ब्यूटीपार्लर शिवणकाम,हॉटेल आणि कॅटरिंग मधील	बागणूक/आदरातिथ्य प्रा.कु.छाया पांडूरंग ढाकुलकर	173
51	संत गाडगे बाबांचे किर्तन आणि जणजागृती.	सिध्दार्थ ए. चंदनखेडे	176
52	प्रशासकीय सेवेची प्रशासनातील भुमीका	प्रा.डॉ. बाळकृष्ण पुं. अढाऊ	180
53	ग्रामीण विकास	प्रा. नेहा इंगळे	185
54	आदरगतीच्याचे ग्रामीण विकासातील स्थान	कु. कांचन रमेशराव ठाकरे	188
55	Performance of multi-paired bullock and tractor drawn m.b. Plough.	S. B. Bakal / P. J. Nikam	190
56	Recent development and challenges in Civil services ethics.	Prof. S.K. Tantrapale	195
57	Human Resource Management In Hotel And Catering Industry	Ms. Trupti Patole, /Ms.Vibhuti Mehra,	200
58	Impacts of Demonetisation on Indian Economy	Prof. Pritesh B. Patil	204
59	Human Resource Management In The Hospitality Industry	Ms. NupurAgrawal/ Mrs. DewalraniRewatkar	207
60	Consumer Expectation Of Services And Emerging Challenges In Hotel Industry	Jitendra Deshmukh	213
61	The Utility of Social Sciences for Preparation of Competitive examinations	Dr.Nilima Dawane	217
62	Significance of Public Administration	Dr. Waman Gulabrao Jawanjil	221
63	Role English Language Proficiency in Hospitality Industry	Dr. Shitalbabu A. Tayade	224
64	Service Management in Hospitality Industry	Dr. Rajesh M. Deshmukh	227
65	Maternal Nutrition & Dietary Awareness in Rural Area of Yavatmal District	Dr. Manjusha M Jagtap	229
66	Challenges to the fore of Hospitality Industry: A Concise Study	Prof (Dr.) Lata B. Hiwase	232
67	Hospitality Education In Employability for Rural Development	Dr. Kirti J. Gandhi	235





Hospitality Education In Employability for Rural Development

Dr. Kirti J. Gandhi

Arts & Science College, Kurha Tq. Teosa Dist. Amravati.

Introduction:

Rural development is necessary not only for an over-whelming majority of the population living in villages but the development of rural activities is essential to accelerate the pace of overall economic development of the Country. Rural development has assumed greater importance in India today than in the earlier period in the process of the development of the country. It is a strategy package socking to achieve enhanced rural production and productivity, greater socio-economic equity, and aspiration, balance in social an economic development. The primary task is to mitigate the hunger of about 70% of the rural population, providing adequate and nutritious food. Then follow an adequate provision of clothing and footwear, a clean house in a clean environment, medical care, recreational facility, education, transport and communication.

Most of the labour force in India depends on agriculture, not because it is remunerative but because there are no alternative employment opportunities. This is a major cause for the backwardness of Indian agriculture. A part of the labour force now engaged in agriculture needs to be shifted to non-agricultural occupations. Today, Inclusive Rural Development is more specific concept than the concept of rural development of earlier, in broader terms; inclusive rural development is about improving the quality of life of all rural people, more specifically inclusive rural development.

Covers three different but interrelated dimensions, Economic dimension, social dimension and political dimension. Economic dimension encompasses providing both capacity and opportunities for the poor and low-income households in particular, benefit from the economic growth. Social dimension supports social development of poor and low-income households, promotes gender equality and women's empowerment and provides social safety nets for vulnerable groups. Political dimension improves the opportunities for the poor and low income people in rural areas to effectively and equally participate the political processes at the village level.

Need and Importance:

Need and importance of rular development rular development is a national necessity and has considerable importance in India because of the following reasons.

- 1) To develop rular area as whole in terms of culture, society, economy, technology and healthy.
- 2) To develop living standard of rular mass.
- 3) To develop rular youths, children and Women.
- 4) To develop and empower human resource of rular area in terms of their psychology, skill, knowledge, attitude and other.
- 5) To develop infrastructure facility of rural area.
- 6) To provide minimum facility to rural mass in terms of drinking water, education, transport, electricity and communication.
- 7) To develop rural institution like Panchyat Cooperatives, post, banking and credit.
- 8) To provide financial assist to develop the artisans in the rural areas, formers and agrarian unskilled labor, small and big rural entrepreneurs to improve their economy.
- 9) To develop rural industries through the development to handcarts, small scaled industries, village industries, rural crafts, cottage industries and other neated economic operations in the rural sector.
- 10) To develop agriculture, animal husbandry and other agricultural related areas.





- 11) To restore uncultivated land, provide irrigation facilities and motivate farmers to adopt improved seed, fertilizers, package of practices of crop cultivation and soil conservation methods.
- 12) To develop entertainment and recreational facility for rural mass.
- 13) To develop leadership quality of rural area.
- 14) To improve rural marketing facility.
- 15) To minimize gap between the urban and rural.

Objective of the Rural Development:

- 1) To improve productivity and there by the income of the rural poor;
- 2) To ensure enlarged employment opportunities at a faster pace;
- 3) To ensure on appreciable rise in the standard of living of the poorest sections of the population;
- 4) To provide some of the basic needs of the people clean drinking water, elementary education, health care, rural roads etc;
- 5) Improve the standard of living.
- 6) Suitable medical facilities for learning.
- 7) Appropriate Scio-cultural activities to enrich oneself;
- 8) Proper house to live in;
- 9) Removal of unemployment;
- 10) Improve the standard of living;
- 11) Satisfactory educational facilities for learning.

Strategies:

- Rural development strategies in India.
- Provide MSP (Minimum Support) for various crops to the farmers, apart from providing crop insurance.
- Irrigation facilities to all the agricultural fields should be provided.
- Provide life insurance to all the farmers who are actually performing agriculture.
- Instead of giving direct cash into the hands of farmers, Government has to provide free of cost all required inputs like, quality seeds, fertilizers and pesticides etc.
- For purchasing tractors, electric, molar water pumps etc on subsidy, good for the economy as it gives wrong signals to those farmers who repay their agricultural loan promptly.

Schemes for Rural Development launched by Government of India.

For uplifting the rural sector of our country, the Ministry of rural development and the Government of India in coordination with department of land Resources have been carrying forward various schemes. These schemes are formulated to benefit the citizens of rural India who will eventually become the pillars of Indian Economy in the long run.

Some important schemes for rural development launched by Government of India are:

1) Pradhan Mantri Gram Sadak Yojana:-

Launched on 25 December 2000 by their Prime Minister Atal Bihari Vajpayee, the scheme aims at enhancing rural road connectivity. This scheme provides connectivity to the habitations with less or no connectivity at all and helps in poverty reduction by promoting access to economic and social services. This ensures sustainable poverty reduction in the long run as people get an opportunity to get connected with the rest of the world. The scheme has been benefiting several villages and is helping them lead better lives nearly 82% of roads have been built till December 2017 which have successfully connected several rural areas to cities. Remaining 47,000 habitations will also get connected by all weather roads by March 2019. Earlier, the scheme was funded only by the central





government but after the recommendation of 14th finance commission report the expense is shared by both state and central government.

2) Dindayal Upadhyay Gramin Kaushalya Yojana:-

A part of National livelihood mission, has the objectives of catering to the career aspirations of the rural youth and adding diversity to the income of rural families. Launched on 25th September 2014, the schemes prime focus is on the rural youth of poor families aged between 15 and 35. An amount of Rs. 1500 crores has been provided for the scheme which will help in enhancing employability. The Yojana is present in 21 states and Union territories across 568 districts and 6215 blocks changing the lives of youth. Around 690 projects are being implemented by 300 partners. As per the government reports over 2.7 lakh candidates have been trained till now and nearly 1.34 lakh candidates have been placed in jobs.

3) Swarnjayanti Gram swarozgar Yojana (SGSY/ National Rural Livelihood Missions:

Swarnjayanti gram swarozgar yojana which is redesigned as National Rural livelihood Mission was launched in 2011. Also known as Ajeevika, this scheme aims of empowering women self-help model across the country. Under this scheme, the government provides a loan of 3 lakh rupees at an interest rate of 7 % which can be reduced to 4 % at the time of repayment. The scheme was aided by World Bank and aimed at creating efficient and also effective institutional platforms for poor people. It also helped in increasing the household income by improving access to financial services. NRLM also helps in harnessing the participate in the growth of the economy of the country.

4) Prime Minister Rural Development Fellows Scheme:-

The prime minister rural development fellowship (PMRDF) is a scheme initiated by the ministry of rural development, implemented in collaboration with state governments, it has dual goals of providing short-term support to the district administration in the under developed and remote areas of the country and develop competent and committed leaders and facilitators who can serve as a resource for a long term.

5) National Rural Employment Guarantee Act (NREGA):-

As per the national rural employment Guarantee act (NREGA) of 2005, 100 days of employment is guaranteed to any rural household adult who is willing to do unskilled manual work in a financial year. The Act addresses the working people and their fundamental right to live life with dignity. If a person does not get a job within 15 days. He is eligible for getting unemployment allowance. National Rural Employment Guarantee Act (NREGA) also highlights the importance of basic right to work. Amendments have been introduced to this act to minimize corruption in the scheme.

6) Sampoorna Gramin Rozgar Yojana (SGRY):-

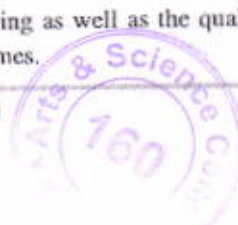
The Sampoorna gramin rozgar Yojana was launched in 2001 to provide employment to the poor. It also aimed at providing food to people in areas who live below the poverty line and improving their nutritional levels. Other objectives of this Yojana were to provide social and economic assets to the people living in rural areas. The scheme did not include the employment of contractors or middlemen.

7) Sarv Siksha Abhiyan:-

Pioneered by former Prime Minister Atal Bihari Bajpayee, the sarv Siksha Abhiyan was launched in 2000. It is an attempt to provide an opportunity to all children between 6 and 14 years of age to get tree education which is also a basic fundamental right. The state and the central government share the expenses of this project.

8) Sansad Adarsh Gram Yojana (SAGY):-

Sansad Adarsh Gram Yojana is a rural development project launched in 2014 by the government of India in which each Member of Parliament will take the responsibility of three villages and look after the personal, human, social, environmental and economic development of the villages. This world substantially improves the standard of living as well as the quality of life in the villages. No funding has been provided through existing schemes.





9) Pradhan Mantri Awas Yojana (Gramin) / Indira Awas Yojana:-

Indira Awas Yojana revamped as PRadhan Mantri Gramin awas Yojana in 2016 is a welfare programme created by the Indian Government to provide housing to rural poor people in India. The goal of this scheme is to provide housing to rural poor people in India. The goal of this Scheme is to provide home to all citizens till 2022. The cost of constructing the houses will be shared by the Centre and the State. The scheme has been implemented in rural areas throughout India, except in Delhi and Chandigarh. Houses developed under this scheme will have basic amenities such as toilet, electricity connection, drinking water connection, LPG connection etc. The allotted houses will be jointly under the name of husband and wife.

10) Antodaya Anna Yojana:-

Aimed at providing food grains to around 2 crore people at subsidized rates. As per the scheme below poverty 35 Kgs of food grains. Rice was provided at the rate of Rs. 3 Kg. and Wheat at the rate of Rs. 2 Kg. The scheme was been implemented in all Indian States.

Suggestions:

1) Government Role:-

Government should take steps to provide infrastructure, wares housing, facilities, offer assistance to marketing and to export the goods of rural entrepreneurs to foreign countries.

2) Ancillary Units:

These are those, which manufacture parts and components to be used by larger industries. Several ancillary units should be established in rural areas which will led to better productivity of many engineering industries.

3) Labour intensive Techniques:

As there I & discussed unemployment in our agriculture sector, labour intensive techniques should be adopted in rural industrial units.

4) Special training programmes:

Special Training Programmes for rural entrepreneurs in particular and in general for rural population should be arranged by the Government to improve their knowledge and vocational skills.

5) Rural Youth need to be motivated - To take up entrepreneurship as a career with training and sustaining support systems providing all necessary assistance.

6) Finance for Modernization:

Sufficient finance must be given to modernize their out dated technology, tools and implements in order to enable them to compete with the large scale industries.

7) Several Schemes and plans of government:-

Should be strongly executed at different levels for the encouragement of rural entrepreneurs.

8) Marketing Management skills should be improved - among the rural entrepreneurs to face the problems of entrepreneurship.

9) Offer finance with low rate of interest:-

Financial institutions like ICICI, SIDBI, IDBI, IFCI and SFC should provide finance to rural entrepreneurs with low rate of interest and limited collateral security with liberal terms and conditions.

10) Educated the Rural Entrepreneurs:

Government and NGOs offered various schemes and opportunity to the rural entrepreneurs. But, they are unaware of these schemes and opportunities due to their illiteracy, so they should to be educated by conducting workshops and seminars related to their business.



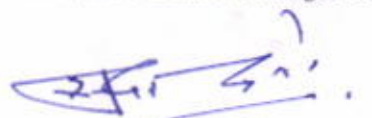


Conclusion:

A part from strengthening the agricultural sector, rural. Entrepreneurs play a vital role in the economic development of India, Particularly in the rural economy. It helps in generating employment opportunity in the rural areas with low capital, raising the real income of the people, contributing to the development of agricultural by reducing disguised unemployment, under employment, unemployment, poverty, migration and economy disparity, government should go for appraisal of various rural development schemes and programmes in order to uplift rural areas. Rural entrepreneurship firmly it difficult to take off is due to lack of capital accumulation, risk taking and innovation. The rural development education, health, service, investment in agricultural and the promotion of rural non-farm activity in which women and rural population can average themselves. Rural development and rural entrepreneurship is the way of converting developing Country into developed nation promotion of rural entrepreneurship is extremely important in the center of producing gainful. Employment and reducing the widening disparity between the rural and urban. Monitoring rural development programs by supplying right information at the right time, providing timely and adequate credit and continuous motivation of banks, panchayat union leaders and voluntary service organizations will lead to the development of rural entrepreneurship and in turn rural development.

References:

- 1) Sing K.N. & sing D.N. (1985); Rural Development in India (Problems, strategies and Approaches), National Geographical Society of India, Banaras Hindu University, Varanasi.
- 2) Gehlawal J. K. and Kant K. (1987) strategies for rural development. Arnold publisher (India) Pvt. Ltd. New Delhi.
- 3) Kothari C. R. (1991) Strategy for Rural Development Vol-1 Manak Publication (P) Ltd. New Delhi.
- 4) Vishwanathan Maithill (1994) women in Agriculture and Rural Development, RUPA books Pvt. Ltd, Tilak Nagar, Jaipur.
- 5) Roy N. Samirendra (1995) communication in rural development (A Policy perspective) Indian Institute of Advanced study, Rashtrapati Nivas, Shimla.
- 6) Datta Prabhat (1996) Rural development through panchayats. The West Bengal experience, Department of Information and cultural affairs, Government of West Bengal, Calcutta.
- 7) Begum Janatun (1997); poverty Alleviation and rural development (A Case study of Manipur valley), Rajesh Publications, New Delhi.
- 8) Jain Gopal Lal (2002); Management of Rural Development and resources (Vol I) Mangal Deep publications, Jaipur.
- 9) Saurath Vivek (2009); Rural Development Major Issues in Agricultural Management, Dominant publishers and distributors, New Delhi.
- 10) Das Purnendu Sekhar (2005); Decentralization planning and participatory Rural development, concept publishing company, New Delhi.
- 11) Report of the All India Rural credit committee. New Delhi, 2003. Narang Ashok (2006); "Indian Rural Problems". Murari Lal and sons, New Delhi. Advantages of rural entrepreneurs. Rural India /article.


Principal
Arts & Science College
Kurha



ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - IX

Issue - I

January - March - 2020

MARATHI PART - III / HINDI / ENGLISH
Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal

Journal No. 40776



ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2019 - 6.399
www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖

Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole
M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖



Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)



Sample copy
Marathi Part - III

❧ CONTENTS OF MARATHI PART - III ❧

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१३	राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराजांचे मौलिक राष्ट्रजागरण डॉ. स्मिता मनोहरराव जाधव	४८-४३
१४	राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराजांचा भजनातील सांगैतिक प्रयोग प्रा. डॉ. सोपान सिताबराव वतारे	५४-५४
१५	राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज यांचा साहित्यविषयक दृष्टिकोण प्रा. दिलीप घोनमोडे	५६-६१
१६	वं. राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराजांच्या समाजप्रबोधनातील भजनप्रभाव प्रा. डॉ. राजीव बोरकर	६२-६५
१७	राष्ट्रसंताची खंजेरी भजने, अमूल्य योगदान प्रा. संतोष मुकिंदा धंदरे	६६-६७
१८	राष्ट्रसंतांचे स्त्री सबलीकरण व महिलोन्नती विषयक विचार डॉ. माधुरी ना. कोकोड	६८-७०
१९	राष्ट्रसंतांचा संगीत विषयक दृष्टिकोन आणि सकारात्मक समाज प्रबोधन वैखरी वझलवार	७१-७४
२०	राष्ट्रसंत तुकडोजींचे महिला सबलीकरण व स्त्री उन्नतीचे विचार डॉ. सिद्धार्थ बुटले	७५-७७
२१	राष्ट्रसंतांची खंजेरी भजनातून समाजजागृती प्रा. डॉ. सुधाकर वि. भुयार	७८-८०



१३. राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराजांचे मौलिक राष्ट्रजागरण

डॉ. स्मिता मनोहरराव जाधव

इतिहास विभाग प्रमुख, कला व विज्ञान महाविद्यालय, कुन्हा, जि. अमरावती.

विसाव्या शतकातील एक महान समाजसुधारक, राष्ट्रोद्धारक असे महान क्रांतीकारी व्यक्तिमत्व म्हणुन राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज यांचे नाव अग्रक्रमाने घ्यावे लागेल. समाजाच्या सर्वांगीण उद्वाराची प्रचंड तळमळ त्यांच्या मनात होती. समाजाची उन्नती साधणे हा साहित्य निकष मानून राष्ट्रसंतांनी अफाट साहित्यनिर्मिती केली. त्या साहित्यात ज्याप्रमाणे समाजहिताचा ध्यास होता. त्याचप्रमाणे प्रगल्भ देशभक्तीही होती. त्यांच्या साहित्यनिर्मितीमागे त्यांचे शीघ्र कवित्व होते. समाजाची व पर्यायाने राष्ट्राची उन्नती साधावयाची असेल तर ग्रामनिर्माण व ग्रामोद्धार व्हावयास हवा तसे झाल्यास गावापासून शहर, शहरापासून राज्य व राज्यापासून देशोन्नती होईल असे ते म्हणत राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज हे बोलके सुधारकच नव्हते तर त्यांच्या प्रत्येक उक्तीला कृतीची जोड होती.

समाजात प्रत्यक्ष कार्य करावयाचे असेल तर समाज प्रत्यक्ष पाहिल्याशिवाय व अनुभवल्याशिवाय गती नाही त्या शिवाय समाजाचे प्रश्न कळणार नाही हे जाणून महाराजांनी भारतभ्रमण केले व समाजातील प्रश्न जाणून घेतले. अनेक स्थळांना भेटी देवून त्यांनी छोट्या मोठ्या गावांचे प्रश्न व समस्यांचे अवलोकन करुन या समस्यांमागील कारणांचा शोध घेवूनच पुढील कार्याची दिशा ठरविली. महाराजांनी केलेल्या अफाट कार्याची मुहूर्तमेढ त्यांच्या भारतभ्रमणातच रोवल्या गेली. त्यांनी आपल्या भजन, भाषण आणि उपदेशाद्वारा मोठ्या प्रमाणात समाजजागृती घडवून आणली व समाजमनाला ढवळून काढले. यातूनच पुढे परकीय सत्तेच्या अत्याचाराविरुद्ध जनमत कार्यप्रवण झाले. आपल्या भक्तीकाव्याला त्यांनी राष्ट्रीयतेचा साज चढवून भारतीयांच्या मनात स्वातंत्र्याची ज्योत प्रज्वलीत केली. आपल्या भजन भाषणाद्वारे त्यांनी भारताच्या पराधीनतेचे दुःख मांडलेत. स्वराज्याचे स्वप्न लोकांच्या मनामनामध्ये त्यांनी चेतविले. पारतंत्र्याचे दुष्परिणाम व त्यामुळे होणारी दुर्दशा पाहून ते तळमळत असे ही तळमळ व्यक्त करतांना ते "अनुभव सागर" भजनावलीत लिहितात,

* गुलामगिरीच्या कर्कश बेडयापायी करी पडल्या

परवशतेच्या भरी भारतभू दुःखी जाहली *

यासाठीच त्यांनी राष्ट्रप्रेम निर्माण करणाऱ्या भजनांचा मार्ग निवडला याबाबत डॉ.भाऊ मांडवकर लिहितात,

"लोकजागृतीसाठी आणि राष्ट्रोत्थानासाठी महाराजांनी भजनांचा असा एक अनोखा ढंग स्वीकारला, नव्हे तर तो निर्माण केला." तर प्रा. भ.श्री.पंडीत म्हणतात, "श्री तुकडोजी महाराजांनी भक्तीकाव्याला राष्ट्रीयतेची डूब दिली." तर ज्ञानेश्वरीवरील प्रबंधात श्री. न.रा.फाटक प्रतिपादन करतात त्यामागे महाराजांनी समाजोद्धारार्थ उपदेश केला व राष्ट्रयितेची सांगडही देशकालमानस अनुसरुन घातली*¹ त्यांनी आपल्या भजन व भाषणाद्वारे

राष्ट्रीय आंदोलनात प्राण फुंकले समाजाच्या उन्नयनाकरिता त्यांनी मौलीक कार्य केले. त्याच्या या राष्ट्रीय व सामाजिक कार्यांचे अध्ययन केल्यानंतर त्यांनी केलेले रचनात्मक कार्य आपल्या डोळ्यासमोर येते.

परदास्याच्या शृंखलेत बंदिस्त झालेल्या भारतभूमीला स्वतंत्र करण्यासाठी भारतीय समाजात आत्मसन्मान, स्वदेशाभिमान निर्माण करण्याचे प्रचंड कार्य त्यांनी केले. त्यासाठी ब्रिटीश सरकारचा रोषही त्यांना सहन करावा लागला. त्यांनी तुरुंगवासाची शिक्षा देण्यात आली. स्वतंत्र भारत कसा उभा राहील याची अहर्निश काळजी या महापुरुषाला होती आणि म्हणूनच विदर्भाच्या या संताला "राष्ट्रसंत" ही उपाधी स्वतंत्र भारताचे पहिले राष्ट्रपती डॉ.राजेन्द्रप्रसाद यांनी दिली. ही उपाधी म्हणजे त्यांच्या मौलीक अशा राष्ट्रकार्याचे प्रतिकच होय. रामदास स्वामी प्रमाणेच त्यांनी भक्तिमार्गाबरोबरच लोकांना देशभक्ती शिकविली आणि स्वातंत्र्याकरिता तयार केले. याबाबत ख्यातनाम साहित्यिक ग.त्र्यं. माडखोलकर लिहितात, "श्री.तुकडोजी महाराजांची भाषणे वाचतांना श्री समर्थ रामदास स्वामींनी स्वराज्य स्थापनेच्या काळात महाराष्ट्रावर ओढवलेल्या परचक्रावेळी लोकांना केलेल्या उपदेशाची मला आठवण झाली. तशाच प्रकारचे राष्ट्रीय कर्तव्य सध्याच्या आणिबाणीच्या परिस्थितीत महाराजांनी व्याख्यानाच्या रूपाने बजावलेले आहे." विदर्भ ही त्यांची जन्मभूमीप्रमाणेच कर्मभूमीही होती. विदर्भातील सर्व वयोगटातील वेगवेगळ्या विचारसरणीच्या लोकांच्या मनातील एकांगीपणा घालवून त्यांनी त्यांना देशकार्यात उडी घेण्यास प्रवृत्त केले. याच विधानाचा पुष्ट्यर्थ सुदाम सावरकर लिहितात,

"महाविदर्भातील सामान्य जनतेला देशभक्तीचं जिवंत शिक्षण मिळाले ते तुकडोजी महाराजांच्या खंजिरीमधूनच 1930 च्या क्रांतीपर्वात रंग भरण्याचं बरचसं कार्य महाविदर्भात तरी महाराजांच्या पूर्णायुष्यात, त्यांनी मोठया कौशल्यानं केलेल्या राष्ट्रभावनेच्या संस्कारदानाने घडवून आणलं असं म्हणनं अतिशयोक्तीच होणार नाही.",

तुकडोजी महाराजांच्या ठिकाणी बालवयापासूनच स्वातंत्र्याची तळमळ व परकीय सत्तेबद्दल अत्यंत चीड होती. 1923 मध्ये म्हणजेच वयाच्या अगदी 14 व्या वर्षी त्यांनी चिमूर येथे बाल माणिक समाजाची स्थापना केली ही त्यांच्या पहिल्या राष्ट्रीय कार्याची द्योतक होती. या समाजाद्वारे त्यांनी प्रभावी लोकजागरण घडवून आणले आपल्या पहाडी आवाजातील एकाहून एक सरस भजनांनी लोकांना मंत्रमुग्ध केले.

भारतीय स्वातंत्र्याच्या चळवळीला, महात्मा गांधींनी शहरात, घराघरात पोहचविले तर ग्रामीण भागापर्यंत विशेषतः विदर्भातील खेड्यांपर्यंत ही चळवळ तुकडोजी महाराजांनी पोहचविली. आपल्या भजन व भाषणांद्वारा त्यांनी प्रखर राष्ट्रवाद आणि ब्रिटीश सत्तेची जुलमी कारकीर्द व तिचा विरोध आणि स्वातंत्र्याच्या चळवळीचे पायाभूत तत्वज्ञान अतिशय परिणामकारक रीतीने मांडले. त्यांची भजन ही भक्तिरसात रंगून देहमान विसण्याचा संतसमागम नव्हता वा त्यात मनोरंजनाचा थाट नव्हता तर ते प्रबोधन युगाचे प्रभावी जनजागरण होते.

लोकांचे प्रबोधन घडवून आणण्यासाठी श्री महाराजांनी 24 फेब्रुवारी ते 4 मार्च 1935 या अकरा दिवसांच्या कालावधी सालबर्डी या ठिकाणी महायज्ञ घडवून आणला. धर्मसंप्रदायामध्ये आकट बुडालेल्या लोकांना महायज्ञाच्या माध्यमातून एकत्रित आणणे ही या यज्ञाच्या आयोजनामागील त्यांची भूमिका होती. धर्म संप्रदाय आणि जातीच्या कचाट्यात सापडलेल्या वरील सर्वांना एकत्रित आणणे हे सोपे काम नव्हते. याबाबत महाराज "लहर की बरखा" मध्ये लिहितात.

"पंडित बातांमे फसे, धनवान धन में है लग ।

सधू खुदीमें मस्त है, धनहीन दरदर में भगो ॥

थकसको सुनाऊ बात मैं, कोऊ न सुनता अर्ज है ।

हे नाथ तुम्ही हूँ शरण, हमको सभी से गर्ज है *॥

अशा प्रकारे या यज्ञाच्या निमित्ताने आलेल्या जनसमुदाय महाराजांच्या कार्याने प्रभावित झाला त्यांच्या शब्दाखातर कोणतेही कार्य करण्यास तयार झाली.

राष्ट्रसंताचे सेवाग्राम आश्रमधील वास्तव्य

महात्मा गांधीच्या निमंत्रणानुसार ते 14 जुलै 1936 रोजी सेवाग्राम आश्रमात आले. त्यावेळी ते 14 जुलै 1936 रोजी सेवाग्राम आश्रमात आले. त्यावेळी ते 14 जुलै ते 23 ऑगस्ट 1936 या कालावधीत सेवाग्राम आश्रमात वास्तव्यास होते. त्यावेळी ते दोघेही एकमेकांच्या व्यक्तिमत्त्वाने प्रभावित झाले. याच वास्तव्यात त्यांची जमनालाल बजाज, पंडित नेहरु, प्रो. भंसाळी, आर्यनायकमजी, राजेन्द्रप्रसाद, महादेवभाई देसाई, आचार्य मधुवाला, कस्तुरबा गांधी, वल्लभभाई पटेल या नेत्यांचा त्यांना सहवास लाभला. या एक महिन्याच्या काळात महाराजांनी, महात्मा गांधीसह आश्रमवासीयांना "अनुभवसागर" आणि "अनुभवप्रकाश" या भजनावलीतील भजने ऐकविली येथेच महाराजांनी "लहर की बरखा" चे अनेक श्लोक लिहिलेले यातील श्लोक गांधीजींना फार आवडायचे याबाबत पंडित शिवनारायण द्विवेदी लिहितात. "राष्ट्रपिता गांधीजीने राष्ट्रसंतजी बरखा के शेर सुने और व झूम उठे, मोहनदास मोहित हुए और उन्होने तुकडयादासजी के सत्संग का एक माहतक लाभ उठाया," 3

सेवाग्राम आश्रमातून स्वातंत्र्याच्या प्रयत्नांच्या हालचाली चालत होत्या, स्वातंत्र्य आंदोलनाच्या मसलती येथे होत. ते सर्व महाराजांनी पाहिले, परतंत्र अवस्थेतील भारताचे विदारक चित्रण करणाऱ्या भजनांबरीबरच राष्ट्रभक्ती चेतविणारी अनेक भजने या काळात महाराजांनी लिहून काढलीत आश्रमात असतांना देशभक्तीने प्रेरित झालेल्या लोकांच्या सहवासाने त्यांचे मन अंतर्बाह्य उजळून निघाले. सेवाग्रामचे त्यांचे वास्तव्य त्यांच्या राष्ट्रभक्तीला प्रेरणा देणारे ठरले. देशभक्ती व स्वातंत्र्य चळवळीचा धगधगता कुंड घेवून महाराज मोझरीला निघाले त्यांनी मोझरी येथे "गुरुदेव सेवा धर्म" ची स्थापना केली मनुष्याच्या अंतरंगाचा विकास झाला शिवाय तो राष्ट्रकल्याणार्थ कार्यप्रवृत्त होणार नाही हे ओळखून त्यांनी सामुदायिक प्रार्थनेच्या माध्यमातून लोकांना संघटीत केले. लोकजागृती, लोकसंग्रह आणि लोकसंघटन करून आपल्या भावी कार्याची दिशा ठरविली आपल्या भजनावलीद्वारे त्यांनी प्राचीन भारताच्या वैभव संपन्नतेचे चित्र रेखाटून आज ती कंगाल का झाली याचे चित्रण लोकासमोर मांडले ते म्हणतात.

"तव मुकुट भक्त - हिरकणे विखुरले कसे ?

तव हृदय : कवच पंडितहि जागी नसे ।

करकमळीची तरवार वीर ना दिसे ।

धैर्यतेज विजयता लोपली, प्रसंग दुर्देवसा ।

सांग हा प्राप्त जाहला कसा ?"

त्यांनी अमरावती जिल्ह्यात गुरुकुंज मोझरी येथे धैर्य शिक्षण वर्ग सुरु केलेत तर वर्धा जिल्ह्यातील विविध ठिकाणी आरती मंडळाची स्थापना करून जनजागृती घडवून आणली. आरती मंडळाच्या कार्याबद्दल प्रा.

रमेश गुप्ता लिहितात, "काँग्रेसच्या कोणताही कार्यक्रम वा प्रचार आरती मंडळाशिवाय होत नसे आणि आरती मंडळाचा कोणताही कार्यक्रम काँग्रेसची मंडळी चुकवित नसे. काँग्रेसचे लोक आरती मंडळात प्रमुख पदावर होते आणि आरती मंडळाचे काँग्रेसमध्ये आघाडीवर होते." 4 थोडक्यात काँग्रेस व आरती मंडळाच्या कार्याची दिशा व ध्येयही एकच होते.

भारत छोडो स्वातंत्र्य आंदोलनात राष्ट्रसंताचे योगदान

7 व 8 ऑगस्ट 1942 ला मुंबई येथे भरलेल्या काँग्रेसच्या अधिवेशनात भारत छोडो चा ऐतिहासिक निर्णय घेण्यात आला. आणि 9 ऑगस्ट 1942 रोजी आंदोलनाला प्रारंभ झाला.

1942 च्या आंदोलनाची पूर्वतयारी त्यांनी सुरुवातीच्या काळातच करून ठेवली होती. आष्टी येथे त्यांनी हजारो स्वयंसेवकांच्या घेतलेला कवायत वर्ग, भांबोरा येथील व्यायाम वर्ग, चिमूर येथील चातुर्मासात हजारो स्वयंसेवकांना दिलेले साधिक तरवारीचे प्रशिक्षण या निश्चितच युवकांना भावी क्रांतीची दिशा देण्यास सहाय्यभूत ठरल्यात ते म्हणत "आम्ही हिंसक नाही, अहिंसेचे पूजारी आहोत. परंतु अन्यायाचा प्रतिकार करण्यास आम्हाला तयार राहणेही अत्यंत महत्वाचे आहे. जो खरोखरच शूरवीर असतो तोच दुसऱ्या शूरवीराशी लढा देवू शकतो." मोझरी येथे 1942 मध्ये व्यायाम मंदिर निर्माण करते वेळी त्यांनी व्यक्त केलेले हे विचार लोकांना क्रांतीप्रवण करणारे ठरलेत "राष्ट्र जागवा, राष्ट्र जागवा, जागृत व्हा तरुणांनो" हा संदेश देण्याकरीता ते मिळेल त्या साधनांनी गावोगावी फिरत आपल्या खड्या आवाजांमध्ये "झूठी गुलामशाही, क्या डर बता रही है," "जाग उठो बलवीरो अब तुम्हारी बारी है । भारत पे वारी जाओ, यह करो तैयारी है अशा प्रकारचे आवाहन ते तरुणांना करीत होते. जुलमी ब्रिटीश सत्तेविरुद्ध लढण्यासाठी लोकांना प्रशिक्षित करण्याच्या उद्देशाने त्यांनी व्यायाम वर्गाद्वारे कार्य केले. याबाबत बेलूरकर दादा लिहितात, "हजारो गावामध्ये लाठी काठी, भाला, तरवार, जांबिया, कुस्ती, मल्लखांब इ. मैदानी व मर्दानी व्यायामाचे वर्ग वेगाने चालू झाले. तरुण मुलं व मुलीसुद्धा व्यायाम कलेत पारंगत होवून निर्मयतेने लढण्यासाठी प्रवृत्त झाली समाज स्वातंत्र्याचे स्वप्न पाहायला पेटून उठला." 5

टांदोलनाने ज्यावेळी वेग धरला. त्यावेळी सरकारने सत्याग्रहींची धरपकड सुरु केली. या आंदोलनाला महाराजांनी आपल्या तेजस्वी व प्रखर राष्ट्रीय वाणीने, राष्ट्रप्रेमाने ओतप्रोत भरलेल्या राष्ट्रीय भजनांनी व राष्ट्रभक्तीचे चैतन्य लोकांच्या मनात निर्माण केले.

"अब काहे को धूम मचाते हो

दुखवाकर भारत सारे

आते है नाथ हमारे

अब तक पाप भरा न पशु तो

करलौ मौज भरारे ।।"

अशा प्रकारे इंग्रजी सत्तेला भजनातून त्यांनी पूढील आंदोलनाचा इशारा दिला.

"झाड झडूले शस्त्र बनेंगे

भक्त बनेंगी सेना

पत्थर सारे बॉम्ब बनेंगे



नाव लगेगी किनारे *

चंद्रपूर जिल्हयातील वरोरा, चिमूर आणि ब्रम्हपूरी, अमरावती जिल्हयातील वरखेड, मोझरी, यावली, बेनोडा, इत्तमगांव, वर्धा जिल्हयासह या जिल्हयातील हिंगणघाट, देवळी, खरांगणा, मोरांगणा, आर्वी, तळेगांव(शा.पं.) आष्टी आणि नागपूर जिल्हयातील विविध गावांमध्ये झंझावती दौरे करून भजनांद्वारे व भाषणाद्वारे राष्ट्रीय जनजागृती करीत त्यांच्या भजनांना व भाषणांना वेळ, काळ नव्हताच समोरील जनसमुदाय पाहूनच त्यांची ओघवती वाणी उद्दीपीत होत असे.

महाराजांच्या भजनांनी चिमूर, आष्टी, तळेगांव, खरांगणा, यावली येथे स्वातंत्र्यसंग्रह झाला. या संग्रहात परिसरातील लोकांची स्वातंत्र्यभावना अधिकच उद्दीपीत झाली. हे पाहून इंग्रज सरकारने महाराजांना अटक केली व रायपूर तुरुंगात टाकले. दि.(29/9/1942) महाराजांच्या या स्वातंत्र्यलढ्याची दखल बी.बी.सी. लंडनने घेतली व वृत्त दिले की "हा कोण दुसरा गांधी आला आहे की, ज्यामुळे क्रांतीला वेग आला आहे." तुरुंगातही त्यांनी 818 वचनांचा गद्य ग्रंथ लिहिला यात ते म्हणतात.

कारागृही सुविचार स्मरता, सुविचार स्मरणे निर्मिली।

मायभूला स्वातंत्र्य देण्या, जेल यात्रा भोगिली ।

कारागृहातूनी मुक्त व्हावे, वर्धा नि चांदा सोडूनी ।

बंधन असूनी मुक्त व्हा, मन ना रुचले झणी ॥"

इंग्रज सरकारने त्यांची तुरुंगातून मुक्तता केली त्यावेळी त्यांचेवर वर्धा आणि चंद्रपूर जिल्हयात जाण्यास बंदी घातली म्हणून महाराज व्यथित झाले पण हीच त्यांच्या भजनाची व कार्याची पावती होय. त्यांनी आपल्या भजन आणि खंजीरीने सरकारला सळो की पळो करून सोडले. त्यांच्या या राष्ट्रीय कार्याने प्रभावित झालेल्या डॉ. राजेन्द्रप्रसाद यांनी त्यांनी "राष्ट्रसंत" ही पदवी बहाल केली.

महाराजांनी ज्याप्रमाणे स्वातंत्र्यपूर्व काळात मौलिक राष्ट्र जागरण घडवून आणले त्याच प्रमाणे त्यांनी स्वातंत्र्योत्तर काळातही आपल्या भजनांनी प्रबोधन केले. मराठी व हिंदी या दोन्ही भाषांमध्ये त्यांनी भजनावली लिहिल्यात. त्यांनी लिहिलेले एकेक भजन भारदस्त आणि राष्ट्रप्रतिभेचा अविष्कार घडवून आणणारे ठरले.

या भारतात बंधु-भाव नित्य वसुं दे ।

दे वरचि-असा दे ॥

हे सर्व पंथ-संप्रदाय एक दिसू दे ।

मतभेद नसू दे ॥

हे भजन म्हणजे त्यांनी मानवाच्या कल्याणाकरीता मागितलेले "पसायदान " होय त्यांची भजने ज्या प्रमाणे लोकांच्या आत्मिक व आध्यात्मिक उन्नतीचा स्तर वाढविणारी ठरली त्याच प्रमाणे मौलिक राष्ट्र जागरण घडवून आणणारी ठरलीत.

"शांती ते क्रांती करो " असा संदेश जनतेला देणाऱ्या महाराजांनी पत्थर सारे बॉम्ब बनेंगे, भक्त बनेंगी सेना " हा अंतीम इशारा सरकारला दिला आणि म्हणून 1942 च्या आंदोलना वेळी लोकांनी जुलमी ब्रिटीश

पोलीसांवर दगडांनी व गोफणीने प्रहार केला. आणि लोकांना क्रांतीप्रवण केले. त्यांचे हे कार्य निश्चीतच अतिशय मौलिक ठरले.

संदर्भ


1. मांडवकर डॉ. भाऊ - राष्ट्रसंत आणि स्वातंत्र्याची चळवळ , 1971 पृ.15
2. सावरकर सुदाम, जीवनयोगी : राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज, चरित्र खंड, 1984 पृ.79
3. सावरकर सुदाम, 1985, जीवनयोगी खंड, 4, पृ. 92
4. गुप्ता रमेश, आष्टीचा स्वातंत्र्य संग्राम : बंडखोर खेड्याची गोष्ट, 2007 पृ. 62
5. बेलूरकर रा.मो. - युग प्रवर्तक राष्ट्रसंत श्री तुकडोजी महाराज, पृ.77

संदर्भ सूची

1. राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज - भजनावली (हिंदी व मराठी), गुरुदेव प्रकाशन
2. राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज - लहर की बरखा, गुरुकुंज आश्रम, गुरुदेव प्रकाशन
3. गुप्ता रमेश (पुनर्मुद्रण) - बंडखोर खेड्यांची गोष्ट, आष्टी, 2007
4. बेलूरकर, रा.मो. - युगप्रवर्तक राष्ट्रसंत श्री तुकडोजी महाराज, 1966, माणिक प्रकाशन
5. मांडवकर डॉ. भाऊ - राष्ट्रसंत तुकडोजी आणि स्वातंत्र्याची चळवळ, अमरावती सेवा प्रकाशन






Principal
Arts & Sci. College
KURHA

ग्राम सक्षमीकरण कार्यात बचत गट व सहकारी संस्थाची भूमिका

डॉ. विभा देशपांडे

कला व विज्ञान महाविद्यालय, कु-हा

भारत हा प्रामुख्याने खेड्यांचा देश असून आज सुद्धा जवळपास ६७ टक्का लोक ग्रामीण भागात राहतात. आपली अर्थव्यवस्था कृषी क्षेत्रावर अवलंबून असून एकूण लोकसंख्ये पैकी ६८ टक्का लोक कृषी क्षेत्रावर अवलंबून आहेत. म्हणजेच शेती हा भारताचा आत्मा आहे. हजारो वर्षांपासून शेती ने भारतात लोकांचे आचार-विचार दृष्टीकोन व संस्कृतीची जडण-घडण केली आहे. शेतीचे परंपरागत उत्पादन तंत्र, पारंपारिक पीक पद्धत, प्रभावी विपणन संस्थेचा अभाव, अपुरा वीज पुरवठा, जलसिंचनाच्या अपूर्ण सोयी इत्यादीमुळे उत्पन्न कमी होते, त्यामुळे ग्रामीण भागाची परिस्थिती बिकट असून ग्रामीण भाग पूर्णपणे विकसित होऊ शकत नाही. आज खेडी स्वावलंबी बनविण्यासाठी नागरिकांमध्ये सहकार्याची भावना वाढीस लागली पाहिजे. त्यासाठी आज केंद्र सरकारच्या ग्रामीण रोजगारच्या विविध योजना अत्यंत उपयुक्त आहेत.

आधुनिक वैज्ञानिक युगात संपूर्ण जग जवळ आणले आहेत पण माणसाने अशी संस्कृती निर्माण केली की, शेजारी कोण राहते हे माहिती नाही त्यामुळे लोक एकमेका पासून दुरावले गेले आहेत. अशा समाजात बंधुभाव, एकता, सामाजिक मुल्ये दिसून येत नाही. म्हणून न्याय, स्वातंत्र्य, समता, बंधुता, स्वयंशासन, परस्पर सहकार्य इत्यादी मुल्यांची जपवणूक करावयाची असेल तर छोट्या-छोट्या वसाहतींचे संघटन असणे आवश्यक आहे. यासाठी लोकांची इच्छा व सहभाग असल्या शिवाय तो यशस्वी व परिणामकारक होत नाही. व विकासाचे प्रयत्न अयशस्वी ठरतात.

ग्रामीण लोक संघटित होवून योग्य नेतृत्वाखाली, अर्थोत्पदवाचा आत्मविश्वास जागृत करतांना दिसतात. १९९१-९२ मध्ये नाबार्डने

स्वयंसहाय्यता गटांच्या प्रतिमानांना वित्तीय क्षेत्रात कायदेशीर मान्यता देऊन स्वयंसहाय्यता गटाचे रूपांतर चळवळीत करण्यास प्रारंभ केला. या चळवळीचा धडा घेऊन पद्मश्री जया अरुणाचलम यांनी नाबार्डच्या माध्यमातून आंध्रप्रदेश, तामिळनाडू, अरुणाचलम येथे बचत गट सुरु केले. भारतात आंध्रप्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान, तामिळनाडू, केरळ या राज्याचे नामोल्लेख सतत केला जात आहे. परंतु महाराष्ट्रात १९४७ मध्ये अमरावती जिल्ह्यात स्वयंसहाय्यता बचत गट वेगळ्या स्वरूपात स्थापन झाल्याचा पुरावा दाखल आहे. १९८८-९६ पासून प्रत्येक केंद्रीय अंदाज पत्रकात स्वयंसहाय्यता गटाबाबत तरतुदी केल्या आहेत.

महाराष्ट्रात मार्च २००५ अखेर स्वयंसहाय्यता गटाची बँक संलग्नता करण्यात आली. स्वयंसहाय्यता बचत गटाना बळकटी मिळावी म्हणून शासकीय धोरणात्मक निर्णय घेऊन अंमलबजावणी केली जात आहे.

❖ बचत गटांना बँकांकडून ७ टक्का व्याज दराने कर्ज पुरवठा करण्याचा निर्णय घेण्यात आला आहे.

❖ बँकांकडून कर्ज घेतांना स्टॅम्प ड्युटी रद्द करण्यात आली आहे.

❖ अंगणवाडी केंद्रांना खिचडी वाटप व शिजविण्याचे कार्य स्वयंसहाय्यता गटांना देण्यात येत आहे.

❖ स्वस्त धान्य दुकाने स्वयंसहाय्यता गटांना चालविण्यास दिली आहेत.

❖ स्वयंसहाय्यता गटांनी उत्पादित केलेल्या वस्तुंना विक्री जागा, तहसिलदार कार्यालय, पंचायत समिती आवारे, ग्रामपंचायती आवारे, प्राथमिक आरोग्य केंद्राचे परिसर, द्रुतगती मार्गावर थांब्यांच्या परिसरात जागा,

नगरपालिका, महानगरपालिकांच्या हद्दित जाळे, शालेय, महाविद्यालय या परिसरात जागा देण्याचे निर्णय घेतलेले आहेत.

❖ पाऊलगाय विकास आणि वनौषधी विक्रीचा परवाना देण्यात आला आहे.

❖ राष्ट्रीय सहकार विकास निगमाच्या आर्थिकी सहाय्याने निर्मिती झालेल्या सहकारी कुक्कुटपालन संस्थांचे मार्केटिंग व विक्री करण्याचे काम देण्यात येत आहे.

❖ निर्मल ग्राम योजनेतर्गत गटांना शौचालय बांधण्यासाठी कर्ज देण्यात येत आहे.

❖ बँक ऑफ महाराष्ट्राच्या वतीने सावित्री क्रेडिट कार्ड देण्यात येत आहेत.

❖ गावोगावी गटांमार्फत वाचनालये सुरु करण्याचा निर्णय घेण्यात आला.

❖ महिला स्वयंसहाय्यता गटांना विमा संरक्षण देण्यात येत आहे.

❖ शासना मार्फत स्वयंसहाय्यता गटांना विविध व्यवसायांचे मोफत प्रशिक्षण देण्यात येत आहे.

इत्यादी विविध धोरण शासनाद्वारे केले गेलेत. आदर्श यशवंत ग्राम पंचायत झाडा या गावाच्या विकासात, गांव सक्षमीकरण करण्यात बचत गटाचीही महत्त्वाची भूमिका दिसून येते. झाडा या गावात बचत गट ३३ येवढे निर्माण करण्यात आले होते. आणि या बचत गटांच्या माध्यमातून विविध उद्योगधंदे सुरु करण्यात आले आणि गाव सक्षमीकरणात महत्त्वाची भूमिका या विविध बचत गटांनी बजावली ते बचत गट पुढील प्रमाणे सुरु

बचत गट

- 1 पसायदान स्वयंसहाय्यता महिला बचत गट यात १२ सदस्य आहेत. या बचत गटाद्वारे आवळा मुरब्बा, आवळा सुपारी, आवळा किस हे गृह उद्योग चालविले जायचे, प्रमुख उद्योग या गटाचे बिछायत केंद्राचे आहे.
- 2 सावित्रीबाई फुले स्वयंसहाय्यता बचत गट सदस्य संख्या १२. या गटाद्वारे बटाटे वेफर्स, फराळी चिवडा, चिंचेचे लोणचे, प्रमुख उद्योग अॅग्रोवेस इन्डीस्ट्रीज.

3 अहिल्यादेवी होळकर स्वयंसहाय्यता बचत गट सदस्य १२. या गटाद्वारे निंबू लोणचे व प्रमुख उद्योग दालमिल प्रक्रीया.

4 वै. मुर्ती संत गाडगे बाबा स्वयंसहाय्यता आदिवासी महिला बचत गट - बीसी प्रक्रीया.

5 वंदनीय राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज स्वयंसहाय्यता पुरुष बचत गट सदस्य संख्या ११. या गटाद्वारे मसाला शेंगदाना, मसाला शेव, व प्रमुख उद्योग शेळी पालन.

6 श्री हरी स्वयंसहाय्यता पुरुष बचत गट सदस्य संख्या ११. या गटाद्वारे प्रिकॉस्टींग युनिट.

7 भगवान महावीर स्वामी स्वयंसहाय्यता युवा बचत गट सदस्य संख्या ११.

8 छत्रपती शिवाजी महाराज स्वयंसहाय्यता युवक बचत गट सदस्य संख्या १५. धान्यपेढी लघु उद्योग.

9 तथागत भगवान गौतम बुद्ध स्वयंसहाय्यता पुरुष बचत गट सदस्य संख्या १३.

10 डॉ बाबासाहेब आंबेडकर स्वयंसहाय्यता महिला बचत गट सदस्य संख्या ११.

11 मातोश्री रमाबाई आंबेडकर स्वयंसहाय्यता महिला बचत गट सदस्य संख्या ११.

12 पूज्य साने गुरुजी स्वयंसहाय्यता महिला बचत गट सदस्य संख्या १३.

13 सदगुरु श्री संत लहानुजी महाराज स्वयंसहाय्यता महिला बचत गट सदस्य संख्या १३.

14 संतश्रेष्ठ गोरखा मेळा स्वयंसहाय्यता महिला बचत गट सदस्य संख्या १३.

15 राष्ट्रपिता महात्मा गांधी स्वयंसहाय्यता महिला बचत गट सदस्य संख्या ११. या गटाद्वारे हर्बल उटने, हर्बल शिकेकाई हा गृहद्योग चालविला जायचा.

16 स्वामी विवेकानंद स्वयंसहाय्यता अपंग बचत गट सदस्य संख्या ७.

17 महात्मा कबीर स्वयंसहाय्यता महिला बचत गट सदस्य संख्या १२.

18 जगतगुरु श्री संत तुकाराम महाराज स्वयंसहाय्यता महिला बचत गट सदस्य संख्या १२.

19 महम्मद पॅगम्बर स्वयंसहाय्यता महिला बचत गट सदस्य संख्या ११.

- 20 संत सावता माळी स्वयंसहाय्यता महिला बचत गट सदस्य संख्या १२.
21 भूमिपुत्र स्वयंसहाय्यता बचत गट मत्कानी शेती घ्यायचे आणि करावयाचे (टेके).

या शिवाय १२ बचत गट अजुन होते. पण त्या संबंधी माहिती प्राप्त झाली नाही त्यामुळे त्यांची नावे इथे सांगण्यात आले नाही. ज्या बचत गटाने गृह उद्योग चालविले नाही त्यांची बीसी योजना चालविली. तसेच पसायदान बचत गट, अहिल्यादेवी बचत गट, सावित्रीबाई फुले बचत गट, राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज बचत गट, श्री हरी बचत गट, या पाच बचत गटांनी मिळून शेती घेतली. व उत्पन्नातून जो पैसा मिळतो ते आप-आपसात वाटून घेतात.

छत्रपती गटानी धान्यपेढी हा लघु उद्योग केला यासाठी कास्तकारांनी आपले शिल्लक धान्य आणून गोडाऊन मध्ये ठेवणे आणि ज्या व्यक्तीला अडचण भासेल तो व्यक्ती यातून धान्य घेईल व बँकेच्या व्याजाच्या हिशोबानी तो ते धान्य परत करी. उदा. ४ पायली धान्य नेल्यास परत करतांना तो ५ पायली धान्य देत होता.

अशा प्रकारे गावात सुवर्ण जयंती स्वयंरोजगार योजने अंतर्गत एकूण ३० स्वयंसहाय्यता बचत गटाची स्थापना करण्यात आलेली आहे व अन्य तीन बचत गटाची गट वेगळे आणि त्या माध्यमातून विविध गृह उद्योग बेरोजगारांना रोजगार मिळाला व २०० कुटुंबे या योजने मुळे स्वयंपूर्ण झाली. वर्तमान काळात पसायदान महिला बचत गटाचे कार्य सुरू आहे. बाकी बचत गट संपुष्टात आले.

सेवा सहकारी सोसायटी

एकामेका साह्य करू अवघे धरू सुपंथ हा सहकाराच मुल मंत्र आहे. समान गरजा आणि समान हित असलेल्या समाजातील अनेक व्यक्ती एकत्रित येऊन एक संघटन तयार करतात त्याला सहकारी संस्था असे म्हणतात. भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्थेत कृषी विकासाचे अनन्य साधारण महत्व

असून ग्रामीण भागातील ६८ टक्के जनता ही शेती व शेतीपुरक उद्योगाशी निगडित आहे. तोट्यात चाललेला शेती व्यवसाय आणि कुटीर उद्योगाचा रूहास यामुळे भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था मोडकळीस येऊन ग्रामीण जनता कर्जाच्या ओझ्याखाली दबून गेली होती त्यांना उन्नतीचा मार्ग सहकार ने दाखविला. सहकारी चळवळीला अधिक गतिमान करण्याचे काम स्वातंत्र्य प्राप्ती नंतर झाले. महाराष्ट्रात १९६० पासून सहकारी चळवळ गावपातळीवर पोहचविण्यासाठी विशेष प्रयत्न करण्यात आले. या चळवळीला राजर्षी शाहू महाराज, नामदार गोखले, वैकुंठभाई मेहता, विठ्ठलराव विखे पाटील, धनंजयराव गाडगीळ, वसंतदादा पाटील व शरदचंद्र पवार या सारख्या कर्तृत्ववान नेतृत्वाचा त्यात मोठा वाटा आहे.

ग्रामीण कृषी क्षेत्रीय वित्तीय गरज पूर्ण करण्याकरिता सहकारी पतपुरवठा संस्थांचा महत्वाचा वाटा आहे. त्याचबरोबर सहकारी खरेदी-विक्री संस्थांचे योगदान ही महत्वपूर्ण मानता येईल. शेतकऱ्यांची सावकारांच्या हातातून सुटका करून देण्यासाठी या सहकारी संस्था महत्वपूर्ण भूमिका बजावत आहे. महाराष्ट्रातील सहकारी चळवळीची व्याप्ती बरीच मोठी आहे. महाराष्ट्र हे सहकार क्षेत्रात आघाडीवर असलेले देशातील एक प्रमुख राज्य म्हणून ओळखले जाते. राज्यात विशेषतः ग्रामीण भागाच्या आर्थिक व सामाजिक विकासाला सहकारी चळवळीने मोठा हातभार लावला आहे. अगदी सुरुवातीला ही चळवळ कृषी पतपुरवठा क्षेत्रापुरतीच मर्यादीत होती परंतु पुढील काळात तिचा विविध क्षेत्रात विस्तार झालेला आहे.

ग्रामसक्षमीकरणात या सहकारी चळवळीने महत्वाची भूमिका बजावली आहे. ग्रामीण परिवर्तनास मोठा हातभार लावला आहे.

झाडा या गावाच्या विकासामध्ये सेवा सहकारी सोसायटीचे मोठे योगदान आहे. प्राथमिक पतपुरवठा संस्था आणि शेती व्यवसायाला पतपुरवठा करणाऱ्या अन्य सहकारी संस्था यांनी शेतकऱ्यांना शेतीच्या कामासाठी कमी व्याज दराने अल्प व दीर्घ मुदतीची कर्ज उपलब्ध करून दिले.

त्यामुळे शेतकऱ्यांचे सावकारावरील अवलंबून थोडे तरी कमी झाले. झाडा या गावात सेवा सहकारी संस्थाचे १९६० साली रजिस्टर झाली. याचे सभासद गावातील शेतकरी असतात आष्टा आणि झाडा गांव मिळून ही सेवा सहकारी सोसायटी आहेत. सुरुवातीला १० रु. शेअर्स व ०१ रु. प्रवेश फी अशी होती. मग ५० रु. प्रवेश फी केली, २०० सभासद होते.

या सेवा सहकारी सोसायटीचे अध्यक्ष मागील ४५ वर्षांपासून श्री विजयराव उगले आहेत. वर्तमान काळात या सोसायटीचे २६५ सदस्य आहेत. शेतकरीला कर्ज वाटप या सोसायटीच्या माध्यमातून केले जाते. २०१४-२०१५ पर्यंत वार्षिक ६-१० लाख पर्यंत कर्ज वाटप केले. २०१६-२०१७ ला ३२ लक्ष कर्ज वाटप केले. असे सोसायटी च्या अध्यक्षांनी सांगितले परंतु त्यानंतर शेतीचे उत्पन्न कमी झाल्याने कमी कर्ज वाटण्यात आले. शेतकरी कर्ज माफी ची मागणी करीत आहेत. २००रु. शेअर्स हे जे जमा केले ते फीक्स डिपाजिट बँकेत केले त्यामुळे त्याचे जे व्याज प्राप्त झाले त्या व्याजात आम्ही २१ हजार चौ. फुट जागा घेतली व त्या जागेवर सोसायटीचे कार्यालय बांधले हे कार्यालय बांधण्यात श्री पाठक इंजिनियर होते त्यांनी १रु. न घेता काम केले. असे श्री विजयराव उगले (अध्यक्ष) यांनी सांगितले कार्यालय शिवाय दोन गोडाऊन पण त्या जागेवर बांधले. आज सोसायटी ची ७५ लाख एक.डी. आहे. त्यामुळे आडिट वर्ग अ (ऋ ग्रेड उ समृद्ध) मध्ये ही सोसायटी येते. अ वर्ग मध्ये अमरावती जिल्ह्यात दोनच सोसायटी आहेत एक झाडा गावाची आणि दूसरी नेर पिंगळीची सोसायटी.

सेवा सहकारी सोसायटी च्या माध्यमातून सहकारी विपणनात शेतमालाची विक्री करतांना अनेक मध्यस्थांना टाळणे शक्य झाले. व सहकारी प्रक्रिया संस्थेच्या मदतीने शेतमाल जास्त

काळापर्यंत साठवून ठेवता येतो. त्यामुळे योग्य भावाची शेतकऱ्याला हमी मिळते. कृषी उत्पादनाच्या विपणनात सहकारी संस्थेचे सुधारणा अ बदल अ विकास या त्रिसुत्रीचे योगदान महत्वाचे ठरते.

निष्कर्ष-वरील अध्ययना नंतर पुढील निष्कर्ष निघाले

- 1 ग्रामीण लोक संघटित होवून योग्य नेतृत्वाखाली, अर्थोत्पदवाचा आत्मविश्वास जागृत करतांना दिसतात.
- 2 झाडा या गावात बचत गटांच्या माध्यमातून विविध उद्योगधंदे सुरु करण्यात आले आणि गाव सक्षमीकरणात महत्वाची भूमिका या विविध बचत गटांनी बजावली .
- 3 बचत गटांच्या माध्यमातून विविध गृह उद्योग बेरोजगारांना रोजगार मिळाला व २०० कुटुंबे या योजने मुळे स्वयंपूर्ण झाली.
- 4 सेवा सहकारी सोसायटी च्या माध्यमातून सहकारी विपणनात शेतमालाची विक्री करतांना अनेक मध्यस्थांना टाळणे शक्य झाले
- 5 सहकारी प्रक्रिया संस्थेच्या मदतीने शेतमाल जास्त काळापर्यंत साठवून ठेवता येतो. त्यामुळे योग्य भावाची शेतकऱ्याला हमी मिळते.
- 6 सहकारी संस्थेचे सुधारणा , बदल , विकास हे त्रिसुत्रीचे योगदान महत्वाचे ठरते.

संदर्भ ग्रंथ

- 1 सत्येंद्र अग्रवाल - विश्व व्यापार एवं ग्रामीण सशक्तीकरण, इशिका पब्लिकेशन्स जयपुर 2012.
- 2 डॉ. ए. बी. अवस्थी - विकास प्रशासन, अग्रवाल प्रकाशन आगरा.
- 3 गिरवर सिंह - भारत में पंचायत राज, पंचशील प्रकाशन जयपुर.
- 4 आदर्श यशवंत ग्राम पंचायत झाडा स्मरणिका


Principal
Arts & Science College



(SJIF) Impact Factor-7.675

ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

March -2020

SPECIAL ISSUE CCXXV (225)

Domestic Violence: Impact on Indian Society



Chief Editor

Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Anuvasthi

Editor:

Dr. Niti. A. Mathankar
Principal
Late Vasant Rao Kolhatkar Arts
College, Rohana

Guest Editor:

Prof. Deenan Umharkar
Late Vasant Rao Kolhatkar Arts
College, Rohana

The Journal is indexed in:

Scientific Journal Impact Factor (SJIF)

Cosmos Impact Factor (CIF)

International Impact Factor Services (IIFS)

B.Aadhar

Multidisciplinary International Research Journal

Peer-Reviewed Indexed

March - 2020

SPECIAL ISSUE -CCXXV (225)

Domestic Violence: Impact on Indian Society

Chief Editor :

Dr. V. D. Joshi, satewade

Editor :

Dr. Nitin A. Mathankar
Principal

Late Vasant Rao Kolhatkar Arts College, Rohana

Guest Editor :

Dr. Deoman S. Umbarkar

Organizing Secretary

Department of Sociology

Late Vasant Rao Kolhatkar Arts College, Rohana

Aadhar INTERNATIONAL PUBLICATIONS

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

© All rights reserved with the authors & publisher

Price : Rs. 425/-



64	महिला सबलीकरणात स्वयंसहाय्यता बचत गटाची भूमिका डॉ. स्मिता म. जाधव / डॉ.गणेश भि.मोहोड	267
65	विविध कालखंडात स्त्रियांवरील हिंसाचाराचे बदलते स्वरूप—एक चिंतन फकिरा भगवान राजगुरू	271
66	आर्थिक तणाव आणि देशांतर्गत कलह श्री. अदित्य प्रकाशराव कणेरे	277
67	मानवी हक्क आणि कौटुंबिक हिंसाचार डॉ. विभा छ. घोडखादे	283
68	घरगुती हिंसाचाराचे स्वरूप, कारणे व उपाययोजना प्रा.डॉ.संजय श्रीहरी कुंभारे	288
69	कौटुंबिक हिंसाचार आणि समाजव्यवस्था डॉ. रविंद्र आर सहारे	293
70	कौटुंबिक हिंसाचाराची कारणे आणि उपाययोजना प्रा. सुभाष एस. रंगारी	297
71	महिला हिंसाचार व प्रतिबंधक कायदे प्रा.डॉ.सतिश रामदासजी महल्ले	302
72	महात्मा फुल्यांच्या साहित्याची व्यापकता डॉ. माधव सोनेकर	306
73	महात्मा गांधीजींच्या असहकार चळवळीत विदर्भातील स्त्रियांचे योगदान डॉ. वि.डी. रिधोरकर/डॉ. एन.ए. माधनकर	314
74	महात्मा गांधी कें आर्थिक विचार प्रा. डॉ. रफिक. शेख	319
75	स्त्री अस्मितेचा पुरस्कार करणारी विचारसरणी : स्त्रीवाद प्रा. महेंद्र झलके	322
76	महिला आणि कौटुंबिक अत्याचार डॉ. मधुकर वि. नंदनवार	327
77	महिलासक्षमीकरण : देशाच्या सामाजिक व आर्थिक क्षेत्रातील परीवर्तनाची दिशा सौ. अनिता नरेंद्र बोबडे	332
78	महिला सबलीकरण आजही महत्वाचे प्रा. प्रविण अजबराव उपरे	337
79	मराठी साहित्यामधील घरगुती हिंसाचाराचे दर्शन डॉ.भूषण रामटेके	341
80	कौटुंबिक हिंसाचाराचे आर्थिक स्वरूप डॉ.लाजवंती टेभुर्णे	344
81	महिलांचे अधिकार आणि व्यावहारिक स्वरूप प्रा. डॉ. मंगेश अशोकराव रणदिवे	347
82	महिलांवरील अत्याचार व स्त्री प्रतिबंधक कायदे डॉ. मालीनी वडतकर	352
83	महिलांवर होणारे घरगुती हिंसाचार आणि कायदे डॉ. प्रेमा लेकरवाळे (चोपडे)	358
84	मानवी हक्क आणि कौटुंबिक हिंसाचार डॉ.प्रा.सौ. एस.पी. लाखे	361
85	स्वातंत्र्योत्तर ग्रामीण कथेतील स्त्रीचे दुय्यम स्थान डॉ. कल्पना एस. बोरकर	367

महिला सबलीकरणार्थ स्वयंमहायत्ता बचत गटाची भूमिका

डॉ. विमला मा. जाधव

डॉ.सोमेश वि. सोरोडे

इतिहास विभाग प्रमुख

व्यंगिय भाषा प्रमुख

महिला व विज्ञान महाविद्यालय,
कुन्हा, जि.अमरावतीनारायणराव काळे स्मृती
गॅडेल कॉलेज, कारंजा(घ)

आपल्या राष्ट्रच्या राष्ट्रीय उत्पन्नात महत्वाचा वाटा पडवू शकणारी स्त्री हा अतिशय महत्वाचा घटक आहे. तेव्हागळ्या काळात महिला सार्वलीकरणार्थी विविध योजना राबविण्यात आल्यात. 2001 हे वर्ष महिला सार्वलीकरण हे वर्ष मानले गेले. महिला सार्वलीकरण म्हणजे,

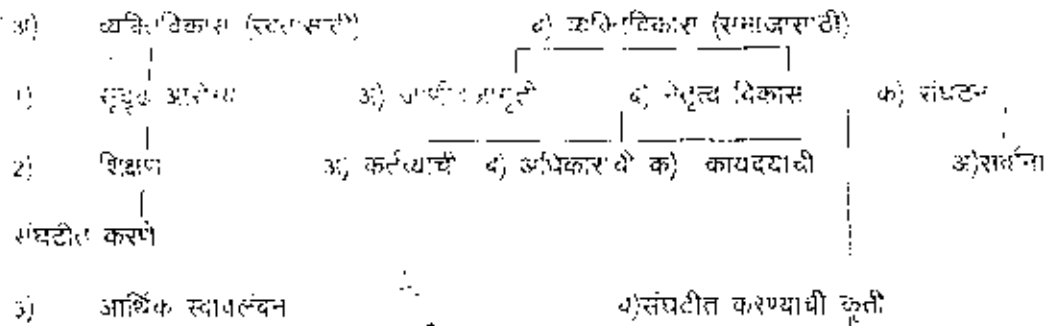
1. स्त्रीने स्वतःच्या क्षमतांची ओळख करून घेऊन स्वतःच्या क्षमतांचा विकास करावयाच्या धरदुती व सामाजिक नियमांच्या प्रक्रियेत सहभागी होण्याचा प्रयत्न करणे होय.
2. स्त्री सक्षमीकरण म्हणजे स्त्रीच्या आंगी निर्माण होण्याची, नियंत्रण करण्याची, संघटित करण्याची क्षमता, मर्यादशून्य करणे, कृतीशील कार्यक्रम घडवून आणणे, लोकसंपर्क, जनसंपर्क, संस्थासंपर्क, आर्थिक व्यवहार इ. करण्याची क्षमता व आत्मनिर्भर होणे होय. - व्हिनेसा ट्रेपेन्

थोडक्यात स्त्रीमध्ये स्वविश्वास, स्वक्षमता, स्वजाणीव निर्माण करून तिला आत्मनिर्भर बनविणे व तिच्यामध्ये आत्मसन्मानाची व स्वातंत्र्याची जाणीव निर्माण करणे होय. स्त्री मध्ये हीच जाणीव निर्माण होण्याकरिता तिला स्वातंत्र्य हवे. याबाबत ती देशात उधारी या लेखात सौ.सुमती कुळकर्णी लिहितात भारतातील स्त्री लोकसंख्येचे रूपांतर राक्षम श्रमशक्ती मध्ये करणे हे भारतासमोरील एक आव्हान आहे. त्यासाठीच

स्त्रीयांना शिक्षित व सक्षम करणे गरजेचे आहे. जिव्या हाती पाळण्याची दोरी ती जगला उधारी या लेखी घडवून आणताना काळच्या गरजेनुसार जळण्याची दोरी हातात घेण्याच्या बाबतीतलं स्वातंत्र्य तिलाच स्वातंत्र्य असायला हवे. □

महिला सार्वलीकरणचे घटक कोणते ? याबाबत प्रा.मूलानी लिहितात.

सार्वलीकरणचे घटक



अ) निर्णयक्षमता दृढिमत द) श्रमतापृष्ठी क) संपत्तीदेव

आधुनिककाळाच्या प्रक्रियेत स्त्री ही पुरुषापेक्षा दुर्दैव मागे राहता कामा नये, हा त्यामागील फरक होय. स्वतंत्र्योत्तर काळात महिलांच्या विकासार्थी जाणीवपूर्वक प्रयत्न करण्यात आले. असे असले तरी, त्याला अपेक्षित यश प्राप्त होऊ शकले नाही. परंतु स्वातंत्र्यप्राप्तीनंतर स्वयं-य अर्थाने

स्त्रियांना राजकीय, सामाजिक, आर्थिक अधिकारात सहभागी केले पाहिजे. हे समाजमान्यता प्राप्त वारू लागले. कारण भारताच्या एकूण लोकसंख्येची अंदाजानुसार निम्मी लोकसंख्या महिलांनी व्यापलेली होती. मग अशा असंतुषाची स्त्रियांच्या अधिकाराचा संकोच करण्यात येत होता. याला बदल करणे महत्वाचे होते. स्वतंत्र भारतातली आर्थिक लोकसंख्येला दुर्बळी ठरवून देशाचा विकास राधता येणे अशक्य होते.

1950 साली ज्यावेळी स्वतंत्र भारताची भटन तयार झाली त्यावेळी भारतीय स्त्रीने एक फार मोठी लढाई जिंकली. कारण पुरुषांप्रमाणेच समान न्याय व संधी आणि अधिकार तिला प्राप्त झाले. महिलांच्या सक्षमतेचे प्रकाश अर्थकार प्रदान करूनच भारतीय समाजव्यवस्था व अर्थव्यवस्थेचा विकास आपल्याला जलद गतीने साध्य करता येईल, हा दृष्टीकोन रामोर ठेवून प्रयत्न करण्यात आले. महिलांच्या सक्षमतेचा मूळ अर्थिक समस्येत दखल्याने आर्थिक समस्येचे उच्चाटन करून त्यांना आर्थिकदृष्ट्या स्वावलंबी व स्वयंपूर्ण बनवून देण्यासाठी, तिच्यामध्ये आत्मसन्मान आणि स्वतंत्रता जपली प्राप्त करून देण्यासाठी स्वयंसहाय्यता गटाचा प्रारंभ झाला.

स्वतंत्र गटाचा स्वयंसहाय्यता गट अशी संघोधने जाते. महिलांना आर्थिकदृष्ट्या सक्षम करण्यासाठी लोकलेवेल एक महत्वाचे पाऊल म्हणजे स्वयंसहाय्यता गट होय. विशेषतः शहरी भागात महिला बचत गटाची गरज कमी आहे. कारण शहरांमध्ये बंधाच स्त्रिया अशांजन करतात. शहरातील गरीब वस्तींमध्ये आणि ग्रामीण भागात बचत गटाची भूमिका फार महत्वाची ठरली आहे.

ग्रामीण भागातील गरीब महिलांना सक्षम करण्याचे बचत गट हे एक उत्तम साधन बनले आहे. या बचत गटाचे महत्त्व विशेष करताना महिला स्वयंसहाय्यता बचत गट या डॉ.मुलानी यांनी लिहिलेल्या पुस्तकाच्या प्रस्तावनेत डॉ.बी.के.कुलकर्णी म्हणतात, "ग्रामीण भागातील कृषि जीवन पध्दतीत एकत्रित कुटुंबात केंबळ कन्या-बायको-सून-आई या भूमिका बजावणारीही निरक्षर महिला महिला बचत गटाच्या माध्यमातून काटाफसर, बचतीची कास घेऊन आर्थिकदृष्ट्या सक्षम व सगर्थ होत असली तरी त्यांच्याकडे एकसंख्या मूळ मूर्तीची निरक्षर स्त्री अजून समाजात साक्षर महिला म्हणून मान्यता पावली आहे. अन्व.स्त्र.नि.कर, शिक्षण व आरोग्य या सारख्या मूलांमूला गरज ती महिला स्वावलंबीने मगदत आहे. महिलांच्या अधिकारासाठी शासनाने राबविलेल्या योजनांची माहिती मिळवून त्यांना पुरेपूर लाभ घ्यायला ही महिला अवकाशेतर आहे."

थोडक्यात वर्तमानकाळात बहुतेक ग्रामीण व शहरी भागात विशेषतः कष्टकरी महिला या आपल्या मुक्त गुणवैशिष्ट्यांच्या आधारे आर्थिकदृष्ट्या सक्षम होत आहे. परावलंबीनाच्या परंपरेतून बाहेर येण्याचा प्रयत्न मार्ग महिला बचत गटाद्वारे त्यांना उपलब्ध झाला आहे.

स्वयंसहाय्यता बचत गटाची पार्श्वभूमी :

भारत देशातील कायदावैधीत स्त्रियांच्या आर्थिक प्रवित्त्याबरोबरच संपूर्ण भवितव्याला आकार देण्याचे कार्य बचत गटाच्या रुजनात सुरु आहे. महिलांच्या स्वामीकरणासाठी बचत गट हे सूत्र सर्वविदीताच आहे. या पार्श्वभूमीवर बचत गटाची ऐतिहासिक पार्श्वभूमी अभ्यासणे अतिशय आवश्यक आहे.

बचत गटाचे संस्थापक बंगिनादेशातील शांततेच्या नोबेल अर्जासचे मानकरी डॉ. महंमद युनुस हे आहेत. अशिया खंडातील एक मागासलेले राष्ट्र म्हणून बांगलादेशाची ओळख आहे पण असा देशात स्वयंसहाय्यता बचत गटाचे मूळ देसून ठेरे. बँक गरीबच्या धारता तसेच बचत गटाच्या माध्यमातून गरिबीमुक्त विश्वाची निर्मिती अशा पुस्तकांतून त्यांनी समाजातील शोषित आणि गरीब वर्गाचे चित्रण केले. बचत गटाच्या स्थापनेची कल्पना त्यांना कशी सूडली ? हे पाहणे आवश्यक आहे. त्यांच्या घरातील मोलव.रुपीची आर्थिक दुर्भावस्था पाहून ते व्यथित झाले व अशा गरीब आणि सावकारी पाशात अडकलेल्या लोकांना अर्थकारणाच्या मुख्य प्रवाहात आणण्यासाठी त्यांना स्वयंसहाय्यता मिळावा, ही त्यांची तळमळ होती. म्हणूनच त्यांनी डावळ देथील कृषि बँकेचा

अमेरिका-यासो सामाजिक साधना जाळांनी पेशीय पध्दतीने चालवत केली तर ते लोक कर्जाकरिता लायक ठरू शकतील अशी कल्पना 1976 मध्ये मांडली. ही कल्पना वॉकेच्या अधिकाऱ्यांनी मान्य केली व 1983 मध्ये ती चालवत गटाच्या माध्यमातून अस्तित्वात आली. डॉ. युनुस यांच्या प्रेरणेने ज्या राहिलेल्या बांगलादेशातील बचत गटांनी सार्वजनाला मार्गदर्शक अशी प्रेरणा दिली.

वेगवेगळ्या विचारवंतांनी बचतगटांच्या व्याख्ये कोलेल्या आहे. ज्या समूहात 10 ते 20 स्थावरदांर्ग निवड करून नियमित दमर्गदून एकमेकांच्या गरजा, अडचणी, जीवनमूल्ये उदावण्यासाठी वर्ज रचण्यात अर्थसाहाय्य केले जाते, उपायगुंदा उभारला जातो, सर्वांगुमते निर्णय घेऊन संघटनेसाठी वाढविली जाते, परस्पर सहकार्ये, सहयोग नेतृत्व व कर्तव्य, विचारंची देवणधेवण सारत्यपूर्व व प्रयत्नशील सदस्यांच्या समूहाला स्वयंसहाय्यता गट म्हणतात.

"A self help Group is a Voluntary association of homogenous set of people either working together or living in the neighborhood engaged in similar of activity working with or without registration for the common good (the members)". 2

बचत गटाचे स्वरूप

- 1) Small Saving Group - बचत करणे
- 2) Micro Credit Group - बचत, कर्जवहाप व कर्जाणेड
- 3) Thrift Credit Group - काढकसर व बचतगटातील फरक कळतो.
- 4) Micro Finance - बचत कर्ज विभा यांचा संगणेश अशा सर्व व्यवहाराला ज्यावेळी व्यक्ती, समूह वाट उभार घटकांच्या सहकार्याने जोड मिळते तेव्हा स्वयंसहाय्यता गट निर्माण होते. असेल गटाचे प्रकार -

- 1) महिला बचत गट, 2) पुरुष बचत गट, 3) समिश्र बचत गट
- 1) महिला बचत गट - ज्या गटात सुमारे 10 ते 20 महिला एकत्र येऊन जो गट स्थापन केला जातो त्यांस महिला बचत गट असे म्हणतात.
- 2) पुरुष बचत गट - ज्या गटात 10 ते 20 पुरुष एकत्र येऊन जो गट स्थापन केला जातो त्यांस पुरुष बचत गट असे म्हणतात.
- 3) समिश्र बचत गट - सर्व पुरुष एकत्र येऊन जो गट स्थापन केला जातो त्यांस समिश्र बचत गट असे म्हणतात.

या तिन्ही प्रकारांपैकी महिला बचत गट सार्वत्रिक स्वरूपात स्थापन झालेले व कार्यप्रवण आढळतात. सुमारे 10 ते 20 महिला एकत्रित येऊन बचत गट स्थापन केला जातो. बचत गटांच्या स्थापनेनंतर वॉकेत खरो उचडले जाते. नियमवलीनुसार चालवत केली जाते व गोळा झालेली बचत गरजू महिलांना एका विशीष्ट मुदतीमध्ये कर्ज स्वरूपाने दिली जाते व अशा प्रकारे एकत्रित बचत करून कर्जाचे वितरण गरजूंना केलेले जाते. वॉकेत खरो असल्यामुळे संदर्भित वॉकेकडून कर्ज घेऊन घेतले गेलेले अशा योजना असतात. अशा योजनांद्वारे बचतगट वॉकेकडून कर्ज घेतात आणि परतावेली करतात.

वॉके अँड इंडिया आणि नादार यांच्यातील नोंदीनुसार 90% पेक्षा जास्त महिला बचत गट क्रियाशील असलेले पहावयास मिळतात. बचत गटांच्या माध्यमातून सामूहिक निर्णयाने महिला छोटे-मोठे उद्योग सुरू करत आहेत. भारतामध्ये महिला बचत गटांद्वारे महिलांचे संघटन घडून येत आहे. नेतृत्व अन्वित कर्तव्ये यांच्या वळार मिळालेल्या स्त्रींच्या आधारे महिला आपली भूमिका पार पाडी आहे. परंतु या महिला बचत गटांच्या वळवळीवर काही अक्षेपही घेतले जातात.

1. बचत गट हे सध्या व चळवळीची सार बंधन करणारे एक माध्यम आहे.

2. वचत गटाचे कार्य काढणाऱ्या वचत गटाचे अध्यक्ष म्हणून दत्तकरी दयादी लागते परंतु यात विशेष तथ्य आढळत नाही.

सामान गरजा असणाऱ्या सामान विचारण्या व सामान उद्दिष्टाने प्रसिद्ध झालेल्या महिलांचा गट आपले कार्य करित आहे. या स्वयंसहाय्यता महिला वचत गटाची वैशिष्ट्ये पाहू नेल्यास,

- 1) सामान गरजा - समासदांच्या गरजा सामान असतात.
- 2) स्वान परिस्थिती आर्थिक परिस्थिती सामान असते.
- 3) स्वैच्छा समसदास असल्यामुळे ती स्वतंत्र असते.
- 4) एकात्मिकी गावना - वचत गटाच्या माध्यमातून एकत्रितोची गावना वृद्धिंगत होते.
- 5) सहकार्याची गावना - सहकार्याची गावना लागते.
- 6) स्वयंसहाय्यता विकास - महिलांच्या स्वयंसहाय्यता विकास होते.
- 7) आर्थिक सुरक्षितता - महिलांचा आर्थिक सुरक्षितता प्राप्त होते.
- 8) तिला तिच्या टिकार्याचे व हक्काचे व्यासपीठ प्राप्त होते.

आज ग्रामीण भागामध्ये महिलांच्या सक्रिय सहभागामुळे स्वयंसहाय्यता गट महत्वाची भूमिका बजावत आहे. विशेषतः ग्रामीण परिसरातील वारिदय निर्मूलनात वचत गट हे विकासाचे साधन बनत आहे. स्वयंसहाय्यता वचत गटामुळे महिलांकडे असणाऱ्या अंगभूत क्षमतांना आकार मिळत आहे. त्याचप्रमाणे स्त्रीयांच्या श्रमक्षमतीतील सहभागाने तिच्या कुटुंबाचा विकास होतो आहे. गरजामध्ये महिला वचत गट हे ग्रामीण आणि वारिदय क्षेत्रात नवे तर शहरी भागातही तय धरून आहेत. या गटामुळे महिलांचे सवलिकरण होत आहे. महिला कमावत्या झालेल्या आहेत. या वचतगटांमुळे लाखे कुटुंबांना आर्थिक सौख्य प्राप्त झालेले आहे. "वचत गट म्हणजे महिला सक्षमीकरणाची दिशा" असे सूत्र अज मन्वत पावलेले आहे.

स्वातंत्र्योत्तर काळात महिलांच्या उत्थानाकरिता अनेक योजना अंगलात आणल्या गेल्या त्यांच्या वेगवेगळे कल्याणबरोबरच तिला स्त्री म्हणून एक सुखकर जीवन जगत आहे. या दृष्टीने प्रयत्न सारल्या गेलेले आहे. तिच्या आर्थिक प्रश्नांना सोडवण्याची दरोबरव तिने वैयक्तिक, सामाजिक आणि आरोग्य विभागात प्रश्नांची सोडवणूक होत आहे. जेणे कार्की "मूल आणि मूल" यात वंदिस्त असणारी स्त्री अधिक स्वतंत्र झाली आहे. अज पुरुषांच्या बरोबरने कार्य करण्याच्या रित्र्यांच्या अधिकार कक्षांमध्ये जी वाढ झाली आहे त्यात स्वयंसहाय्यता वचत गटाची भूमिका अत्यंत साधारण महत्वाचे आहे. वचत गटाचे उद्दिष्ट स्त्रीला आर्थिक स्वावलंबन प्राप्त करून देणे. तिचा आत्मविश्वास वाढवून तिच्या आत्मसन्मान निर्माण करणार माध्यम आहे. थोडक्यात ते स्त्रीला सबल करणारे शास्त्र नाही तर शास्त्र आहे. ग्रामीण, अल्पशिक्षित, आर्थिकदृष्ट्या दुर्बल असणाऱ्या स्त्रीचे ते अभिव्यक्तीचे मोठे वास्तव्य आहे.

संदर्भ :-

1. कुलकर्णी सुमती - (लेख) दै. लोकसत्ता, ती देशाला उध्वारी, 12.13 जुलै 2019
2. गुलाणी प्रा.एन.यु. महिला स्वयंसहाय्यता वचत गट, पृ.11

संदर्भग्रंथ :-

1. गटाला डॉ.एस.एस. भारतीय इतिहासातील रित्र्या व स्त्रीजीवन
कौलाय पब्लिकेशन, औरंगाबाद
2. गुलाणी प्रा.एन.यु. महिला स्वयंसहाय्यता वचत गट, डायमंड पब्लिकेशन, पुणे
3. दै. लोकसत्ता लेख, 12 जुलै 2019
4. साने गीता - भारतीय स्त्रीजीवन, मौज प्रकाशन ग्रंथ, मुंबई

Impact
Factor
6.293

ISSN 2349-638x

Peer Reviewed And Indexed

**AAYUSHI
INTERNATIONAL
INTERDISCIPLINARY
RESEARCH JOURNAL
(AIIRJ)**

Monthly e-Journal

VOLUME

APR

2020

Address

• Devgiri Nagar, Ambajogai Road, Latur.
• Tq. Latur, Dis. Latur 413512 (MS.)
• (+91) 9922455749, (+91) 8999250451

Email

• aiirjpramod@gmail.com
• aayushijournal@gmail.com

Website

• www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

Sr.No.	Author Name	Research Paper / Article Name	Page No.
18	Rajendra D.Khurche	A Study of Agriculture Development & Irrigated Area Under Palkhed Irrigation Division, Nashik (MH)	57 To 63
19	Prof. Shweta T. Aglawe	A Study of Differences in Intelligence, Family Climate, School Environment. Study Habits and Academic Achievement of Students in Vidarbha Region in Relation to Area and Sex	64 To 67
20	Dr. Umesh Rathi	Study of Shooting Accuracy and Flexibility of Basketball Players in Amravati District	68 To 70
21	Dr.Vidya Thakre , Mrs.Shilpa Kuber	A Static Plane Symmetric Cosmological Model of the Universe With Logotropic Equation of State	71 To 74
22	U. N. Manjre	Comparative Study of Active, Passive and no Warm up on Selected Physical Fitness Performance of Cricket Players	75 To 77
23	Dr. Shubhangi Khashba Pawane	A Review on Gokshura and its Medicinal Value	78 To 84
24	Dr. Anil Uttam More	Fundamental Rights and Education	85 To 86
25	S. M. Yeole	Water Chemistry of Masoli Reservoir, Parbhani, Maharashtra State, India	87 To 89
26	प्रो.डॉ.बालाजी श्रीपती भुरे	'पचपन खंभे लाल दीवारें' उपन्यास में व्यक्त आधुनिक बोध	90 To 101
27	डॉ. सत्यनारायण	आदर्श पत्रकार : पण्डित झाबर मल्ल शर्मा	102 To 105
28	सद्दामसो हजरतसो पिरजादे	बाबासाहेब आंबेडकरांचे श्रमीकां विषयींचे विचार व कार्ये	106 To 108
29	डॉ.गोकुल शामराव डामरे	परिकल्पना व संशोधन	109 To 114
30	डॉ पद्माकर पीटले	मराठीतील अनुवादित नाटकाचे स्वरूप	115 To 117
31	सद्दामसो हजरतसो पिरजादे	भारतीय शेतीचे बदलते प्रवाह	118 To 120
32	प्रवीण पोपटराव शार्दुल	सप्तशृंगी गड एक धार्मिक पर्यटनस्थळ विश्लेषणात्मक अभ्यास	121 To 124

Study of Shooting Accuracy and Flexibility of Basketball Players in Amravati District

Dr. Umesh Rathi

Arts And Science College Kura
Dist. Amravati**Abstract**

Basketball puts a lot of stress on the body and injuries can happen, so warming up, stretching your muscles and joints, and cooling down is important. Flexibility ensures that you maintain optimal mobility of all your joints. This increases the balance between muscles that will ensure efficient movement and force production. Also, certain muscular restrictions make it hard to maintain body positions that are essential to your performance. Shooting accuracy is also important to develop the performance in basketball. The researcher chose the basketball players in Amravati district and analyzed the percent of flexibility and shooting accuracy of players.

Introduction

Basketball teaches you about being a good team player and can be a great social sport. Adults should check with their doctor before taking up basketball. Basketball puts a lot of stress on the body and injuries can happen, so warming up, stretching your muscles and joints, and cooling down is important. Flexibility training involves exercising at a low intensity to improve the range of motion of a joint. Static, active and dynamic stretching are all forms of flexibility training. By engaging in flexibility exercises you can improve posture, prevent muscular imbalances leading to injuries and reduce soreness after a workout.

Flexibility ensures that you maintain optimal mobility of all your joints. This increases the balance between muscles that will ensure efficient movement and force production. Also, certain muscular restrictions make it hard to maintain body positions that are essential to your performance. For example, tightness in your lats (your large back muscle) can prevent you from being able to hold or reach your arms straight over your head, and tightness in your calves may result in a player "fading away" rather than leaning forward when making a move to the basket.

Review of literature

Williard (1973), conducted the study to compare the bank and at shots and various combinations from selected shooting angles for the college students. The results have not been analyzed in detail. Study on the comparison of various levels of ability and practice conditions when shooting

basketballs from three different distance with and without use of backboards was carried out by Roberts.

Methodology

The researcher has described the design of the study in detail. The size and selection of the sample, the variable and the control employed the sources of data, the tools and the method of gathering data, the description of data gathering instruments and the statistical procedure used in the analysis are carefully described.

Sources of Data

The researcher did the data collection through the physical college in Amravati District.

Selection of Subject

The study was done about the flexibility and the shooting accuracy of the basketball players. The researcher selected the 40 badminton players from the physical college Amravati. Their ages varied from 19 to 24 years.

Collection of Data

The researcher chose the Basketball players of Physical College Amravati. In this study the students were chosen randomly having age group between 19 to 24 . The researcher have made the test on the selected basketball players through percentage formula have checked the flexibility and the shooting accuracy of basketball players.

Analyzing data

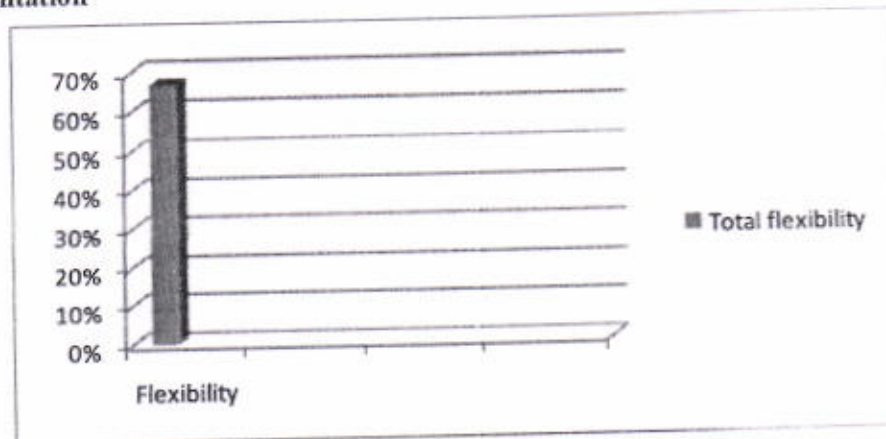
The present study was a study of the flexibility and shooting accuracy of the basketball players. Percentile method was used for the data analysis.

The flexibility of basketball players of Amravati district

Subject	Total % of Flexibility
40 basketball players of Amravati district	67.59%

The table indicates that the 40 selected players of basketball having flexibility 67.59%. The flexibility is excellent in the basketball players of Amravati district.

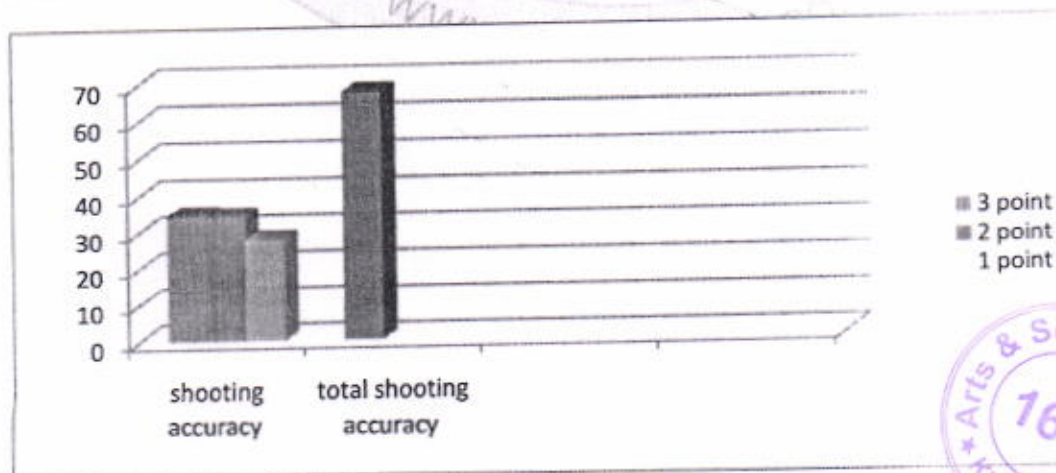
Graphical representation



The shooting Accuracy of Basketball players of Amravati district

Subject	3 point s (total %)	2 poin ts (total %)	1 poin ts (total %)	Total % of Shooting accuracy
40 basketball Players of Amravati district	34.74%	34.24%	28%	67.65%

The above table indicates that shooting accuracy of basketball players is higher than the standard norms.
Graphical representation



Conclusion

The study was about the flexibility and

shooting accuracy of the basketball students in Amravati district. By the collection of data the



following conclusions were drawn.

The study found that the flexibility of the basketball players in Amravati district was excellent and the shooting accuracy of the basketball players in Amravati district were higher than the standard norms.

References

1. NBA Official Rules (2009–2010) Archived January 11, 2012, at the Wayback Machine Rule 5, Section II, c. Retrieved July 26, 2010.
2. FIBA Official Basketball Rules (2010) Rule 4, Section 8.4 Retrieved July 26, 2010
3. NBA Official Rules (2009–2010) Archived January 11, 2012, at the Wayback Machine Rule 5, Section II, b. Retrieved July 26, 2010.
4. FIBA Official Basketball Rules (2010) Rule 4, Section 8.7 Retrieved July 26, 2010
5. FIBA Official Basketball Rules (2010) Rule 3, Section 4.2.2 Retrieved July 26, 2010
6. NBA Official Rules (2009–2010) Archived January 11, 2012, at the Wayback Machine Rule 3, Section I, a. Retrieved July 26, 2010.
7. 2009–2011 Men's & Women's Basketball Rules Archived August 6, 2012, at the Wayback Machine Rule 10, Section 2, Article 6. Retrieved July 26, 2010.
8. Struckhoff, Mary, ed. (2009). 2009–2010 NFHS Basketball Rules. Indianapolis, Indiana: National Federation of High Schools. p. 59. Rule 10, Section 1, Article 6

ISSN 2349-638x

www.aiirjournal.com

Principal
Arts & Sci. College
Kurha

CRITERION III- Research, Innovation and Extension

3.3.1. Number of research papers published per teacher in the Journals notified on UGC website during the last five years.

Sessoin 2020-2021

Impact Factor-7.675 (SJIF)

ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Journal

Peer-Reviewed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

June -2020

ISSUE No-CCXXXVIII (238)

Impact of COVID-19 on World: Problems, Challenges and Opportunities

Prof. Virag S. Gawande

Director
Chief Editor

Dr. Gopal S. Vairale

Guest Editor
Principal

Dr. Omprakash B. Munde

Editor
HOD, Geography

Dr. Sangita Bhangdiya Malani,

Executive Editor
HOD, Political Science

Dr. Sachin J. Holey

Executive Editor
HOD, Sociology

Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera, Dist. Amravati.

This Journal is indexed in :

- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit

www.aadharsocial.com

Aadhar PUBLICATIONS



पश्चिम विदर्भातील सातपुडा पर्वतीय व पर्वतपदिय क्षेत्रातील वार्षिक दूध उत्पादन**डॉ. रहूल एस. तहे**

मु. पो.लेहगाव ता.मोर्शी जि. अमरावती

मार्गदर्शक. डॉ. एस.बी.आखरे

भूगोल विभाग प्रमुख

कला व विज्ञान महाविद्यालय, कुन्हा

प्रस्ताविक:-

भारताची लोकसंख्या दिवसेंदिवस वाढतच आहे .व जमिनीचे क्षेत्रफळ मात्र कायम आहे .उद्योगधंद्यांमुळे आणि शहरीकरणामुळे शेतजमिनीचे क्षेत्र कमी होत गेल्यामुळे बहुसंख्य कुटुंबाला शेतीवरच अवलंबून राहणे शक्य नाही. अशा परिस्थितीमध्ये शेतीला पूरक व्यवसाय कोणता! तर तो दुग्धव्यवसाय होय.

प्रस्तुत शोधनिबंधात पश्चिम विदर्भातील सातपुडा पर्वतीय व पर्वतपदिय क्षेत्रातील वार्षिक दूध उत्पादन यांचा अभ्यास करण्याचा प्रयत्न केला आहे .भारतात महाराष्ट्राचा दूध उत्पादनात सातवा क्रमांक असून महाराष्ट्र राज्याच्या तुलनेत कमी आहे.

उद्देश :-

- 1)अभ्यास क्षेत्रातील वार्षिक दूध उत्पादनाचा शोध घेणे.
- 2)पर्वतीय व पर्वत पदिय क्षेत्रातील दूध उत्पादनातील भिन्नता अभ्यासणे .

अभ्यासक्षेत्र:-

महाराष्ट्र राज्याच्या उत्तरेस सातपुडा पर्वत रांगा आहेत. या पर्वतरांगेतील पश्चिम विदर्भातील सातपुडा पर्वतीय व पर्व पदीय तालुके दुग्ध व्यवसायाच्या अभ्यासासाठी निवडलेले आहेत. यामध्ये धारणी व चिखलदरा यांना पर्वतीय व अंजनगाव सुर्जा, अचलपूर ,चांदूरवाजार, मोर्शी ,वरुड ,तेल्हाग, अकोट ,तळेगाव, जामोद ,संग्रामपूर यांना पर्वतपदीय तालुके संबोधले आहेत.

या प्रदेशाचा अक्षवृत्तीय विस्तार २०° ४८' ४४' उत्तर ते २१ °४४' ०५' आणि रेखावृत्तीय विस्तार ७६° १९' ४७' पूर्व ते ७८° २३'२३ 'यांच्या दरम्यान आहे .या प्रदेशाचे एकूण क्षेत्रफळ १,०,०,०४२चौ. कि.मी. आहे. २०११ च्या जनगणनेनुसार एकूण लोकसंख्या २,०६,९,२०२एवढी आहे.

माहिती स्रोत व संशोधन पद्धती:-

प्रस्तुत शोधनिबंध तयार करण्यासाठी जिल्हा दूध उत्पादक संघ, तालुका दूध उत्पादक संघ, पंचायत समिती पशु विभाग यांना प्रत्यक्ष भेटून माहिती गोळा केली. शासनाच्या पूर्व प्रकायनि साहित्यामधून उपयुक्त माहिती घेतली असून त्यामध्ये अमरावती, अकोला व बुलढाणा जिल्हाचे आर्थिक समालोचन, जिल्हा पशुगणना अहवाल. या व्यतिरिक्त लेखकाच्या ग्रंथाचा, संशोधन पत्रकाचा आणि वर्तमानपत्रातील प्रकाशित स्तंभाचा तसेच वेगवेगळ्या ठिकाणी आयोजित केलेल्या भूगोल शासकीय चर्चासत्र व परिषदा इत्यादी मधील सादर केलेल्या दुग्ध व्यवसायाची संबंधित लेखांच्या प्रकाशनाचा उपयोग करण्याचा प्रयत्न केलेला आहे.

विषय विवेचन :-

भारतात महाराष्ट्राचा दुग्ध उत्पादनात सातवा क्रमांक लागतो. महाराष्ट्र राज्यात दुग्ध उत्पादनात विविधता आढळून येते. निश्चित सर्वात जास्त दूध उत्पादन (१६.८६%) अहमदनगर जिल्ह्यात, तर सर्वात कमी उत्पादन गडचिरोली जिल्ह्यात (०.३२%)उत्पादन होते. महाराष्ट्र राज्याच्या तुलनेत अभ्यास क्षेत्रातील दूध उत्पादन कमी आहे .

अभ्यास क्षेत्रांमध्ये महाराष्ट्र राज्याच्या तुलनेत (१.८५%) दूध देणारे गुरे आहे. परंतु दूध उत्पादन फक्त महाराष्ट्र राज्याच्या तुलनेत(०.९९%) तेवढे असल्याचे दिसून येते. यावरून असे स्पष्ट होते की या क्षेत्रांमध्ये प्रति गुरे दूध उत्पादन हे कमी प्रमाणात मिळते .अभ्यास क्षेत्रातील वार्षिक दूध उत्पादन (९२.३५%) (८०.००%) मिळत असल्याचे दिसून येते.



सारणी क्रमांक:-१ अभ्यास क्षेत्रातील वार्षिक दूध उत्पादन

अ.क्र.	तालुके	एकूण दुग्धउत्पादन (०.००मि.ली.)	टक्केवारी %	सरासरी दुग्धउत्पादन (%)
१	धारणी	६.६९०	७.२४%	७.११%
२	चिखलदरा	६.४४५	६.९८%	
३	अंजनगाव सुर्जा	६.३९५	६.९२%	
४	अचलपूर	१३.३४१	१४.४५%	
५	चांदूर बाजार	७.७१४	८.३६%	
६	मोशी	९.१३६	९.८९%	
७	वरुड	१०.७५३	११.६४%	
८	तेल्हाय	७.७११	८.३५%	९.५३%
९	अकोट	९.५०७	१०.२९%	
१०	जळगाव जामोद	६.८०८	७.३७%	
११	संग्रामपूर	७.८५१	८.५१%	
	एकूण	९२.३५१	१००.००%	

स्त्रोत:-Report of Gstimation of production 2014-15

अभ्यास क्षेत्रात वार्षिक दूध उत्पादनाचा ७% पेक्षा कमी गटात, अंजनगाव सुर्जा, चिखलदरा तालुक्याचा समावेश होतो. ७% ते १०% गटात संग्रामपूर, जळगाव जामोद, तेल्हाय, चांदूरबाजार व मोशी या तालुक्याचा तर १०% पेक्षा अधिक गटात अकोट, अचलपूर, वरुड या तालुक्यांचा समावेश होतो.

अभ्यास क्षेत्रातील तालुक्या नुसार अचलपूर तालुक्यामध्ये सर्वात जास्त वार्षिक दूध उत्पादन झाल्याचे दिसून येते. अभ्यास क्षेत्रातील वार्षिक दूध उत्पादनाच्या (१४.४५%) दूध उत्पादन हे अचलपूर तालुक्यात झाल्याचे दिसून येते. तर सर्वात कमी दूध उत्पादन (६.९२%) हे अंजनगाव सुर्जा तालुक्यामध्ये झाल्याचे निदर्शनास येते अभ्यास .

उपरोक्त सारणीवरून असे लक्षात येते की संपूर्ण अभ्यास क्षेत्रांमध्ये दुग्धाचे उत्पादन महाराष्ट्रात इतर जिल्हाच्या तुलनेत अतिशय कमी आहे. अभ्यास क्षेत्रातील एकूण वार्षिक दूध उत्पादनापैकी पर्वतीय तालुक्यामध्ये सरासरी ९.५३% टक्के वार्षिक दूध उत्पादन होते. तर पर्वतपदिय तालुक्यांमध्ये ७.११% वार्षिक सरासरी दूध उत्पादन होत असल्याचे दिसून येते.

निष्कर्ष:-

- १)पश्चिम विदर्भातील सातपुडा पर्वतीय व पर्वतपदीय तालुक्यांमधील दूध व्यवसायात भिन्नता दिसून येते .
- २) अभ्यास क्षेत्रात पर्वतीय तालुक्या पेक्षा पर्वतपदिय तालुक्यांमध्ये दूध उत्पादन अतिशय कमी प्रमाणात दिसून येते.
- ३)अचलपूर तालुक्यामध्ये सर्वात अधिक दूध उत्पादन तर चिखलदरा तालुक्यामध्ये सर्वात कमी दूध उत्पादन होते .

संदर्भसूची:-

- १)सकटे राजीव (२००२) "दूध व दुग्धजन्य पदार्थांचे उत्पादन हाताळणी व विक्री "
- २) साळुंखे. एम .बी .(२००९) "दूध डायरी २००९. " हाती सरकार प्रकाशन. पुणे .
- ३)Department of Animal Husbandry:-Livestock census of Amravati,Akola,Buldhana District 2003,2007,2012


Principal
Arts & Sci. College
Kurha



Impact Factor-7.675 (SJIF) ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

June -2020

ISSUE No-CCXXXVIII (238)

Impact of COVID-19 on World: Problems, Challenges and Opportunities

Prof. Virag S. Gawande

Director
Chief Editor

Dr. Gopal S. Vairale

Guest Editor
Principal

Dr. Omprakash B. Munde

Editor
HOD, Geography

Dr. Sangita Bhangdiya Malani,

Executive Editor
HOD, Political Science

Dr. Sachin J. Holey

Executive Editor
HOD, Sociology

Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera, Dist. Amravati.

This Journal is indexed in :

- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit www.aadharsocial.com

Aadhar PUBLICATIONS





कोविड १९ आणि पर्यटन व्यवसाय

डॉ. सुनील आखरे

कला व विज्ञान महाविद्यालय, कुन्हा.

सारांश:

चीन मधील वुहान शहरातून प्रसारीत झालेल्या कोरोना विषाणूच्या प्रकोपामुळे संपुर्ण जग 'कोविड १९' या आजारच्या विळख्यात सापडलेले आहे. या आजारामुळे अनेक देशांमध्ये लॉकडाऊन करणे लागले. या लॉकडाऊनचा परिणाम प्रत्येक देशाच्या अर्थव्यवस्थेवर झालेला दिसून येतो. लॉकडाऊन उठल्यावर सुद्धा या आजारच्या भीतीने अनेक व्यवसाय थांबलेले आहे. या आजारचा सर्वात जास्त परिणाम पर्यटन व्यवसायावर झालेला आहे कारण या आजारामुळे पर्यटन व्यवसाय पुर्णपणे ठप्प झालेला आहे. भारताच्या अर्थव्यवस्थेमध्ये पर्यटन व्यवसायाला अतिशय महत्त्वाचे स्थान असून भारतातील एकुण राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पादनाच्या ६.२३ टक्के उत्पादन पर्यटन व्यवसायातून मिळते. तसेच एकुण रोजगार निर्मिती मध्ये ८.७८ टक्के योगदान पर्यटन व्यवसायाचे आहे. 'कोविड १९' या आजारामुळे थांबलेल्या पर्यटन व्यवसायाला गती देण्याकरीता या व्यवसायामध्ये योग्य ते बदल घडवून या व्यवसायाला चालना देणे गरजेचे आहे.

प्रस्तावना:

'कोविड १९' या आजारचे संकट संपुर्ण मानव जाती समोर उभे ठाकले आहे. या आजारामुळे प्राणहानी सोबतच मोठयाप्रमाणत आर्थिक संकट सुद्धा उभे आहे. या आजारचा प्रसार होवु नये म्हणुन अनेक देशांमध्ये लॉकडाऊन केले गेले. या लॉकडाऊनचा परिणाम तेथील अर्थव्यवस्थेवर झाला. देशांतर्गत हवाई वाहतुक बंद आहे. अनेक व्यवसाय बंद पडल्यामुळे व उदयोगधंदे थांबल्यामुळे मोठयाप्रमाणत बेरोजगारीचा प्रश्न निर्माण झाला आहे. भारतासारख्या प्रचंड युवा लोकसंख्या असणाऱ्या देशात बेरोजगारीचा प्रश्न अधिकच बिकट झाला आहे. भारतामध्ये पर्यटन व्यवसाय हा अतिशय महत्त्वपूर्ण व्यवसाय असून शेतीनंतर याच व्यवसायामध्ये सर्वाधिक रोजगाराच्या संधी आहे. परंतु 'कोविड १९' या आजारचा सर्वात जास्त फटका याच व्यवसायाला बसलेला आहे. या संकटावर मात करण्याकरीता 'कोविड १९' या आजारचे भारतीय पर्यटन व्यवसायावर झालेल्या परिणामांचे अध्ययन करुन या व्यवसायाची पुर्नउभारणी करण्याकरीता उपाय शोधण्याचा प्रयत्न या संशोधन पत्राद्वारे केला आहे.

विजसंज्ञा:

'कोविड १९' कोरोना विषाणू, लॉकडाऊन, पर्यटन व्यवसाय.

अभ्यास क्षेत्र :

'कोविड १९' या आजारचा परिणाम संपुर्ण जगातील पर्यटन व्यवसायावर झालेला आहे परंतु अभ्यासाच्या दृष्टीने भारत देशाची अभ्यास क्षेत्र म्हणुन निवड केली आहे. भारत हा लोकसंख्येमध्ये जगातील दुसऱ्या क्रमांकाचा देश असून आकारमानाने जगातील सातव्या क्रमांकाचा देश आहे. भारताची एकुण लोकसंख्येच्या सुमारे १३६ कोटी असून क्षेत्रफळ ३२८७२६३ चौ. कि. मी. आहे. भारत हा देश मध्य पूर्व आशियामध्ये स्थित असून या देशाचा विस्तार ८° ४' २८" उत्तर ते ३७° ६' ५३" उत्तर अक्षवृत्त व ६८° ७' ३३" पूर्व ते ९७° २४' ४७" पूर्व रेखावृत्त आहे.





उद्दिष्ट :-

'कोविड १९' या आजागचा भारतीय पर्यटन व्यवसायावर होणाऱ्या परिणामांचे अध्ययन करणे.

पद्धतीशास्त्र :-

प्रस्तुत संशोधनामध्ये WHO आणि भारतीय पर्यटन विभागाच्या आकडेवारीचा उपयोग करण्यात आला व या आकडेवारीचे वेगवेगळ्या सांख्यिकीय पद्धती द्वारे तथ्यांचे प्रगतीकरण केले गेले. विविध आकृत्यांचा वापर करण्यात आला.

भारतातील कोविड १९ आजागची स्थिती :-

चीन मधील वुहान शहरातून प्रसारीत झालेल्या कोरोना विषाणूच्या प्रकोपामुळे संपुर्ण जग 'कोविड १९' या आजागच्या विळख्यात सापडलेले आहे. भारतामध्ये पहिला कोविड रुग्ण केरळ मध्ये ३० जानेवारीला आढळला. हा रुग्ण चीन मधील हुआन विद्यापीठात शिक्षण घेत होता. आज दि. १७ जुन २०२० पर्यंत एकुण ३६६९४६ लोकांना कोरोनाची लागण झालेली आहे. भारतातील 'कोविड १९' रुग्णांची वाढ पुढिल सारणी क्र. १ मध्ये दिली आहे.

सारणी क्र. १ भारतातील कोविड १९ रुग्णांची वाढ

अ.क्र.	दिनांक	कोविड १९ रुग्णांची संख्या	मृतांची संख्या
१	३० जानेवारी २०२०	१	०
२	२९ फेब्रुवारी २०२०	३	०
३	३१ मार्च २०२०	१२५१	१८०
४	३० एप्रिल २०२०	३३०५०	१७९८
५	३१ मे २०२०	१८२९४३	८३८०
६	१७ जुन २०२०	३६६९४६	११९०३

स्त्रोत:- जागतिक आरोग्य संघटना (WHO) आकडेवारी.

वरील आकडेवारीवरून असे स्पष्ट होते की, ३० जानेवारी २०२० रोजी 'कोविड १९' रुग्णांची संख्या केवळ १ होती ती १७ जुन पर्यंत ३६६९४६ झाली. ही वाढ जुन महिन्यामध्ये सर्वात जास्त आहे. मृत्युची संख्या सुद्धा या कालावधीत वाढली आहे. भारतातील 'कोविड १९' रुग्णांची वाढीचा कल पुढिल आकृतीमध्ये दर्शविण्यात आला आहे. [आकृती क्र. २]



[आकृती क्र. १]

कोविड १९ रुग्णांची संख्या

मृतांची संख्या

सद्यस्थितीत जगामध्ये एकुण ८२४२९९९* 'कोविड १९' रुग्ण असून ४४५५३५ मृतांची संख्या आहे. रुग्ण संख्येमध्ये भारताचा चौथा क्रमांक असून दर दशलक्ष लोकसंख्ये मागे २.१ मृत्युदर आहे. मृत्युदरमध्ये भारताचा १४ वा क्रमांक लागतो. भारतामध्ये मृत्युदर एकुण रुग्ण संख्येच्या ३.३ टक्के असून रोगमुक्त होण्याचा दर ५३.१ टक्के आहे. महाराष्ट्र, तामिळनाडू,



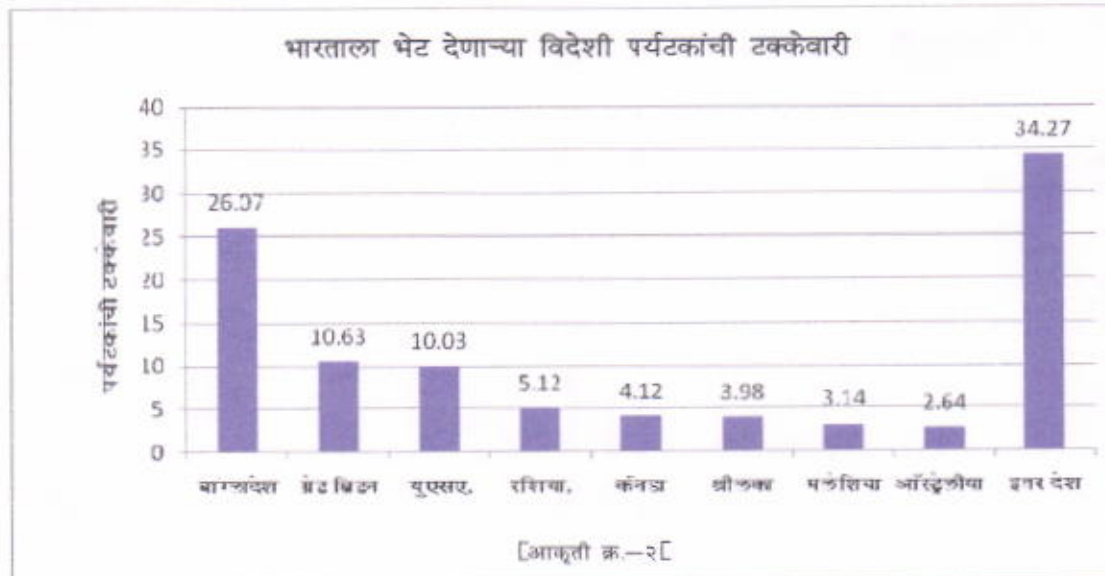


दिल्ली, गुजरात व उत्तर प्रदेश या पाच राज्यात देशातील सुमारे ७० टक्के 'कोविड १९' रुग्ण असून महाराष्ट्रात सर्वाधिक ११७००० 'कोविड १९' रुग्ण आहे.

भारतातील 'कोविड १९' आजार व पर्यटन व्यवसाय:-

कोरोना विषाणूचा प्रसार होवु नये याकरीता अनेक देशांनी लॉकडाऊन केले. भारताने सुद्धा २५ मार्चला लॉकडाऊन-१, १५ एप्रिलला लॉकडाऊन-२, ४ मे ला लॉकडाऊन-३ आणि १८ मे ला लॉकडाऊन-४ असे एकुण सुमारे ७० दिवसाचे लॉकडाऊन करण्यात आले. या लॉकडाऊनचा परिणाम अनेक व्यवसायावर झाला. 'मुडीज' या क्रेडीट रेटिंग संस्थेने 'कोविड १९' मुळे भारताचा आर्थिक विकासदर २.५ रहिल असा अंदाज वर्तविला आहे. यापुर्वी 'मुडीज' ने २०२० मध्ये भारताचा आर्थिक विकासदर ५.३ रहिल असा अंदाज वर्तविला होता. भारताचे माजी प्रमुख सांख्यिकिय तंज प्रणव सेन यांनी सुद्धा 'कोविड १९' मुळे भारताचा आर्थिक विकासदर ३ टक्क्यावरून कमी रहिल असा अंदाज वर्तविला आहे. या लॉकडाऊनमुळे पर्यटन व्यवसाय पूर्णपणे ठप्प झाला आहे. कारण पर्यटन व्यवसायाशी संबंधित वाहतुक, हॉटेल व्यवसाय, छोटे स्थानिक व्यापारी, पर्यटन मार्गदर्शक, यासारखे अनेक व्यवसाय बंद होते. आता लॉकडाऊनमध्ये थोडी सुट दिल्या गेली असली तरी कोरोना विषाणूच्या भितीने पर्यटकांनी संपुर्ण पाठ फिरवली आहे. पुढिल एक ते दिड वर्ष हा व्यवसाय पुर्वपदावर येण्याची शक्यता नाही,

भारताच्या अर्थव्यवस्थेमध्ये पर्यटन व्यवसायाला अतिशय महत्वाचे स्थान आहे. पर्यटन व्यवसाय हा सर्वात मोठा भारतातील सेवा व्यावसाय आहे. पर्यटनाने अनेकांना स्वतःच्या पायावर उभे राहण्यास मदत केली आहे. प्रतिकूल परिस्थितीमुळे पुरेसे शिक्षण घेवु न शकणाऱ्यांना सुद्धा चांगला रोजगार पर्यटन व्यवसायातून मिळाला आहे. भारतातील एकुण राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पादनाच्या ६.२३ टक्के उत्पादन पर्यटन व्यवसायातून मिळते. तसेच एकुण रोजगार निर्मिती मध्ये ८.७८ टक्के योगदान पर्यटन व्यवसायाचे आहे. भारतात सुमारे २६.७ कोटी रोजगार पर्यटन व्यवसायातून प्राप्त होतो. २०१८ या वर्षात भारताला सुमारे ६.२८ अब्ज डॉलरचे उत्पन्न पर्यटन व्यवसायातून झाले. २०२५ मध्ये पर्यटन व्यवसायातून २०१८ च्या दुप्पट होईल असे अनुमान होते परंतु 'कोविड १९' मुळे ते शक्य दिसत नाही. भारतामध्ये वर्षाला सुमारे ५० लाख विदेशी पर्यटक भेट देतात तसेच सुमारे ५६ कोटी स्थानिक पर्यटक पर्यटन करतात. भारतामध्ये बांगलादेश, ग्रेट ब्रिटेन, युएसए, रशिया, कॅनडा, श्रीलंका, मलेशिया व ऑस्ट्रेलिया या देशांमधुन सुमारे २३ विदेशी पर्यटक येतात. □





सर्वात जास्त 'कोविड १९' फटका पर्यटन व्यवसायाला बसला असून १०० टक्के विदेशी पर्यटक आणि ६० टक्क्यावरून जास्त स्थानिक पर्यटकांमध्ये घट येणार आहे. फेब्रुवारी ते जून हा कालावधी पर्यटन व्यवसायाकरीता सुवर्ण काळ असतो परंतु या वर्षी याच काळात कोरोना विषाणूचा प्रसार झाल्यामुळे पर्यटन व्यवसायाचे जास्त नुकसान झाले आहे. या संकटातून बाहेर येण्याकरीता उपाययोजना करणे आवश्यक आहे.

उपाययोजना:-

- १) विदेशी पर्यटकांचा ओघ कमी झाल्यामुळे देशांतर्गत पर्यटकांना आकर्षित करण्याकरीता नियोजन करणे आवश्यक आहे.
- २) देशांतर्गत पर्यटन स्थळांचा विकास करणे गरजेचे आहे.
- ३) भारताला निसर्गाचे वरदान मिळाले आहे तसेच अध्यात्मिक व प्राचिन वारसा लाभला आहे. या बाबींचा उपयोग करून पर्यटन व्यवसायाचा विकास कमला जावु शकतो.
- ४) ग्रामिण भागांमध्ये कोविड १९ चा प्रभाव कमी असल्यामुळे कृषी पर्यटनाला चालना देणे आवश्यक आहे.
- ५) भारतामध्ये आरोग्य सुविधा उत्तम असल्यामुळे वैद्यकीय पर्यटनाला चालना देणे आवश्यक आहे.

निष्कर्ष:-

- १) 'कोविड १९' या आजारचा फटका संपुर्ण भारतीय अर्थव्यवस्थेला बसला असला तरी पर्यटन व्यवसायाला तो सर्वाधिक बसला आहे.
- २) पर्यटन व्यवसायाला वाचविण्यासाठी संशोधन पत्रांमध्ये सुचविलेल्या उपाययोजना अमलात आणल्यास या प्रतिकूल परिस्थितीत सुद्धा पर्यटन विकासाच्या संधी आहे.

संदर्भ :-

- 1) Batra, K.L. Problems & Prospects of Tourism, Printwell Publication, Jaipur 1990.
- 2) <https://arogya.maharashtra.gov.in/1035>
- 3) <https://www.mygov.in/hi/covid-19/>
- 4) <https://www.moody's.com>
- 5) <https://tourism.gov.in/hi/>
- 6) <https://www.who.int/emergencies/diseases/novel-coronavirus-2019>
- 7) Salpekar, Aaradhana. Adventure and Geography of Tourism, Jannada Prakashan (P&D) New Delhi, 2009.



Principal
Arts & Sci. College
Kurha

(SJIF) Impact Factor-7.675

ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

June - 2020

ISSUE No-CCXXXV(235)



Prof. Virag,S.Gawande
Chief Editor :
Director
Aadhar Social Research &
Development Training Institute,
Amravati.

Dr. R.S.Satbhai
Executive Editor
Local Secretary
Adv.B.D.Hambarde Mahavidyalaya
Ashti

Guest Editor

Dr. S.R.Nimbore
Principal
Adv.B.D.Hambarde
Mahavidyalaya Ashti

Dr. Satish Kadam
President,AMIP&
Head,Dept of History
YCM,Tuljapur

Dr. Shivraj Bokade
Secretary,AMIP&
Head,Dept of History
YC,Nanded

The Journal is indexed in:
Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
International Impact Factor Services (IIFS)





B.Aadhar

Peer-Reviewed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

JUNE - 2020

ISSUE No - CCXXXV (235)

Prof. Virag.S.Gawande

Chief Editor :

Director

Aadhar Social Research &, Development Training Institute, Amravati.

Dr. R.S.Satbhai

Executive Editor

Local Secretary

Adv.B.D.Hambarde Mahavidyalaya Ashti

Guest Editor

Dr. S.R.Nimbore

Principal

Adv.B.D.Hambarde
Mahavidyalaya Ashti

Dr. Satish Kadam

President,AMIP&

Head,Dept of History
YCM,Tuljapur

Dr. Shivraj Bokade

Secretary,AMIP&

Head,Dept of History
YC,Nanded

Aadhar International Publication

© All rights reserved with the authors & publisher




Principal,
Arts & Science College
Kurha



104	शोधणमुक्त, समतायुक्त व राष्ट्रनिष्ठ समाजनिर्मितीसाठी लढणारे महापुरुष - डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर	डॉ.संतोष सुधाकरराव कोदुरवार	476
105	तेर : प्राचीनातून नाशाकडे	डॉ.विनोद बाबुराव बोरसे	479
106	प्राचीन मराठवाड्यातील (धर्मपूर) धर्मापूरी एक वैभवशाली नगर,बाजारपेठ आणि धार्मिक व सांस्कृतिक केंद्र	डॉ.गंगथडे आर.डी.	486
107	देवगिरी किल्ला : मराठवाड्यातील ऐतिहासिक वारसा	डॉ.केशव अंबादास लहाने	489
108	कोविड १९ महामारीतील आहाराचे आयोजन	प्रा. डॉ. रश्मी प्रविण गजरे	497
109	महात्मा गांधीजीच्या रचनात्मक कार्याची कर्मभूमी – सेवाग्राम आश्रम	डॉ.स्मिता म. जाधव	501
110	मराठवाड्यातील गढी/वाड्यातील: जलव्यवस्थापन	प्रा. डॉ. डी. एस. बिराजदार	508
111	दारिद्र्य निमूर्लनामध्ये सामाजिक सुरक्षा उपायांच्या भूमिकेबद्दल डॉ. अमर्त्य सेन यांचे विचार	प्रा. चंद्रशेखर फरकाडे	513
112	हरिहरराव देशपांडे यांचे स्वातंत्र्यलढ्यातील योगदान	प्रा.डॉ.गोविंद तिरमनवार	519
113	बदलत्या वातावरणामुळे हवामानातील झालेले परिणाम	प्रा.डॉ.सोमनाथ गुंजकर	527
114	साहित्य आणि चित्रपट : विशेष संदर्भ – नारायण हरी आपटे.	प्रा.हमीद उमरअली काझी	526
115	डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांचे आर्थिक विचार	डॉ.जाधव राजेश्री अप्पाराव	532
116	राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज यांचे सामाजिक कार्य	प्रा. जयंत विरुळकर	537
117	महात्मा गांधीजीच्या चळवळीतील मागण्यांचा स्वातंत्र्य चळवळीवर प्रभाव : एक अभ्यास	प्रा. जयवंत नथ्यूजी काकडे	543
118	कर्मवीर भाऊराव पाटील यांचे शैक्षणिक कार्य	श्री. अजितकुमार भिमराव पाटील	548
119	भारतीय स्वातंत्र्य लढ्यात चंद्रपुरचे सिंह खुशालचंद खजांची यांचे योगदान	प्रा.डॉ.कैलास रामचंद्र भांडारकर	552
120	चाव्हांक दर्शन : एक विचारप्रवाह	डॉ. किरण शिवाजीराव पाईकराव	556
121	उस्मानाबाद तालुक्यातील गोरक्षणादर्शक वीरगळ : समकालीन शेतीप्रधान समाजव्यवस्थेचे निदर्शक	प्रा.डॉ.कुलकर्णी जयश्री रमेश	560
122	हैद्राबाद मुक्तिसंग्रामात सोलापूरच्या आर्य समाजाने दिलेला ऐतिहासिक लढा	प्रा. लक्ष्मी मधुकर रेड्डी	566
123	चिनी बौद्ध प्रवासी – चर्चा आणि चिकित्सा	प्रा. डॉ. माधवी खरात	571





महात्मा गांधीजीच्या रचनात्मक कार्याची कर्मभूमी — सेवाग्राम आश्रम

डॉ.स्मिता म. जाधव

सहाय्यक प्राध्यापक (इतिहास विभाग प्रमुख) कला व विज्ञान
महाविद्यालय, कुर्हा

प्रस्तावना

महाराष्ट्रातील एक समृद्ध भौगोलिक प्रदेश आणि ऐतिहासिक वारसा यांनी संपन्न असणारा प्रदेश म्हणजे विदर्भ ! प्राचीन, मध्ययुगीन, आधुनिक इतकेच नव्हे तर सांप्रतच्या काळातही या प्रदेशाचे महत्व अनन्यसाधारण आहे. वर्धा, नागपुर, अमरावती, भंडारा, गडचिरोली, गोंदिया, चंद्रपुर, बुलढाणा, अकोला, वाशिम, यवतमाळ हे आजच्या विदर्भातील जिल्हे खरे महाराष्ट्राचे वैभवच म्हणता येईल. या सर्व जिल्हयामध्ये वर्धा जिल्हयाने आपले आगळेवेगळे स्थान निर्माण केले आहे. प्राचीन आणि मध्ययुगीन काळात येथे अनेक प्रथितयश राजवंशानी राज्य केले. प्राचीन आणि मध्ययुगीन परंपरेचा वारसा जपतच आधुनिक तसेच स्वातंत्र्यपूर्व काळामध्ये भारताच्या राजकीय पटलावर वर्धा जिल्हयाने फार महत्वाची भूमिका बजावलेली आहे. आधुनिक काळातही कृषी, उद्योग, व्यापार, शिक्षण, ज्ञान, विज्ञान, तंत्रज्ञान, समाजकारण, राजकारण यात जिल्हा अग्रेसर आहे.

भारतात ब्रिटीश सत्ता असताना वर्धा जिल्हा राष्ट्रवादी विचारसरणीचे स्फूर्तिस्थान आणि प्रेरणास्थान होते. सार्वजनिक सभा, लोकसभा, गोरक्षण सभा, बालसमाज यांनी समाजजागृती बरोबरच जिल्हयात राजकीय जागृती घडवून आणली १९३४ मध्ये महात्मा गांधी हे वर्धा येथे रहायला आल्यापासून या जिल्हयाला राष्ट्रीय स्तरावर महत्व प्राप्त झाले. महात्मा गांधी वर्धाचा उल्लेख "गौरवान्वित गांव" (Glorified Village) असा करित असत. त्यांना वर्धा जिल्हयात विधायक कार्याचे जाळे विणल्या गेले. तत्कालीन वर्धा जिल्हाचे महत्व वर्णन करताना सुप्रसिद्ध अमेरिकन तत्वज्ञ लुई फिशर "एशिया" नावाच्या पत्रातील संस्मरणात लिहीतात, "मी जव दिल्ली से वर्धा पहुंचा तो मेरी आंखे खुली. मेरे अंतःकरण ने मुझे चेतावनी दी की भारत की राजधानी दिल्ली नहीं वर्धा है हजारों प्रणालियों मे राष्ट्र का चैतन्य वर्धा मे एकत्र होकर वहाँ से सरे देश मे वितरित ओता है इसके विपरीत दिल्ली एसा किला लगता है जिसके द्वार देश की आशा-निराशाओ के लिए सदैव बंद रहते हैं" पुढे १९३६ मध्ये महात्मा गांधी हे वर्धा येथून जवळच असलेल्या सेगाव येथे रहावया गेले. फिशर हे सेवाग्राम आश्रमात एक आठवडा मुक्कामी होते हे विशेष !

सत्याग्रहाश्रम स्थापना १९२१

१९२१ मध्ये गांधीजींच्या साबरमती आश्रमाची एक शाखा वर्धा येथे सत्याग्रह आश्रमाच्या रुपाने उघडण्यात आली. या आश्रमाचा प्रारंभीचा प्रबंध करण्याकरीता महात्मा गांधींनी रमणिकलाल मोदी, मगनलाल गांधी, विनोबा भावे, रघुनाथ घोत्रे, द्वारकादास हरकरे, वल्लभस्वामी यांना पाठविले. या आश्रमातून विविध प्रकारचे विधायक कार्य झाले. देशप्रेम जागविण्याबरोबरच सत्याग्रहाकरीता लोकांना तयार केले. या आश्रमाने श्रम संस्कृतीचे तत्व लोकांवर बिंबविले. अस्मृश्यता निवारण, अंधश्रद्धा निर्मूलन, सुतकताई, कापड विणने, गोसेवा राष्ट्रीय शिक्षण या





विधायक कार्यावरोध असहकार चळवळ, झेंडा सत्याग्रह, यात आश्रमवासियांनी महत्वाची भूमिका बजावली.

सेवाग्राम आश्रमाची स्थापना : महात्मा गांधींच्या रचनात्मक आणि विधायक कार्याची कर्मभूमी सेवाग्राम आश्रम होय. २०११ मध्ये सेवाग्राम आश्रमाच्या स्थापनेला ७५ वर्षे पूर्ण झालीत म्हणजेच हा आश्रम शतक पूर्ती कडे वाटचाल करित आहे. आपल्या अनुयायांच्या सहाय्याने त्यांनी सेवाग्राम आश्रमातून विविधांगी कार्य केलेत. रूढ अर्थाने पाहता तसा हा आश्रम नव्हता तर स्वातंत्र्यपूर्व काळातील महात्मा गांधींच्या राष्ट्रीय आणि विधायक कार्याची ती प्रयोगभूमी होती. या आश्रमाच्या स्थापनेच्या इतिहासाही पाहणे आवश्यक आहे.

१९२९ च्या लाहोर अधिवेशनात जी संपूर्ण स्वातंत्र्याची मागणी करण्यात आली ती इंग्रजांनी मान्य केली नाही. त्यावेळी महात्मा गांधींनी सविनय कायदेभंग आंदोलन करण्याचे ठरविले. "मीठाचा सत्याग्रह" म्हणून ओळखल्या जाणाऱ्या सविनय कायदेभंग आंदोलनासाठी साबरमती आश्रमातून निघण्यापूर्वी महात्मा गांधींनी असा दृढसंकल्प केला की, संपूर्ण स्वराज्य प्राप्त केल्याखेरीज साबरमतीला मी परत येणार नाही. त्याप्रमाणे आपल्या ७८ अनुयायांसह ते १२ मार्च १९३० रोजी साबरमतीवरून दांडी यात्रे करिता निघाले परंतु कायदेभंगाची मोहिम पूर्णतः यशस्वी झाली नाही. त्यामुळे गांधीजी त्यांचे पाचवे पुत्र म्हणून ओळखले जाणारे जमनालाल बजाज यांचे विनंतीनुसार साबरमती येथून २९ ऑक्टोबर १९३४ रोजी ते वर्धा येथे येऊन स्थायिक झालेत. आणि सर्वप्रथम प्रत्यक्षपणे कन्याश्रम, मगनवाडी येथून त्यांनी रचनात्मक कार्यास सुरुवात केली. सतत दोन वर्षे त्यांनी हे कार्य केलेत. परंतु गांधीजींनी जे ग्रामोद्योगाचे जे ध्येय समोर ठेवले होते. त्याची पूर्तता शहरातून होणार नाही त्याची पूर्ण सिद्धता ग्रामातून करावी. अशी इच्छा त्यांनी वेळोवेळी सरदार वल्लभभाई पटेल आणि जमनालाल बजाज यांचेजवळ व्यक्त केली असे नमूद आहे. 'In early 1936, Gandhiji expressed his wish to make his residence in a village. He had been talking with Sardar Patel and Jamnalalji about moving on the Segaoon village. At least on the 30th April 1936. Gandhiji shifted his residence from Wardha to Segaoon Village.'²

सेगांवम्हणजे सेवाग्राम येथे महात्मा गांधी वर्षेवरून ३० एप्रिल १९३६ ला आलेत आणि ते तेथेच राहू लागले. ग्रामोद्योगाचे ध्येय सेवाग्राम येथून पूर्णत्वास जाईल याची त्यांना पूर्ण खात्री होती. आज प्रसिद्ध असणारे सेवाग्रामचे पूर्वीचे नाव सेगांव असे होते. परंतु नागपुर-भुसावळ रेल्वेलाईन दरम्यान शेगाव हे मोठे रेल्वेस्थानक होते. त्यामुळे पत्रव्यवहार करण्याकरीता अडचणी उद्भवत असल्याने १९४० मध्ये त्यांनी आपल्या सहाकाऱ्यांशी चर्चा करून सेगावचे नामकरण सेवाग्राम असे केले.

सेवाग्राम आश्रम ही महात्मा गांधींच्या रचनात्मक कार्याची पुण्यभूमि होती. या आश्रमात निरनिराळ्या प्रांतातील कार्यकर्ते संयुक्त कुटुंबात घटक होते. आश्रमवासियांसमोर महात्मा गांधींनी १८ प्रकारचे रचनात्मक कार्यक्रम ठेवलेत. त्यात सामाजिक एकता, अस्पृश्यता निवारण, खादी निर्माण, खादी प्रसार, ग्रामस्वच्छता, मुल्योद्योगी शिक्षण, आरोग्य शिक्षण, राष्ट्रभाषा प्रचार, आर्थिक एकता, महिला सुधार, स्वदेशी प्रचार, राष्ट्रीय एकता यांचा समावेश होता. आश्रमवासियांसमोर स्वराज्य प्रस्थापित करण्याचा व त्यापलीकडे जाऊन सुराज्य निर्माणाचा कार्यक्रम ठेवला. विधायक कार्यक्रमाची योग्यरित्या अंमलबजावणी त्यांनी सेवाग्राम आश्रमातून केली. आश्रमातील आगळ्यावेगळ्या विधायक कार्यक्रमाबद्दल गांधीजींच्या विचारांचे अनुयायी न्या.चंद्रशेखर धर्माधिकारी "स्वातंत्र्यलढयाची राजधानी" या लेखात लिहितात. "गांधीजींच्या आश्रमात चरखा, झाडू आणि





विधायक कार्याबरोबरच असहकार चळवळ, झेंडा सत्याग्रह, यात आश्रमवासियांनी महत्वाची भूमिका बजावली.

सेवाग्राम आश्रमाची स्थापना : महात्मा गांधीच्या रचनात्मक आणि विधायक कार्याची कर्मभूमी सेवाग्राम आश्रम होय. २०११ मध्ये सेवाग्राम आश्रमाच्या स्थापनेला ७५ वर्षे पूर्ण झालीत म्हणजेच हा आश्रम शतक पूर्ती कडे वाटचाल करित आहे. आपल्या अनुयायांच्या सहाय्याने त्यांनी सेवाग्राम आश्रमातून विविधांगी कार्य केलेत. रुढ अर्थाने पाहता तसा हा आश्रम नव्हता तर स्वातंत्र्यपूर्व काळातील महात्मा गांधीच्या राष्ट्रीय आणि विधायक कार्याची ती प्रयोगभूमी होती. या आश्रमाच्या स्थापनेच्या इतिहासही पाहणे आवश्यक आहे.

१९२९ च्या लाहोर अधिवेशनात जी संपूर्ण स्वातंत्र्याची मागणी करण्यात आली ती इंग्रजांनी मान्य केली नाही. त्यावेळी महात्मा गांधींनी सविनय कायदेभंग आंदोलन करण्याचे ठरविले. "मीठाचा सत्याग्रह" म्हणून ओळखल्या जाणाऱ्या सविनय कायदेभंग आंदोलनासाठी साबरमती आश्रमातून निघण्यापूर्वी महात्मा गांधींनी असा दृढसंकल्प केला की, संपूर्ण स्वराज्य प्राप्त केल्याखेरीज साबरमतीला मी परत येणार नाही. त्याप्रमाणे आपल्या ७८ अनुयायांसह ते १२ मार्च १९३० रोजी साबरमतीवरून दांडी यात्रे करिता निघाले परंतु कायदेभंगाची मोहिम पूर्णतः यशस्वी झाली नाही. त्यामुळे गांधीजी त्यांचे पाचवे पुत्र म्हणून ओळखले जाणारे जमनालाल बजाज यांचे विनंतीनुसार साबरमती येथून २९ ऑक्टोबर १९३४ रोजी ते वर्धा येथे येऊन स्थायिक झाले. आणि सर्वप्रथम प्रत्यक्षपणे कन्याश्रम, मगनवाडी येथून त्यांनी रचनात्मक कार्यास सुरुवात केली. सतत दोन वर्षे त्यांनी हे कार्य केलेत. परंतु गांधीजींनी जे ग्रामोद्योगाचे जे ध्येय समोर ठेवले होते. त्याची पूर्तता शहरातून होणार नाही त्याची पूर्ण सिद्धता ग्रामातून करावी. अशी इच्छा त्यांनी वेळोवेळी सरदार बल्लभभाई पटेल आणि जमनालाल बजाज यांचेजवळ व्यक्त केली असे नमूद आहे. 'In early 1936, Gandhiji expressed his wish to make his residence in a village. He had been talking with Sardar Patel and Jammalalji about moving on the Segaoon village. At least on the 30th April 1936, Gandhiji shifted his residence from Wardha to Segaoon Village.'²

सेगांवम्हणजे सेवाग्राम येथे महात्मा गांधी वर्षेवरून ३० एप्रिल १९३६ ला आले आणि ते तेथेच राहू लागले. ग्रामोद्योगाचे ध्येय सेवाग्राम येथून पूर्णत्वास जाईल याची त्यांना पूर्ण खात्री होती. आज प्रसिद्ध असणारे सेवाग्रामचे पूर्वीचे नाव सेगांव असे होते. परंतु नागपुर-भुसावळ रेल्वेलाईन दरम्यान शेगाव हे मोठे रेल्वेस्थानक होते. त्यामुळे पत्रव्यवहार करण्याकरीता अडचणी उद्भवत असल्याने १९४० मध्ये त्यांनी आपल्या सहाकाऱ्यांशी चर्चा करून सेगावचे नामकरण सेवाग्राम असे केले.

सेवाग्राम आश्रम ही महात्मा गांधीच्या रचनात्मक कार्याची पुण्यभूमि होती. या आश्रमात निरनिराळ्या प्रांतातील कार्यकर्ते संयुक्त कुटुंबात घटक होते. आश्रमवासियांसमोर महात्मा गांधींनी १८ प्रकारचे रचनात्मक कार्यक्रम ठेवले. त्यात सामाजिक एकता, अस्पृश्यता निवारण, खादी निर्माण, खादी प्रसार, ग्रामस्वच्छता, मुल्योद्योगी शिक्षण, आरोग्य शिक्षण, राष्ट्रभाषा प्रचार, आर्थिक एकता, महिला सुधार, स्वदेशी प्रचार, राष्ट्रीय एकता यांचा समावेश होता. आश्रमवासियांसमोर स्वराज्य प्रस्थापित करण्याचा व त्यापलीकडे जाऊन सुराज्य निर्माणाचा कार्यक्रम ठेवला. विधायक कार्यक्रमाची योग्यरित्या अंमलबजावणी त्यांनी सेवाग्राम आश्रमातून केली. आश्रमातील आगळ्यावेगळ्या विधायक कार्यक्रमाबद्दल गांधीजींच्या विचारांचे अनुयायी न्या.चंद्रशेखर धर्माधिकारी "स्वातंत्र्यलढयाची राजधानी" या लेखात लिहितात. "गांधीजींच्या आश्रमात चरखा, झाडू आणि





दास गुप्ता, मगनलाल गांधी, जमनालाल बजाज, जवाहरलाल नेहरू हे सदस्य होते. सुरुवातीच्या काळात चरखा संघाचे मुख्य कार्यालय अहमदाबाद हे होते. पुढे ते वर्धा येथील बजाजवाडीत आणण्यात आले. आणि त्यानंतर सेवाग्राम येथे ते स्थलांतरीत करण्यात आले. चरखा संघ ही सेवाभावी संस्था होती. सुरुवातीच्या काळात चरखा संघाची स्वतंत्र जागा नसल्यामुळे आश्रमाच्या इमारतीतच चरखा संघाचे कार्य चालत असे. खादी शिक्षण देण्यासाठी खादी विद्यालय सुरु करण्यात आले.

विशेष म्हणजे चरखा संघाचे कार्यालय सेवाग्रामला येण्यापूर्वीच मीरा बहन यांनी आश्रमामध्ये खादी मंदिर स्थापन करून सुतकताईचे शिक्षण मुलांना देण्यास सुरुवात केली होती. त्याचबरोबर बलवंतसिंह, दशरथ गवई, गोविन्द शेंडे हे सुतकताई चे शिक्षण, मुन्नालालभाई हे तकली चे शिक्षण तर अमृतलाल नानावटी हे कापड तयार करण्याचे व बुनाईचे कार्य करीत होते. हे सर्व कार्य (चरखा कुटी) बापू कुटीत चालत असे. आदीनिवासाच्या वऱ्हांडयातही सुत कातने, कापूस धुनने, साफ करणे इत्यादी विषयांचे ज्ञान लोकांना दिले जाई. वरुड खेडयातील कवडू, सदाशिव, नागोबा, हे युवक तर गावातील रावजी हा बालक तकलीवर सुत कातण्याचे शिक्षण घेत होता. तयार केलेले कापड विक्रीस ठेवले जाई. शिक्षणाबरोबरच लोकांमध्ये स्वदेशी आणि स्वावलंबन या तत्वाबद्दल प्रेम निर्माण करणे हा यामागील मुख्य हेतु होता. त्याचा परिणाम असा झाला की, "लोकांची मालाला मागणी वाढली, चरखा हे लोकांच्या उदरनिर्वाहाचे साधन बनले. आश्रमातील चरखा संघातर्फे गावामध्ये एक सहकारी दुकान उघडण्यात आले. या दुकानाचे प्रमुख सुखाभाऊ चौधरी हे होते. सुतकताईच्या मोबदल्यात लोकांना ज्वारी, कापड, किराणा मिळत होता. आश्रमातील हे परिश्रमालय अनेक दिवस चालू होते. गांधीजींच्या आज्ञेनुसार विनाईसाठी स्वतंत्र इमारत बांधण्यात आली ती भव्य वास्तु आज शांतीभवन या नावाने प्रसिध्द आहे. आश्रमातील सुतकताई आणि बुनाई कार्य पुढे चरखा संघात विलीन करण्यात आले." ५

चरखा संघाच्या कार्याचा मुख्य केंद्रबिंदू सेवाग्राम आश्रम हा होता. गांधीजी म्हणत, माझ्या मृत्युनंतर सर्व देश चरख्याला सोडतील परंतु सेवाग्राम आश्रम सोडणार नाही. त्याचे प्रत्यंतर आजही आपणास सेवाग्राम आश्रमात पहावयास मिळते. बापूकुटीमध्ये आजही सुतकताई होत आहे. इतकेच नव्हे तर येथील सहकारी दुकानाच्या माध्यमातून वस्तुंची विक्री होतांना दिसते. आजही वर्धा येथील सेवाग्रामच नव्हे तर नालवाडी येथे चरखा संघाच्या इमारती आढळतात. त्या काळात सेवाग्राम आश्रमातून समाज आणि राष्ट्रकार्यार्थ जी किमया साधली ती खरोखरच अमूल्य स्वरूपाची आहे. अखिल भारतीय चरखा संघाचे सचिव जे.सी.कुमारप्पा, महादेवराव कोल्हे, महादेवराव कर्डीकर यांनी तर सत्याग्रहातही महत्वाची भूमिका बजावली.

ग्रामस्वच्छता - खरा भारत हा खेडयांमध्ये वसलेला आहे असे गांधीजी म्हणत. कारण भारतीय अर्थव्यवस्थेचा कणा खेडे आहे. आणि हा कणा जर अस्वच्छ असेल तर रोगराई उद्भवेल आणि मृत्यूदराचे प्रमाण वाढेल. त्यासाठी स्वच्छता हे तत्व आपण अनुसरायला हवे स्वावलंबना बरोबरच निटनेटकेपणा स्वच्छता या मूल्यांचा त्यांनी सतत आग्रह धरला. त्याचे मूर्त रूप आज आपणांस सेवाग्राम आश्रमात पहावयास मिळते.

राष्ट्रभाषा प्रचार- संपूर्ण देशाला एकतेच्या आणि अखंडतेच्या सूत्रात बांधण्याकरीता कोणतीही एक राष्ट्रभाषा असणे अनिवार्य आहे. आणि हिंदी भाषेमध्ये प्रांताप्रांतात विभागलेल्या देशवासीयांना एकत्र आणण्याचे सामर्थ्य आहे असे वेळोवेळी गांधीजींनी लोकांना सांगितले सेवाग्राम आश्रमातून त्यांनी राष्ट्रभाषा हिंदी चे महत्व लोकांना पटवून दिले.





कुष्ठसेवा— सेवाग्राम आश्रम ही खऱ्या अर्थाने पुण्यभूमि होती. संस्कृतीचे विद्वान वेदशास्त्राचे गाढे अभ्यासक आणि परचुरे शास्त्री हे गांधीजीचे अनुयायी होते. स्वातंत्र्य चळवळीत सत्याग्रही असणाऱ्या परचुरे शास्त्रींनी कारावासही पत्करलेला होता मुळशी आणि कोयना धरणाच्या बांधासाठी त्यांनी सत्याग्रह केला होता. पुढे ज्यावेळी ते कुष्ठरोगाने पिडीत झाले, त्यावेळी समाजाकडून ते उपेक्षित आणि दुर्लक्षित झाले. अशा रुग्णांवर उपचार करण्यासाठी डॉक्टरही कचरत असत. म्हणून ते सेवाग्राम आश्रमात आले. गांधीजींनी त्यांना आश्रमात सामाऊन घेतले. इतकेच नव्हे तर नियमितपणे स्वतः त्यांची मनोभावे सेवा केली. आणि आश्रमवासियासमोर आदर्श प्रस्थापित केला. यातूनच स्फूर्ती घेऊन पुढे मनोहर दिवाण यांनी दत्तपूर येथे १९३६ मध्ये भारतातील पहिले कुष्ठरोग सेवा केंद्र सुरु केले. हे केंद्र फक्त इलाजासाठी राहिले नाही. तर केंद्राने अनेकांना प्रेरणा देण्याचे कार्य केले. येथूनच पुढे अनेकांनी या कार्याला स्वतःस वाहून घेतले त्यात शिवाजीराव पटवर्धन, बाबा आमटे अशी शेर समाजसेवकांचा उल्लेख करता येईल.

ग्रामोद्योग—१९३४ मध्ये वर्धा येथील मगनवाडीत अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघ स्थापन झाला. या संघाचे मुख्य उद्दिष्ट खेड्यांची स्वायत्तता लक्षात घेऊन संघटन आणि ग्रामोद्योगाला पुनरुज्जीवित करून चालना देणे आणि ग्रामीण जनतेचा सर्वांगीण विकास साधणे हा होता. त्यासाठी मगनवाडीत उद्योग भवन स्थापन करण्यात आले. त्यात हाथ कुटाई,पिसाई, तेलघाणी, ताडगूळ, मधुमक्षिका पालन, कताई, बुनाई, कुंभारकाम, सावण आणि कागद बनविणे असे कार्य चालत असे पुढे महात्मा गांधी वर्धा येथून सेवाग्राम येथे राहावयास आले आणि त्यांनी आश्रमामध्ये वरीलप्रमाणेच अन्न, वस्त्र, आवास आणि इतर गरजा यासंदर्भातील ताडगूळ उद्योग, कुंभारकाम, मधुमक्षिका पालन, कताई, बुनाई, गोसेवा असे ग्रामोद्योग सुरु झाले. आश्रमातील पेरुच्या बगिच्या मधुमक्षिका पालन उद्योगाला सुरुवात झाली हा बगीचा "मधुशाला" या नावाने ओळखला जाऊ लागला. याचे प्रमुख बलवंतसिंह हे होते मधुमक्षिका शेतकऱ्यांना सहकार्य करतात. आणि म्हणून त्यांची योग्य ती काळजी आपण घ्यावयास हवी. या दृष्टीने त्याचे प्रयोग आश्रमात सुरु झाले. म्हणून मधुमक्षिकांना लाकडी पेटीत ठेवणे आणि सहद कसे तयार करावे याचे शिक्षण शेतकऱ्यांना दिले.या उद्योगामुळे लोकांना एक उदरनिर्वाहाचे साधन प्राप्त झाले. हाताने धानकुटाई करून तांदूळ काढणे, हात चक्कीचा उपयोग करून गव्हाचे पीठ काढणे, लाकडी बावूंपासून कागद तयार करणे, चामड्यापासून पादत्राणे तयार करणे असे प्रयोगही आश्रमात चालू लागले. याशिवाय कुंभारकामाचा उद्योगही आश्रमात सुरु झाला. आश्रमामध्ये मातीपासून सुबक अशी मातीची भांडी तयार होऊ लागली. वर्धा येथील मांडगाव, वाघोली या खेड्यातील लोकांना आश्रमातून कुंभारकामाचे शिक्षण दिल्या गेले. त्यामुळे लोकांनी ती कला आत्मसात करून कुंभार उद्योगाला चालना मिळाली.

गोसेवा— सेवाग्राम आश्रमात गोशाळा स्थापन करण्यात आली त्याचे कार्य बलवंतसिंह, विजयावहन पटेल, सुशीला नायर हे पाहत असत. "आश्रमातील गार्डना सावरमती, गंगा, जमुना, गोदावरी,चंद्रभागा अशी नाव होती. गंगा, जमुना, गोदावरी या तीन गार्डपासून सुरु झालेली गोशाळा अत्यावधीत मोठया प्रमाणात विस्तारीत झाली. गोसेवा संघ केवळ गोसेवा करणाऱ्यांची नव्हे तर स्वातंत्र्य आंदोलकांची महत्वाची संस्था होती."६

नयी तालीम संघ—"जीवनासाठी शिक्षण आणि जीवनाद्वारे शिक्षण" हा नयी तालिमाचा उद्देश होता. या संघाने भारत छोडो आंदोलनातही सहभाग घेतला. आर्यनायकमजी आणि आशादेवी आर्यनायकम यांनी महत्वाचे केले.





ग्रामोद्योगाचे विशाल ध्येय नजरेसमोर ठेऊन आश्रमाने कार्य केले. या कार्याला जालमसिंह छत्रे, बापुराव देशमुख, गोपाळराव शिनगारे, दशरथ गवई, बंकिम ताकसांडे यांनी या कार्याला फार मोठे बळ दिले. अशा प्रकारे सेवाग्राम आश्रमातून विविध प्रकारचे रचनात्मक कार्य करण्यात येईल.

भारतीय स्वातंत्र्य लढयाचे सत्ताकेंद्र

सेवाग्राम आश्रमाचे हे वैशिष्ट्य नमूद करीत असतांनाच या आश्रमाने स्वातंत्र्यलढयातही महत्वाची भूमिका बजावली. विधायक कार्याची योग्य अंमलबजावणी झाली तर त्याचे पर्यवसान हे लवकरच स्वराज्यात होईल असे गांधीजी म्हणत. आश्रमातून हे विधायक आणि रचनात्मक कार्य झालेपण त्याच बरोबर स्वातंत्र्य सेनानींची एक फार मोठी परंपरा या आश्रयाने देशाला दिली. वैयक्तिक सत्याग्रहासाठी विनोबा भावेंची निवड त्यांनी याच आश्रमातून केली. याप्रसंगी विनोबा भावे हे जरी पवनार येथील परमभ्रम आश्रमात राहत होते तरी या सत्याग्रहाचे सर्व सूत्रसंचालन सेवाग्राम आश्रमातूनच झाले.

ब्रिटीश सरकारविरुद्ध पुकारण्यात आलेला अंतिम लढा म्हणजे "चले जाव आंदोलन" होय. त्याचा निर्णय महात्मा गांधींनी सेवाग्राम आश्रमातच घेतला होता. एका देशव्यापी आंदोलनाला सुरु करण्याची प्रतिज्ञा अहोभाग्य सेवाग्राम आश्रमाला लाभले. विधायक आणि रचनात्मक कार्यामध्ये सतत स्वतःला मग्न ठेवणाऱ्या आश्रमवासियांमध्ये राष्ट्रभक्तीचा जिवंत झरा होता. याची प्रचिती आपणास येते कारण गांधीजींनी आश्रमवासियांना आवाहन केले होते की, संकल्पित आंदोलनात सर्वांनी सहभागी व्हावे अन्यथा त्यांनी आपल्या घरी परतावे. परंतु एकही आश्रमवासी आश्रम सोडून गेला नाही. उलट त्यांनी भारत छोडो आंदोलनात सक्रिय सहभाग घेतला.

३० एप्रिल १९३६ ते २५ ऑगस्ट १९४६या दहा वर्षांच्या काळात महात्मा गांधी हे सेवाग्राम येथे वास्तव्यास होते. त्यांच्या वैचारिक स्पशानि ही भूमी पावन झालेली होती. त्यांनी स्थापन केलेल्या लोकांना मार्गदर्शक ठरलेल्या या आगळ्यावेगळ्या आश्रमाचा संदेश काय होता त्याबद्दल न्या.चंद्रशेखर धर्माधिकारी लिहितात, "संघर्ष व रचना" या सेवाग्राम आश्रमासाठी एकाच नाण्याच्या दोन बाजू होत्या. ज्या संघर्षात नंतर रचना करण्याची कुवत नसते तो संघर्ष नपुंसक असतो व ज्या रचनात्मक कार्यक्रमात सर्व प्रकारच्या गुलामगिरी विरुद्ध किंवा अन्याय, कुशासन व भ्रष्टाचार याविरुद्ध संघर्ष करण्याच शक्ती नसते. तो कार्यक्रम कुचकामी असतो. हा सेवाग्राम आश्रमाचा संदेश होता. आणि हा संदेश सांगण्यास ती वास्तू आपल्याला साद घालत आहे. आश्रमातील आदीनिवास बापूकुटी, बाकुटी, आखरी निवास, परचुरे शास्त्री कुटी, महादेव कुटी त्याची साक्ष देतात. जीवनातील पावित्र्य उदात्त आणि दिल्य तत्वे येथे दिसून येतात. या आश्रमामध्ये त्या काळा इंग्लंडमध्ये उमराव लॉर्ड लेथियन यांनी या आश्रमात तीन दिवस व्यक्तीत केले होते ते लिहितात. "मी तीन दिवस सेवाग्राम आश्रमात राहिले ते तीन दिवस जसे शांतीत गेले तसे कुठेही गेले नाहीत. असा एकांतवास मला कधी मिळाला नाही."७

ज्या आश्रमातून गांधीजींनी ग्रामोद्योगाला अंधश्रद्धा निर्मूलन, अस्मृश्यता निवारण, खादी निर्माण व खादी प्रसार यासाठी कार्य केले. या आश्रमाने भारतीय स्वातंत्र्य लढयाची राजधानी म्हणून १० वर्षे जी भूमिका बजावली ती अत्यंत मोलाची आहे.

संदर्भटीपा—

१. ब्याज कमलनयन -काकाजी- बापू-विनोबा
२. Sevagram Ashram Pratishthan (Pustika) पृ.२
३. न्या. चंद्रशेखर धर्माधिकारी (लेख -स्वातंत्र्य लढयाची राजधानी) लोकमत अमृतमहोत्सवी विशेषांक १६ जून २०११





४. लेख दै. लोकमत
५. बैस डॉ. वीरेंद्र वर्धा जिल्हयातील स्वातंत्र्य आंदोलनाचा इतिहास पृ.१७५
६. किल्ला पृ.१८८
७. लेख असा आहे सेवाग्राम आश्रम – दै. लोकमत
संदर्भ ग्रंथसूची.
चौधरी, डॉ. कि.का. महाराष्ट्र गॅझेटिअर (वर्धा जिल्हा)
दार्शनिक विभाग महाराष्ट्र शासन १९९२
गांधी महात्मा— माझ्या स्वप्नांचा भारत —परमधाम प्रकाशन पवनार १९६९
बैस वीरेंद्र — वर्धा जिल्हयातील स्वातंत्र्य आंदोलनाचा इतिहास— मंगेश प्रकाशन नागपूर
कथले प्रकाश — लेख— वर्धा श्रम आणि आश्रम संस्कृती — लोकराज्य—ऑक्टोबर २०१२
दैनिक लोकमत — वृत्त १६ मार्च २०१३
दैनिक लोकमत— १६ जून २०११
सेवाग्राम आश्रम पुस्तिका
बजाज कमलनयन —काकाजी—बापू—विनोबा



[Handwritten Signature]
Principal
Arts & Sci. College
Kurha

Impact Factor-7.675 (SJIF) ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

June -2020

ISSUE No-CCXXXVIII (238)

Impact of COVID-19 on World: Problems, Challenges and Opportunities

Prof. Virag S. Gawande
Director
Chief Editor

Dr. Gopal S. Vairale
Guest Editor
Principal

Dr. Omprakash B. Munde
Editor
HOD, Geography

Dr. Sangita Bhangdiya Malani,
Executive Editor
HOD, Political Science

Dr. Sachin J. Holey
Executive Editor
HOD, Sociology

Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera, Dist. Amravati.

This Journal is indexed in :

- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit www.aadharsocial.com

Aadhar PUBLICATIONS





INDEX

No.	Title of the Paper	Authors' Name	Page No.
1	यवतमाळ जिल्हयातील हवामानाचा मानवाच्या आर्थिक क्रियांवर होणाऱ्या परिणामांचे विश्लेषण	प्रा. दिपक उ. अंबोरे	1
2	मेळघाट प्रदेशातील वसाहतीच्या घरांची दिशानिहाय स्थितीचा भौगोलिक अभ्यास.	डॉ. प्रमोद म. बावणे	7
3	'महागष्टातील शेतीचे स्वरूप'	डॉ.एन. आर. भिंगारे	12
4	कोरोनाचा भारतीय अर्थव्यवस्थेवरील परिणाम	निशिकांत चंद्रलाल बुल्ले	16
5	कोरोना आणि स्थलांतरीत मजुरांचा प्रश्न	प्रा. डॉ. डी. एस. नामूर्ते	21
6	टाळेबंदी आणि कौटुंबिक हिंसाचार	प्रा. किरण राजेंद्र नाईकनवरे	27
7	महिला सक्षमीकरण ; आव्हाने आणि संधी	प्रा. डॉ. रश्मी गजरे	35
8	बहुआयामी चिंतनशील व्यक्तीमत्त्व विम्बरत्न डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर	डॉ.संभाजी संतोष पाटील	38
9	टाळेबंदीचा भारतीय अर्थव्यवस्थेवरील परिणाम	डॉ. एस.टी. वराडे	45
10	पर्यावरणावर शहरीकरणाचा प्रभाव	सचिन एन.भोबे / डॉ.विजय के. टोम्पे	51
11	कोरोना विषाणू व मेळघाटातील स्थलांतरीत आदिवासी	डॉ. रोहिणी यु. देशमुख	56
12	कोरोनाचा शिक्षणावर झालेला परिणाम	प्रा.डॉ.गोकुल शामराव डामरे	60
13	कोरोनाचा भारतीय सामाजावर परिणाम	डॉ. रमेश विष्णू मोरे	64
14	महिला सक्षमीकरणात गृहअर्थशास्त्र विषयाचे योगदान	प्रा. डॉ. पुनम देशमुख	67
15	कोरोना आणि अष्टांगयोग	डॉ. बन्सी लव्हाळे	70
16	"वैश्विक ताप वृद्धि का भारतीय कृषि पर प्रभाव" एक भौगोलिक अध्ययन	डॉ. आर.एस. सिसौदिया	75
17	सामाजिक दृष्टी से संगीत की अहम भूमिका	डॉ.प्रसाद शं. मडावी	79
18	कोविड १९ आणि पर्यटन व्यवसाय	डॉ. सुनील आखरे	83
19	भारत की विदेशनीति आत्मविश्वासी हो	डॉ.विभा देशपांडे	87
20	अमरावती शहरातील लोकजीवनावरील कोरोना प्रादुर्भावाचे विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ. अरुणा प्र. पाटील	90



**भारत की विदेशनीति आत्मविश्वासी हो****डॉ.विभा देशपांडे**

कला व विज्ञान महाविद्यालय कुन्हा

भारत की विदेश नीति की नींव पंडित नेहरू के वैश्विक निःशस्त्रीकरण, गुटनिरपेक्षता और पंचशील के सिद्धांतों पर रखी थी। यहाँ हम कह सकते हैं कि उपरोक्त सभी विचारों को प्रसारित करने में भारत असफल रहा, तो ये कहना काफी हद तक सच है। पंचशील के सिद्धांतों की शुरुआत से ही चीन द्वारा धिज्जियाँ उड़ाई गईं। वैश्विक निःशस्त्रीकरण की बात करें तो वो बराबर वाले में ही हो सकती हैं। गुटनिरपेक्षता की बात करें तो यह नीति भी अप्रासंगिक दिखाई देती है, क्योंकि ये नीति अपनाते के बाद भी शीतयुद्ध के दौरान भारत का पलड़ा रूस की ओर झुका था। इससे स्पष्ट होता है कि विदेशनीति में राष्ट्रहित को सर्वोपरि माना जाता है, आदर्शवाद को नहीं। विदेशनीति तय करते समय राष्ट्रहित सर्वोच्च स्थान देना चाहिए किंतु हमारा देश एकमात्र ऐसा देश है जहाँ विदेशनीति निश्चित करते वक्त सामाजिक हितों को भी ध्यान में रखा जाता है।

भारत में विदेशनीति का निर्धारण तीन विभागों द्वारा किया जाता है—१. प्रधानमंत्री कार्यालय २. राष्ट्रीयसुरक्षा परिषद ३. विदेश विभाग, यहीं से सारी नीतियाँ चलाई जाती हैं। परंतु दूतावासों में बैठे राजनयिक अपनी समझ से जो निर्णय ले लेते हैं वही उचित समझा जाता है। परिणामस्वरूप नीतियों का संचालन सुचारू रूप से नहीं होता परिणाम स्वरूप हमारी मानसिकता नकारात्मक हो रही है। और हम ऐसी परिस्थितियों की कामना करते रहते हैं कि बिना कुछ किये विश्व हमारे कदमों में गिर जाए, परंतु ये कामनाएँ मन को बहलाने के लिए ठीक हैं। वास्तविकता कुछ और ही है। वर्तमान काल में विदेशनीति के तरफ नजर डालें तो वो घंटों में परिवर्तित हो रही है, मौसम जिस प्रकार बदलता है, वैसे लेकिन हमारी विदेशनीति इतनी जल्दी परिवर्तित नहीं होती।

इस समय कोविड १९ के चलते सारी दुनिया परेशान है, अमेरिका भी काफी कमजोर हो चुका है, जिसका फायदा चीन उठा सकता है, और पिछले अनेक वर्षों से भारत-चीन सीमा पर चीन आतंक मचा रहा है। ऐसी परिस्थिति में चीन को मिलने वाली ये बढ़त भारत को और अधिक नुकसान पहुंचा सकती है इसलिए भारतने वैश्विक गठबंधन का नया खेल खेला। कोविड १९ पर विचार, मंथन करने हेतु अमेरिका के नेतृत्व में भारत सहित दुनियाँ के सात बड़े देशों की बैठक हुई जिसमें कोविड १९ के प्रति चीन द्वारा जो नकारात्मक भूमिका थी उसको उजागर करना था। साथ ही भारत मेडिकल कुटनीति के द्वारा सार्क देशों को एक बार फिर एक मंच पर साथ लाने में सफल होता हुआ दिखाई देता है। परंतु सिर्फ इतने से काम नहीं चलेगा क्योंकि २०२० के बाद से

चायना का ग्राफ आर्थिक दृष्टि से बढ़ा है। ऑटोमोबाइल में चीन प्रथम क्रमांक पर है और संयुक्तराज्य अमेरिका का १६वाँ क्रमांक आता है। संयुक्तराज्य अमेरिका शक्तिशाली बना तो उसको वलडवॉर जीतकर दिखाना पडा, जापान को सहायता देनी पडी काफी समय तक शीतयुद्ध चलता रहा।

संयुक्त राष्ट्र के चीफ का कहना है कि, कोविड १९ के चलते शक्ति West to East आ सकती है, पूरे दुनिया को ये प्रभावित कर रहा है। पूरे विश्व की Top 10 Country के तरफ नजर घुमाये तो जागतिक स्तर पर सबसे अधिक शेअर चीन के हैं—





२०१८ के रिपोर्ट अनुसार

अनुक्रमांक	देश	शेअर प्रतिशत में
१	चीन	२८.४
२	संयुक्त राज्य अमेरिका	१६.६
३	जापान	७.२
४	जर्मनी	५.८
५	साऊथ कोरिया	३.३
६	भारत	३.०
७	इटली	२.३
८	फ्रांस,	१.९
९	इंग्लड	१.८
१०	मेक्सिको	१.५

चायना जागतिक स्तर पर एक शक्तिशाली देश के रूप में उभरकर सामने आ रहा है । अपनी शक्ति को बढ़ाने हेतु छोटे-छोटे राष्ट्रों को सहायता कर रहा है । उदा.ओटावा(कॅनाडा) को मेडिकल मॉस्क,प्रोटेक्ट क्लाथ इत्यादि की सहायता कर रहा है । उसी तरह स्पेन को भी सहायता प्रदान कर रहा है।२०१८ से चायना की ग्रोथ बढ़ रही है,लोकसंख्या कम हो रही है २०७९ तक चीन और भारत की बराबर लोकसंख्या रहेगी उसके बाद चायना की कम हो जायेगी ऐसा भाकित किया जाता है। चायना सस्ते में माल बनाता है,२०५० में चायना वर्ल्ड एकानामी सुपर पाँवर होगा । भारत के सुपर पाँवर बनने की ११प्रतिशत संभावना है ।

ऐसा सुर आये दिन सुनने को मिलता है कि ,चायनीज वस्तुओं को बँन कर दिया जाय, चीन के सामान पर बहिष्कार डाला जाय । परंतु क्या हम ऐसा कर सकते है? बाबा रामदेव भी कहते रहते है कि चायना का माल हम नागरिक खरीदना बंद कर सकते है । सरकार कोई कदम ना ले क्योंकि सरकार रूल्स और रेग्युलेशन के खिलाफ नहीं जा सकती ये बाबा रामदेव को मालूम है, परंतु हम तो कर सकते है । लेकिन इससे चीन की नाराजगी का भी हमें सामना करना पड़ेगा ।

जागतिक स्तर पर चीन ऐसा देश है कि आर्थिक दृष्टि से सम्पन्नपूर्ण है,बुहान इस शहर में उत्पादन को लगनेवाला कच्चा माल बड़े-बड़े उद्योग धंधे सभी एक जगह स्थित है । परिणामस्वरूप ट्रांसपोर्ट पर कम खर्च आता है,इसलिए वो सस्ती किमत में माल बेच सकता है । शुरू से ही पूर्ण प्लॉनिंग के साथ उसने अपना विकास किया । वही हमारे देश में यदि किसी वस्तु का उत्पादन करते हैं तो, एक शहर में सारा कच्चा माल नहीं मिलता विविध शहरो से कच्चे माल की व्यवस्था करनी पड़ती है,जिससे ट्रांसपोर्ट पर काफी खर्च आता है,इसलिए वस्तुओ की किमत ज्यादा होती है ।

जागतिक स्तर पर बहुतांश उद्योग धंधों को चीन द्वारा कच्चा माल दिया जाता है,अतः आर्थिक दृष्टि से वो मजबूत है । हमारे भी बहुत से उद्योग चीन पर निर्भर है ।

निष्कर्ष — उद्योग धंधो का विकास करना ,जागतिक बाजारपेठ उपलब्ध करना इसके लिए सिर्फ देशभक्ती काफी नहीं इसके लिए हमको पर्याय ढुंढना होगा, उपाय योजना करनी होगी — १.प्रथम तो हमें आत्मनिर्भर बनने के लिए शक्तिशाली बनना होगा ।



३.चायना से जो माल आयात करते है उसे कम कर ,अन्य कौन-कौन से देशो से वो माल आयात कर सकते है इसके तरफ ध्यान देकर धीरे-धीरे चायना से माल आयात करना बंद करना होगा।

३.चीन में युवाओ की संख्या कम हो रही है,वहीं जागतिक स्तर पर भारत में सबसे अधिक युवा है इसका फायदा वैज्ञानिक संशोधन कर बडे -बडे उद्योगो का विकास कर माल निर्यात करे,कच्चा माल सस्ते दामों में आयात करे।

४.हमारे युवा सरकारी आफिसर्स बनते है तो ऐसे कानून बनाये की जिन कानूनो से हमारी आर्थिक शक्ति मजबूत हो, हम दूसरे देशो पर निर्भर ना रहे।

५.सरकार मॅक इन इंडिया बनाने की कोशिश कर रही है,अगर ये सफल होता है तो भारत बहुत कुछ कर सकता है।

६.दुनिया में नई चीज निकलती है तो ८०प्रतिशत चायना से ही निकलती है। हमारी सरकार को अपनी युवा पीढी को नवनवीन संशोधन के लिए प्रेरित करना होगा ,आर्थिक सहायता करनी होगी,जिससे हम आत्मनिर्भर बन सके।

आज चायना मे बूढे लोगो की संख्या बढ रही है,जिससे उनके काम करने की शक्ति क्षीण हो रही है। हमें देशभक्ती बोलकर नही मिलजुल कर काम करके दिखलानी होगी ,हम सबको मिलकर जमकर काम करना होगा। नही तो देश की परिस्थिती बिगड सकती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

देशोन्नती समाचार पत्र-१०,११,१२ मई

- भारताचे परराष्ट्र धोरण -डॉ.शैलेन्द्र देवळणकर
- श्री प्रशांत धवन सर व्हिडिओ- भारत ,चीन आर्थिक संबंध



24/1/20
Principal
Arts & Sci. College
Kurha

Impact
Factor
6.293

ISSN 2349-638x

Peer Reviewed And Indexed

**AAYUSHI
INTERNATIONAL
INTERDISCIPLINARY
RESEARCH JOURNAL
(AIIRJ)**

Monthly e-Journal

VOL-VII

ISSUE-XII

Dec.

2020

Address

• Devgiri Nagar, Ambajogai Road, Latur.
• Tq. Latur, Dis. Latur 413512 (MS.)
• (+91) 9922455749, (+91) 8999250451

Email

• aiirjpramod@gmail.com
• aayushijournal@gmail.com

Website

• www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE



15	Dr. Nisha Soni	Comparison of Culture Philosophies of Spengler and Kroeber	50 To 51
16	Dr. Pravin J. Nadre	Parbhani and Hingoli districts: Ancient times	52 To 54
17	Dr. K. H. Kulkarni	Teacher Evaluation A Study of Teacher Evaluation of Secondary School in Nanded District	55 To 57
18	Dr. S. R. Agashe	Aggression and Violence in Sports	58 To 61
19	Dr.Sujata Sampatrao Ghuge & Dr.Kavita Raghunathrao Phad	A Review of Conceptual Study of Garbhasambhav Samagri	62 To 63
20	Dr. Pravin J. Nadre	Parbhani Districts in Mughal Era	64 To 67
21	Rakhi Ranjith	Issues and Challenges of Public Health Expenditure in India	68 To 73
22	Dr. Jagannath Dagadu Barkade	Population Distribution of Yerala River Basin: A Case Study of Southern Yerala Basin	74 To 79
23	Dr. Arvind Kumar Sharma & Dr. Rekha Sharma	Water Pollution and Its Effect on Aquatic Life	80 To 93
24	Dr.Varsha Sutar	Review on Retinopathy in Diabetis Mellitis	94 To 96
25	Dr. Sharad B. Ingawale	Major Issues and Concerns in Today's Teacher Education Programme	97 To 99
26	Ramandeep Kaur	Role of The Patiala State Against The Namdhari Movement	100 To 106
27	Ajay N. Abhyankar	Quest for Identity in The Novels of Angela Carter	107 To 109
28	Prof. Kishor M. Taksande	Agro Tourism: A new trend in Tourism	110 To 112
29	Dr. T.G. Ghatage	Growth and Development of Co-Operative lift Irrigation Schemes and its Impact in Shirol Tehsil of Kolhapur District	113 To 116
30	Dr. Ajay P. Kolarkar	Comparative Studies of Physical Education Teachers among the Amravati and Nagpur Division and Their Problems	117 To 118



Quest for Identity in The Novels of Angela Carter

Ajay N. Abhyankar

Assistant Professor
Dept. of English
Arts & Science College, Kurha

The aim of the research paper is to study the women's character and her quest for identity under patriarchal oppression in a male-dominated society in the novels of Angela Carter. The identity of the woman as female is based on sexuality and gender roles which are formed by patriarchy. The paper attempts to reflect a woman's quest for self-identity by the use of magical elements like a fairy tale, fantasy, incest, puppet show, and imaginations. It describes the construction of female identity for women in a patriarchal system from a critical point of view. It, therefore, becomes necessary to learn the background that how does women lost her identity and subsequently her role to search her identity. There are two thoughts generally present in the minds of people. These two thoughts are women's view of sexuality and society's view on women's sexuality. These thoughts create a gender-based society and create a problem related to a woman's identity. These two categories are so strong that they create gender divisions and have no other alternative genders. The problems of men and women are avoided in the formation of gender roles. In this process, the role of the female is considered subordinate to that of males. It creates a social distinction and soon became traditions. This develops two-phases that are, sexuality and gender roles in society. As a result, society accepts sexuality about gender roles and described them as male and female. The male is considered superior and the female is sexually inferior to that of males. Female and male roles are thus cleared by this social structure. The social structure creates pressure in the relations and this creates the point of challenge and turns into the clash between sexuality and gender roles.

The so-called new gender-based social system disturbs the identity of women. The women thought that she has lost her identity and they don't have the power of decisions. It disturbs a woman's identity more than the man's identity because it accepts man as superior to woman. The inferior woman is subordinated to man. The gender phenomenon subjects woman to social oppression in her activities and decisions. She is forcibly given the subordinate roles like mother, wife, and sister to that of male authority. Thus she lost her identity in society. In this way, society develops female sexual identity and gradually forces her to follow other responsibilities related to women's roles. That is to say, society expects the woman to behave as typical females ignoring her sexual identity. This creates the clash between her perception of sexuality and the view of society on woman's sexuality. Angela Carter, in her novels dealt with the same theme of the quest of the identity of the woman. When we read the works of Angela Carter, we come across the common point that, in most of her works, Carter depicts women's oppressive position and similarly her opposite view against the male authority in society. In her work, Carter always tries to presents the place of women in a proper manner. Carter believes that sexual identity is part of the process of society. So Carter works on how society affects women through her novels. She highly emphasizes the place and the subordinate roles of women in society. She does not hesitate to describe the female body as a material object. In this way, she claims that gender is a social construct that is based on biological sex differences. It reflects how male authority is overpowered over her identity through gender division. Carter also highlights the idea that the woman is created as an object so to exercise the female role by male society. Carter also

attacked the role of patriarchy which is based on the power structure that disturbs the identity of a woman's sexuality. She has analyzed patriarchy and criticized the roles of females, male and society. She has explained the role of the family as the basis of sexual actions that results in the separation of women and the dominance of male power. In her novels woman is shown who innocently accepts her female identity in the gender-based society and thus divided into the female image and separated from the rest of the society. Her sexual position and desire which is a part of her identity are ignored by the family and society and thus she is separated from her own identity. As opposed to man, the woman is given no respect and identity in society. This creates an atmosphere for the women to search for her identity and recognition.

As Gamble explains in her book, Carter plays with the roots of the patriarchal system which constructs even individuals' identities. She points to the idea that all system is based on the superiority of the male gender which is created by sex difference. She refers to the association of power with the male individual as opposed to passivity and submission with the female. She places the rape as the climax and makes her closure with a confession of an incestuous relationship. Carter's point is to emphasize the understanding that women are exposed to make decisions and commands. She is subject to him in all senses. No matter how violent the act is, "rape is a sign of male power and authority over female" The matter is that male domination is based on sexual grounds. Carter points to the sex violence association to ensure male power in gender relations. What it conveys is about the roles of male and female genders within and outside the house.

To clarify, patriarchy is based on the power structure which gives no recognition for woman's sexuality. In line with this, all individuals are subject to the castration process which inflects identities according to genders. A woman is expected to become conformists as the female gender even though patriarchal gendering ignores her sexuality. Her womens sexual formation develops quite in parallel to the socially accepted path. Carter aims at projecting woman who is both Eve and at the same time any woman under patriarchy. No matter where

her woman lives, she acts as if she is born with the alienated self that dictates her to appeal best to male taste. Carter reflects the alienation of a conventional woman through Melanie. She criticizes that conventional women are not even aware that they live with false identities. Their minds are fully kept with the idea of being complementary to men in some ways. They are not aware of their perceptions of sexuality. Thus they are alienated from their pure identity. Thus she depicts the possible results of oppression on women. Women who are alienated from their conventional female image could reveal their desires through unacceptable ways. Thus Carter points to the fact that women are doomed to be alienated into the female image. Any heterodoxy by women causes further oppression and alienation.

To conclude, Carter objects to patriarchal oppression which castrates women's sexuality to ensure male superiority. She opposes the dictation of sexual preferences because it ignores women's perception of sexuality. Women are given no chance to explore their perceptions of sexuality. The women who are expected to become the female are alienated into false identities. They become alienated from their pure identities. That is why Carter opposed the idea of gender-based on biological sexes. She also points out the ambiguities in women's position in society through her protagonist Melanie. She specifically opposes the financial dependence of women on men. Carter simply suggests equality for females and males. She supports the idea of privacy for women to ensure freedom of sexual preference, tendency, and behavior. She gives the idea that the problem of oppression especially on women's sexuality could be worked out through independence for women and equal rights in education and the house. Thus she means to destroy the idea of gender as a social construct because it leads women into alienation.

Feminist ideology is mainly based on the idea of equal rights of male and female. The works by feminist authors deal with women's oppression in a male-dominated society. The patriarchal system which is based on male superiority over the female does not let a woman have the same rights as men. Women's lack stems from social disadvantages like financial dependence, exclusion from education and lack of privacy in the house. As it is clear, a woman



who is accepted as "female gender" is given no chance to explore her sexuality. She is led to the female image that is prescribed by patriarchy. She is supposed to have the sexual perception expected from her. Thus woman is described with the idea of lack in comparison to man's superiority. Accordingly, she is subordinated to male in all her deeds. She is thought to be a complement to man's existence. The idea of inferiority of women by biology brings the subject of identity. The only way women could be complete is through marriage. Through marriage, she gains identity. However, even the idea of marriage means the dependence of the female on the male. The problem of woman's identity is depicted in the development of female sexuality, sexual perceptions and gender roles within society. Women are expected to choose the right sexual path and behave according to the female gender. Thus they are alienated into false identities.

As postmodern feminist authors, Angela Carter reflects women's oppression in her novels. Carter describes a woman who is on the verge of developing sexual identity. She depicts a young woman who is exposed to the oppression of society she lives in. Carter approaches the matter from the conformist's point of view, works in terms of women's sexual preference, perception and gender roles. Carter's novel has a postmodern style since she displays the story of the female protagonists. Furthermore, Carter's works mock the fairy tales which are constituted suitably for the patriarchal system. Nevertheless, she unites with her female identity alienated from pure self. She questions the system of belief as to the origin of oppression on the female. The matter of sexual perception is the first thing that is dictated by society. Since sexuality is the first determiner of identity, social norms firstly dictate one's sexual preferences. Heterosexual hegemony is so strictly defined that individuals are supposed to choose one way according to their biological sex. What Carter criticizes is this logic of constituting genders according to biological sexes. She criticizes that sexual perceptions of individuals are ignored in the development of sexuality thus they are pushed into alienation.

In this way, she challenges gender roles in the traditional sense. She criticizes the simplistic mentality that a woman is in the kitchen to prepare

food and take care of everything in the house. In other words, she criticizes the male mind that accepts a woman who is subordinate to him. That is why, in traditional societies, the only way for women to gain identity is to get married. However, she is subordinated to her husband this time. Moreover, she is subject to her husband even in discovering her sexuality, which makes her an identity that belongs to her husband. It makes her an identity although it is a false identity. Thus it is proved that the roles attached to females are so restricting that women have no identity.

References:

- 1) Benson, Stephen Frank. *Cycles of Influence: Fiction, Folklore, Theory*. Detroit: Wayne State University Press, 2003. Print.
- 2) Bristow, Joseph. *The Infernal Desires of Angela Carter: Fiction Femininity, Feminism*. New York: Longman, 1997. Print.
- 3) Cantrell, Samantha E. *Housing Sexuality, Domestic Space and the Development of female sexuality in the fiction of Angela Carter And Jeanette Winterson*. Texas A & M Uni. 2004. Print.
- 4) Gamble, Sarah. *The Fiction of Angela Carter*. Cambridge: Palgrave Macmillan, 2001. Print.
- 5) Peach, Linden. *Angela Carter*. London: MacMillan, 1997. Print.
- 6) Showalter, Elaine, *A Literature of Their Own: British Novelists from Bronte to Lessing*, London: Virago, 1978. Print.
- 7) Bradfield, Scott. "Remembering Angela Carter." *Review of Contemporary Fiction*, 1994. Web. 11 June 2009. Print.
- 8) Butler, Judith. *Gender Trouble: Feminism and the Subversion of Identity*, New York: Routledge, 1990. Print.
- 9) Cantrell, Samantha E. *Housing Sexuality, Domestic Space and the Development of Female sexuality in the fiction of Angela Carter and Jeanette Winterson*. Texas A & M Uni. 2004. Print.



Principal
Arts & Sci. College
Kurha

Impact
Factor
6.293

ISSN 2349-638x

Peer Reviewed And Indexed

**AAYUSHI
INTERNATIONAL
INTERDISCIPLINARY
RESEARCH JOURNAL
(AIIRJ)**

Monthly e-Journal

VOL-VII

ISSUE-XII

Dec.

2020

Address

• Devgiri Nagar, Ambajogai Road, Latur.
• Tq. Latur, Dis. Latur 413512 (MS.)
• (+91) 9922455749, (+91) 8999250451

Email

• aiirjpramod@gmail.com
• aayushijournal@gmail.com

Website

• www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE



Principal
Arts & Science College
Kurha

15	Dr. Nisha Soni	Comparison of Culture Philosophies of Spengler and Kroeber	50 To 51
16	Dr. Pravin J. Nadre	Parbhani and Hingoli districts: Ancient times	52 To 54
17	Dr. K. H. Kulkarni	Teacher Evaluation A Study of Teacher Evaluation of Secondary School in Nanded District	55 To 57
18	Dr. S. R. Agashe	Aggression and Violence in Sports	58 To 61
19	Dr.Sujata Sampatrao Ghuge & Dr.Kavita Raghunathrao Phad	A Review of Conceptual Study of Garbhasambhav Samagri	62 To 63
20	Dr. Pravin J. Nadre	Parbhani Districts in Mughal Era	64 To 67
21	Rakhi Ranjith	Issues and Challenges of Public Health Expenditure in India	68 To 73
22	Dr. Jagannath Dagadu Barkade	Population Distribution of Yerala River Basin: A Case Study of Southern Yerala Basin	74 To 79
23	Dr. Arvind Kumar Sharma & Dr. Rekha Sharma	Water Pollution and Its Effect on Aquatic Life	80 To 93
24	Dr.Varsha Sutar	Review on Retinopathy in Diabetis Mellitis	94 To 96
25	Dr. Sharad B. Ingawale	Major Issues and Concerns in Todays Teacher Education Programme	97 To 99
26	Ramandeep Kaur	Role of The Patiala State Against The Namdhari Movement	100 To 106
27	Ajay N. Abhyankar	Quest for Identity in The Novels of Angela Carter	107 To 109
28	Prof. Kishor M. Taksande	Agro Tourism: A new trend in Tourism	110 To 112
29	Dr. T.G. Ghatage	Growth and Development of Co-Operative lift Irrigation Schemes and its Impact in Shirol Tehsil of Kolhapur District	113 To 116
30	Dr. Ajay P. Kolarkar	Comparative Studies of Physical Education Teachers among the Amravati and Nagpur Division and Their Problems	117 To 118



45	प्रा.डॉ.लोहकरे परमेश्वर माधवराव कदम नारायण भिमराव	चंद्रपूर जिल्ह्यातल्या जिवती तालुक्यातील अनूसूचित जमातींच्या लोकसंख्या (जनगणना- २०११) साक्षरतेचा भौगोलिक अभ्यास	191 To 194
46	डॉ. वेदप्रकाश अविनाश मलवाडे	मद्यपान : एक ज्वलंत सामाजिक समस्या	195 To 199
47	प्रा. रामराव चव्हाण	महात्मा फुले यांचे स्त्रीविषयक कार्य : एक समाजशास्त्रीय अध्यायन	200 To 203
48	श्री. श्रीकांत दत्तात्रय तनपुरे	प्रवीण वांदेकर यांची कविता	204 To 208
49	डॉ. सिंकु कुमार सिंह	नवीन कोरोनावायरस -2019 रूग्णमध्ये योगाचे फायदे	209 To 218
50	प्रा. डॉ. मानसी जगदाळे	फकिरा : क्रांतिकारी नायकाची शौर्यगाथा	219 To 222
51	प्रा. डॉ. यु. टी. गायकवाड	भारतीय शेती पीकप्रारूपा पुढील अड्याने	223 To 226
52	डॉ. शरद सांबारे	महाराष्ट्राच्या राजकारणावर प्रदेशवादाचा प्रभाव	227 To 230
53	डॉ सुधाकर धुल	महाराजा सयाजीराव गायकवाड— एक विद्याप्रसारक	231 To 235
54	डॉ. सुर्यकांत महादेवराव कापशीकर	महार वतन विधेयकाच्या समर्थनार्थ आंबेडकरी चळवळीने केलेले कार्य	236 To 239
55	डॉ. श्रीकांत गायकवाड	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर : संविधान निर्मितीमधील योगदान	240 To 244



Principal
Arts & Sci. College
Kurha

Agro Tourism: A new trend in Tourism**Prof. Kishor M. Taksande**Arts & Science College, Kurha
Th. Tiosa, Dist. Amravati**Introduction**

Agriculture is backbone of Indian economy.

Tourism is now recognized as a major industry. Tourism not only brings the economic growth and development, but it also has socio-cultural and environmental development. "Agro-tourism" is one such form of tourism which is gaining popularity amongst the non-conventional tourists. Agro tourism is not just visiting a farm growing crops and vegetables; it is giving an opportunity to the tourist to interact with a culture. It provides tourist with an experience of being part of our rural culture. Observing and experiencing a lifestyle different from urban routine. It offers some meaning to the tourist at the destination along with a sense of pleasure away from routine activities. Agro -tourism which is based on agricultural activities with a subtle underline and touch of rural culture. One cannot easily imagine a farm being a reason to travel for a tourist. But the attraction can be created by adding value to the product.

In a progressive state like Maharashtra where farmers are ready to experiment, agro-tourism is spreading slowly but steadily. Most of the villages have scenic beauty due to availability of lakes, rivers, hills, mountains, paddy fields, fruit orchards. Rural community has the potential, resources and ability to exploit the growing tourism industry. Urban population is increasing day by day, today urban children's world is restricted in the closed door school, classes, cartoon programs on the television, video games, chocolates, soft drinks, spicy fast food, computer, internet, and so on, and they see Mother Nature only on television screen. Moreover out of people living in the cities 35 % do not have relatives in villages and 43% never visited or stayed in village.

Importance of Agro – Tourism:

Tourism is considered as a job creator with multiplier effects. Job creation in tourism is growing one and a half times half times faster than any other industrial sector. Tourism sector has potential to enlarge. Agriculture sector has the capacity to absorb expansion in tourism Sector. It brings major primary sector agriculture closer to major service sector tourism. This convergence is expected to create win-win situation for both the sectors.

Scope of Agro - Tourism

Agro-Tourism has great scope in the present context . The urban population always have the curiosity to learn about sources of food, plants, animals, raw materials like wood, handicrafts, languages, culture, tradition, dresses and rural lifestyle. Tourism which revolves around farmers, villages and agriculture has the capacity to satisfy the curiosity of this segment of population. Villages provide recreational opportunities to all age groups i.e. children young, middle and old age, male, female, in total to the whole family at a cheaper cost. Rural games, festivals, food, dress and the nature provides variety of entertainment to the entire family. The cost of food, accommodation, recreation and travel is least in Agro-Tourism. This widens the tourist base. Present concept of travel and tourism is limited to urban and rich class which constitutes only a small portion of the population. However, the concept of Agro-Tourism takes travel and tourism to the larger population, widening the scope of tourism due to its cost effectiveness.

Agro Tourism and Health consciousness

Busy urban population is leaning towards nature. Because, natural environment is always away from busy life. crops, mountains, water bodies, Birds, animals, villages provide totally different atmosphere to urban population in which they can forget their busy urban life. Villages provide variety of recreation to urbanites through festivals and

handicrafts. Villagers lifestyle, dress, languages, culture which always add value to the entertainment. Agricultural environment around farmers and the entire production process could create curiosity among urban taught. Places of agricultural importance like highest crop yielding farm, highest animal yielding farm, processing units, farms where innovations tried add attraction to the tourists. Agricultural products like farm gate fresh market, processed foods, organic food could lure the urban tourists. As result of this agro – atmosphere in the villages, there is scope to develop Agro – Tourism products like agro-shopping, culinary tourism, bed and breakfast, pick bullock cart riding, camel riding, boating, fishing, herbal walk, rural games and health tourism.

Modern life is a product of diversified thinking and diversified activities. Every individual attempts to work more, in different directions to earn more money to enjoy modern comforts. Hence, peace is always out of his system. Tourism is a means for searching peaceful location. Peace and tranquility are inbuilt in Agro-Tourism as it is away from urban areas and close to nature. Agro Tourism could create awareness about rural life and knowledge about agriculture among urban school children. It provides a best alternative for school picnics which are urban based. It provides opportunity for hands on experience for urban college students in agriculture. It is a means for providing training to future farmers. It would be effectively used as educational and training tool to train agriculture and line department officers. This provides unique opportunity for education through recreation where learning is fun effective and easy. Seeing believes, doing is learning. Cities are growing at the cost of villages. Villagers are migrating to cities in search of jobs and to seek the comforts of modern life. Hence, yesterd's villagers are today's urbanites. Deep in the heart of urbanites lies the love and respect for their ancestors and villages. Hence, visit to villages satisfies their desire. Any opportunity to visit villages and spend time with family is dream of any urbanite. But, minimum decent facilities are always problem. Agro-Tourism attempts to overcome this problem.

In resorts and cities, overcrowded peace seekers disturb each other's peace. Hence, peace is

beyond cities and resorts. Even though efforts are made to create village atmosphere in the sub urban areas through resorts, farm houses, it looks like a distant replica of the original. Modern lifestyle is stressful it creates many health problems. Hence, people are in constant search of pro-nature means to make life more peaceful. Organic foods are in greater demand in urban areas. In total, health conscious urban population is looking towards pronature villages for solutions.

Challenges Faced by Ago tourism in India

- **Lack of Transport Infrastructure:**

In rural area road transport facilities are not sufficient.

- **Lack of Energy Infrastructure:**

In rural area electricity facilities are not sufficient.

- **Lack of communication Infrastructure:**

In rural area is not sufficient facilities of telecommunication & internet.

- **Financial Problems of Farmers :**

Due to high investment and low income Financial condition of Farmers is not so strong. so farmers can not invest in agro tourism.

- **Unawareness about the Concept of Agro tourism**

Agro tourism as a concept is not well promoted in all farmers" non agricultural people and unknown to maximum farmers in India.

- **Educational Profile of Farmers and Lack of Orientation in Marketing and Customer Communications**

Most of the farmers are very less educated, mostly undergraduates and do not know the manners of customer communications to promote and marketing of their farm.

- **Lack of Government Support**

These is lack of Government support for ago tourism in India in tourism policy of Maharashtra Government, there is a mention of rural tourism but no specific mention of Agro tourism. This discourages farmers from undertaking new ventures like agro tourism which are in their favor and source of income generation.



• Lack of Irrigation :

Agriculture in India is mostly monsoon dependent and not sufficient facilities of irrigation.

• Climatic Conditions :

Climatic condition is not supportive to Agro tourism throughout the year. During summer, there are no crops and the weather is hot and dry in most of the states. During rainy season, tourist may not be able to be ready to access the farms full of mud. Thus, Agro tourism is practically difficult to be operated for six months in a year.

• Less Cultivable Land and Fragmented Land

As per survey, 80% farmers have less than 1 hectare land and only 7% farmers in India have more than 2 hectare land. For agro tourism, a farmer should have bare minimum land of 2 hectares so that the farmer can have adequate crops to offer as a tourism product and sufficient land for tourists to rest and recreate.

Conclusion

However, there are many challenges ahead for the growth of agro tourism in India. Major challenges discussed are Lack of Transport Infrastructure, Lack of Energy Infrastructure, Lack of communication Infrastructure, Financial Problems of Farmers, Unawareness about the Concept of Agro tourism, in India, less education and less marketing orientation of farmers, less cultivable and fragmented land and lack of Government support. Agro tourism industry has a lot potential to develop the rural India. The issues like guest host relationship, sustainability, economic feasibility are important for any new tourism development at a destination. It is more so in the case of agro tourism as it has a direct impact on the host culture and rural community as a whole. There needs to be a proper business model to promote and propagate the concept of agro tourism as an easily adoptable and implementable venture for farmers in India. All challenges stated above can have solutions and agro tourism can be ventured in gradually step by step. All it depends on the will power of farmers and proper promotional strategies adopted to market the concept in weekend tourists.

References

1. Prasanna Shashikant Shembekar, Scope & Challenges of Agritourism- Literature review,
2. Agritourism Development Corporation. Indian agritourism Industry-challenges and strategies. 2017.
<http://www.agritourism.in/tourism-in-india.html>
3. Gopal Naidu Karri, Scope of Agritourism in India,
4. Kumbhar VM. Tourists expectations regarding agritourism: empirical evidences from Ratnagiri and Sindhudurg district of Konkan (Maharashtra). Online International Interdisciplinary Research Journal, 2(3), 82-91, 2012
<http://www.ncagr.gov/markets/agritourism/laws.htm>


Principal
Arts & Sci. College
Kurha

